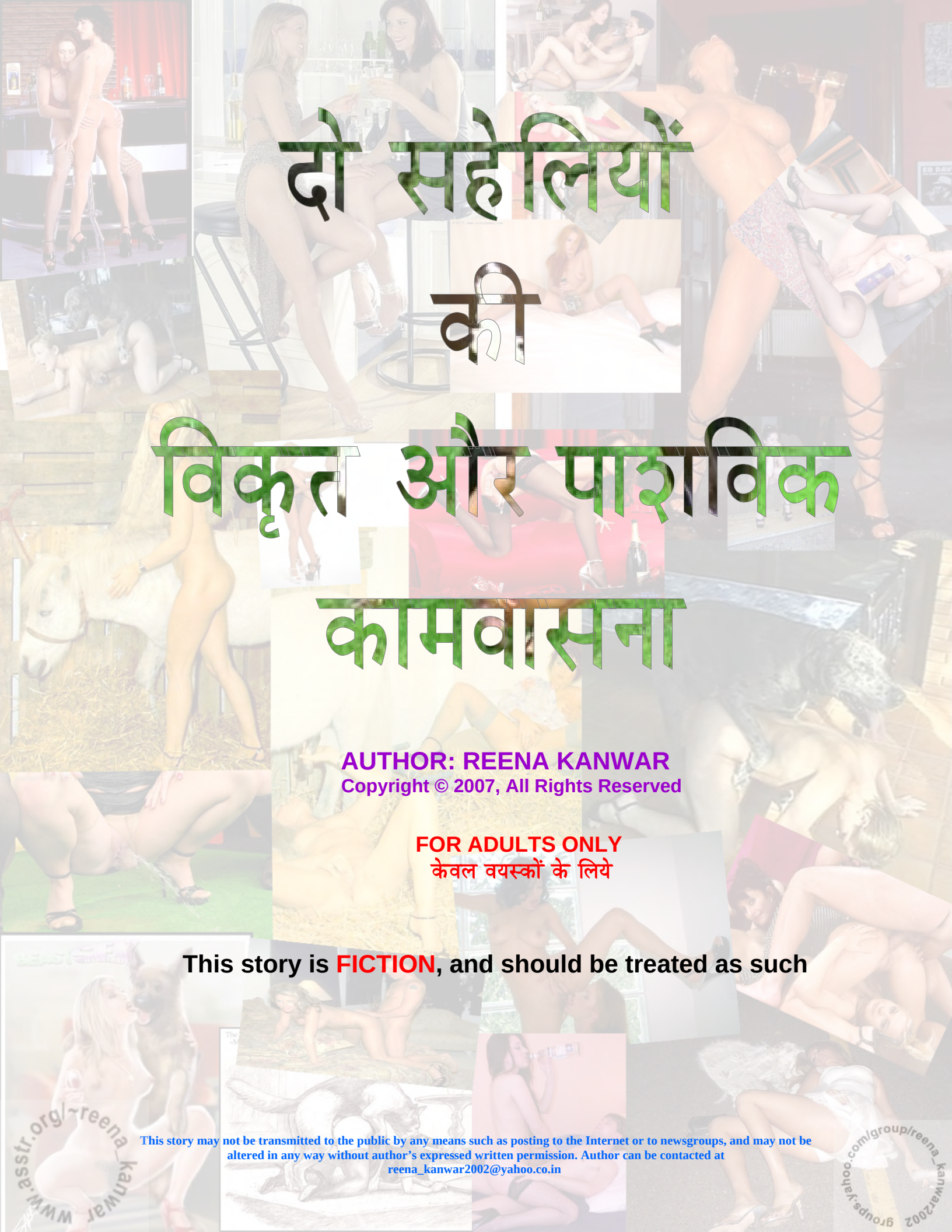

दो सहेलियों की विकृत और पाशविक कामवासना

AUTHOR: REENA KANWAR
Copyright © 2007, All Rights Reserved

FOR ADULTS ONLY
केवल वयस्कों के लिये

This story is FICTION, and should be treated as such

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

www.asstr.org/~reena_kanwar

groups.yahoo.com/group/reena_kanwar2002

दो सहेलियों की विकृत और पाशविक कामवासना

रचयिता: रीना कँवर (c) 2007

Copyright 2007 Reena Kanwar, All Rights Reserved.
This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

चेतावनी

1. केवल वयस्कों के लिये
2. यह कहानी औरतों और पशुओं के मध्य यौन संबंधों पर आधारित है। अगर यह आप के लिये अस्वीकार्य है तो कृप्या यह कहानी न पढ़ें।
3. यह कहानी काल्पनिक है और सिर्फ पढ़ कर मनोरंजन मात्र के लिये है। वास्तविक्ता में इस तरह की काम-क्रिड़ाओं से मानसिक व शारिरिक हानि हो सकती है और अधिकतर प्रांतों में यह गैरकानूनी भी है। अपने कृत्य के लिये आप स्वयं दोषी होंगे और इस काल्पनिक कथा की रचयिता का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

सुल्तान उस आलिशान कमरे के एक कोने में, कालीन बिछे फर्श पर सिकुड़ कर बैठा हाँफ रहा था और उसकी लंबी लाल जीभ उसके जबड़े के किनारे से बाहर लटक रही थी। ये काले रंग का विशाल डोबरमैन कुत्ता थका हुआ लग रहा था और ये थकान बाहर फार्म में खरगोशों के पीछे भागने से नहीं थी बल्कि इसलिये थी क्योंकि उसके लंड और टट्टे ज़ाहिर रुप से अभी-अभी ही निचोड़ कर खाली किये गये थे। उसके टट्टे उसकी टाँगों के बीच में सिकुड़े हुए थे और उसका लंबा लंड फर्श पर लटका हुआ था। उसके लाल लंड का अग्रभाग अभी भी उसके बालों से ढके खोल में से बाहर झाँक रहा था और उसका नंगा लाल लंड उसके वीर्य से सना हुआ था। उसके चमचमाते वीर्य का एक

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

नाज़ुक सी डोरी उसके लंड की नोक से कालीन पर गिरे उसके वीर्य के ढेर से मिल रही थी। ये विशाल कुत्ता थक कर चूर था पर अभी सो नहीं रहा था। उसकी आँखें खुली हुई थी और उसका एक कान चौकन्ना होकर खड़ा था और उसकी काली नाक उत्तेजना से हल्की सी फड़क रही थी। सुल्तान स्वयं तो खाली हो गया था पर उसका ध्यान अभी भी कमरे के बीच में बिस्तर पर चल रही गतिविधि पर था, जहाँ शेरू अपनी बारी आने पर उसकी मालकिन को चोद रहा था।

कमरे के बिल्कुल पीछे बने छप्पर से कुल्हाड़ी चलने की आवाज़ लगातार आ रही थी और रश्मि ग्रोवर जानती थी कि कुल्हाड़ी की आवाज़ के आते रहने का मतलब था कि उसका अरदली अभी भी लकड़ियाँ चीर रहा था और इस बात का खतरा नहीं था कि वो घर के अंदर आ कर बेडरूम के दरवाजे के बाहर से उसे वो करते हुए सुन या देख लेगा जो रश्मि को बहुत प्यारा था – कुत्तों से अपनी चूत चुदवाना और गाँड मरवाना।

रश्मि का पति भारतीय वायू सेना में विंग कमाँडर था और आजकल उसकी पोस्टिंग पूर्वी सीमा पर थी। हिमाचल में शिवालिक की पहाड़ियों में कसौली के पास उनका पुश्तैनी फार्म हाउज़ था और रश्मि ज्यादातर यहीं अकेली रहती थी क्योंकि यहाँ एकाँत मे वो गोपनियता से कुत्तों से चुदवा सकती थी। पहले जब वो शहर में अपने पति के साथ रहती थी तो कई मर्दों से उसके नाजायज़ संबंध थे क्योंकि प्रकृति से ही वो चुदक्कड़ थी लेकिन पिछले दो साल से उसे कुत्तों के लंड ज्यादा भाते थे। वैसे भी उसे वायूसेना की कई सुविधायें जैसे कि सरकारी जीप, अरदली इत्यादि उपलब्ध थीं। कुत्तों के अलावा उसने अरदली और अन्य कामगारों से भी संबंध बना लिये थे पर कोई नहीं जानता था कि रश्मि कुत्तों से चुदवाती है। फार्म पर उसके साथ चौबीसों घंटे रहने वाला उसका अरदली, सलीम भी नहीं।

अभी कुछ देर पहले ही पास की छावनी के क्लब में एक पार्टी से नशे में रश्मि लौटी थी। एक ऑफिसर का ड्राइवर, रश्मि को और उसकी जीप को फार्म तक छोड़ गया था। अपने आलिशान बेडरूम में पहुँच कर उसने अरदली सलीम को बेडरूम के फॉयर–प्लेस में लकड़ी डाल कर आग जलाने को कहा था। उस समय कुछ ही लकड़ियाँ कटी हुई थी जिनसे सलीम ने आग शुरू की। चूंकि इतनी लकड़ियाँ अधिक समय नहीं चल सकती थी, इसलिए सलीम घर के पीछे बने छप्पर में लकड़ियाँ काटने चला गया।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

रश्मि की चूत में तो आग लगी ही हुई थी और ये मौका भी अच्छा था। सलीम के बाहर जाते ही रश्मि सुल्तान को पहले बुलाया और कपड़े उतार कर वहीं कालीन पर अपने हाथों और घुटनों के बल झुक गयी थी। फिर उसने सुल्तान को अपनी पीठ और चूत्तड़ों पर चढ़ा कर अपनी चूत में उसे धुँआधार चुदाई के लिए फुसला लिया था। जब तक सुल्तान रश्मि की चूत में अपना लंड पेलता रहा तब तक शेरू भी भौंकता हुआ, अपना कठोर लंड झुलाता उनके इर्द–गिर्द उछलता हुआ बेसब्री से अपन अपने अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। बीच–बीच में शेरू कभी रश्मि का मुँह चाटता और कभी रश्मि के पीछे जा कर उसके सैंडलों और पैरों को चाटने लगता। रश्मि के पैर और हाई–हील वाले सैंडल, शेरू के थूक से सराबोर हो गये थे।

जैसे ही सुल्तान ने अपने टट्टों का सारा माल रश्मि की चूत में खाली किया था, रश्मि उसका लंड अपनी चूत में से निकाल कर खड़ी हो गयी थी। फिर शेरू के थूक से भीगे सैंडल पहने हुए ही बिस्तर पर आ गयी थी जहाँ वो इस समय शेरू से दूसरी मुद्रा में अपनी पीठ के बल लेट कर चुदवा रही थी। शेरू भी सुल्तान जैसा ही बड़ा और काले रंग का था और वैसा ही जोशिला और ताकतवर था।

रश्मि का सुंदर और सुडौल बदन बिस्तर पर पसरा हुआ था, उसकी कमर कमान की तरह मुड़ी थी और उसके घुटने मुड़े हुए थे। रश्मि की लजीज़ जाँघें, चोदते हुए कुत्ते के दोनों तरफ फैली हुई थीं और उसने अपने कुल्हे ऊपर को ठेले हुए थे जिससे कि उस चुदक्कड़ कुत्ते का लंड पूर्णतः उसकी चूत मे समा सके। रश्मि के काले, लंबे घने बाल बिस्तर पर फैल गये थे और उसके मादक रसीले होठों पर आनंदमय मुस्कान और सिसकारियाँ थी।

शेरू की चुदाई कि ताल बाहर कुल्हाड़ी की आवाज़ के साथ सध गयी लगती थी। 'खाट... खाट... खाट' कुल्हाड़ी की आवाज़ आती जब कुल्हाड़ी की तेज़ धार लकड़ी के लट्ठों को टुकड़ों में चीरती और जब भी बाहर यह लकड़ी चीरने की आवाज़ ठंडी और तेज़ हवा को चीरती, तो शेरू अपना लंड नशे और वासना में चूर रश्मि की चूत में इतनी ताकत से ठेलता कि उसका लंड भी रश्मि की चूत को दो हिस्सों में चीरता हुआ प्रतीत होता।

लेकिन रश्मि की लचीली चूत भी उस चीते के आकार के कुत्ते का पूरा लंड लेने में सक्षम थी, जितना भी वो उसकी चूत में ठेल सकता था। रश्मि को तो बस चूत मे विशाल

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

पश्चिक लौड़े की चाह थी।

स्वयं भी किसी जानवर की तरह ही सिसकती और रिरियाती हुई रश्मि उस कुत्ते के धक्कों का उतने ही आवेश और ताकत से जवाब दे रही थी। जैसे ही वो कुत्ता अपना लंड उसकी चूत में कूटता, रश्मि भी अपनी सैंडलों की ऐड़ियाँ बिस्तर में गड़ाकर अपनी चूत आगे ढकेल देती और जब वो अपना लंड बाहर खींचता तो रश्मि भी अपने भारी चूत्तड़ घुमा–घुमाकर अपनी चूत उस खिसकते हुए लंड पर मरोड़ते हुए अंदर–बाहर के घर्षण में और भी रगड़ उत्पन्न कर देती।

"ओहहह!" रश्मि चींखी और उसने अपने चूत्तड़ हवा में उठा दिये जब शेरू ने विशेष धक्का लगाकर अपना लंड उसकी चूत की गहराइयों में ठेला।

रश्मि की चूत के आसपास का हिस्सा उसकी चूत से बाहर बह रहे चूत–रस के झाग से भीग गया था। जब भी वो कुत्ता अपना लंड रश्मि की चूत में ठाँसता, तो और भी ज्यादा चूत–रस बह कर बाहर निकल आता। चूत से निकला वो चिकना रस रश्मि की झटकती जाँघों से बहता हुआ उसकी गाँड के छिद्र में रिस रहा था।

रश्मि ने अपनी कमर उठा कर अपनी चिकनी जाँघें कुत्ते की झबरी पिंडुलियों पर जकड़ लीं और फिर से अपनी टाँगें चड़ी खोल कर अपनी चूत में लंड ठेलते हुए उस जोशीले कुत्ते को खुली छूट दे दी। कुत्ते का लाल रंग का भारी लंड जड़ तक रश्मि की चूत में लुप्त हो गया। ढेर सारे वीर्य से लबालब भरे हुए उस कुत्ते के ठोस और बड़े टट्टे रश्मि की गाँड पे टकराने लगे।

फिर उसने अपना लंड इतना बाहर खींचा कि सिर्फ उसके लंड का दहकता, गर्म, आगे का हिस्सा ही रश्मि की चूत में घुसा था। उसके लंड की डाली चूत–रस से भीगी हुई थी और वो चूत–रस लंड की शाख पर मोतियों की डोरी जैसा जगमगा रहा था। शेरू ने फिर अपना लंड अंदर ठेला तो रश्मि की चूत से गाढ़ा सा मलाईदार रस निकला और उसके झटकते कुल्हों पे फैल गया और उस पदार्थ की धारा उसकी चिकनी जँघों से नीचे बहने लगी।

रश्मि की ठोस गाँड दाँय–बाँय झूलने लगी और उसका सपाट चिकना पेट ऊपर–नीचे

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

उठने लगा। उसकी चूत तो जैसे कुत्ते के व्यग्र चोदू लंड पर पिघलने लगी थी। रश्मि अभी एक बार पहले झड़ चुखी थी जब सुल्तन ने फर्श पर उसकी पीठ पर चढ़ कर कुत्तिया बना के चोदा था और अब वो फिर से शेरू के महाकाय लंड पर झड़ने को तैयार थी।
रश्मि उन खुशकिस्मत औरतों में से थी जो बार–बार बिना रुके झड़ सकती थी, जब तक कि उसकी चूत में एक कड़क लंड धड़कता और चोदता रहे – फिर वो लंड चाहे इंसान का हो या किसी जानवर का।

शेरू के पाशविक अंगों में रोमँच और जोश बढ़ने लगा तो वो और भी फुर्ती से रश्मि को चोदने लगा। वो भौंकते हुए बीच–बीच में कराह रहा था। उसके बड़े बड़े चमकते हुए सफ़ेद दाँत उजागर हो रहे थे और उसके जबड़ों से उसकी राल टपक कर रश्मि की चूचियों और पेट पर गिर रही थी।

रश्मि के कानों में खून तेजी से दौड़ने लगा और उसका दिल प्रचंडता से धड़कने लगा जब उन्माद और उत्तेजना की लहर उसके बदन में से दौड़ती हुई उसकी थरथराती जाँघों और फिर उसकी चूत में बिजली के करंट की तरह प्रवाहित होने लगी।

मगर रश्मि का कुछ ध्यान बाहर लकड़ियों को चीरती कुल्हाड़ी की आवाज़ पर भी था। वो अपनी चुदाई पर पूरी तरह एकाग्र नहीं हो पा रही थी क्योंकि वो अपनी उत्तेजना में दरवाजे की चिटकनी बंद करना भूल गयी थी। दरवाजा सिर्फ ऐसे ही ढका हुआ था और वो जानती थी कि बहुत ही शर्मनाक स्थिति होगी अगर उसका अरदली, सलीम, फॉयर–प्लेस में डालने के लिये लकड़ियाँ ले कर दरवाजा खोलकर अंदर आ गया और रश्मि को अपनी चूत में कुत्ते का लंड लिये हुए चुदवाते हुए देख लिया। वो शायद समझ नहीं पायेगा और अगर उसने रश्मि के इस शौक का पर्दाफाश कर दिया तो उसकी ज़िंदगी नर्क बन जायेगी।

चाहे वो यहाँ अलग–थलग फार्म में रहती थी मगर फिर भी सामाजिक तौर पर काफी सक्रिय थी। पास की छावनी में आर्मी से संबंधित, 'अफवा' जैसी कई कल्याण संगठनों की वो सक्रिय सदस्या थी। कई आर्मी अफसरों की बीवियों से उसका मेल जोल था और छावनी में आयोजित पार्टियों और अन्य आयोजनों में उसका हर रोज़ का आना जाना था। कुत्तों से उसके शारिरिक संबंध अगर उसके परिचित लोगों पर उजागर हो गये तो उसकी बहुत बदनामी होगी और वो कानूनी शिकंजे में भी फंस सकती थी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

शेरू का लंड उसकी रसीली चूत में फुंफकार रहा था और दलदल में फिसलती पनडुब्बी कि तरह रश्मि की चूत की चिकनी सुरंग में सरक रहा था। उसके लंड का मोटा सुपाड़ा रश्मि की चूत के मलाईदार गाढ़े रस में गोते से लगा रहा था। जब शेरू पीछे की तरफ झटका लेता तो उसके लंड पे जकड़े रश्मि की चूत के होंठ लंड के साथ खिंच जाते और ऐसा लगता जैसे कि चूत पलट कर उल्टी हो गयी हो।

कुल्हाड़ी लकड़ी के लट्ठे पर 'ढक' से पड़ी और कुत्ते का लट्ठे जैसा लंड रश्मि की चूत में 'ढक' से पड़ा। शेरू ऐसे हाँफ रहा था जैसे कि भाप का इंजन धड़क रहा हो और रश्मि उससे भी जोर से हाँफ रही थी। रश्मि के फेफड़ों के फैलने से उसकी भारी और ठोस चूचियाँ ऊपर ऊठ कर फूल गयी थीं और उसके कडक़ गुलाबी निप्पल बाहर तन कर किसी वॉल्व की तरह ऐसे खड़े थे जैसे कि उनके द्वारा चूचियों में हवा भरी गयी हो। शेरू भौंक रहा था और रश्मि भी जोर–जोर से सिसक रही थी। शेरू अब रश्मि को इतनी तेजी से चोद रहा था कि कुल्हाड़ी की हर आवाज़ के बीच में उसका लंड कम–से–कम दो बार रश्मि की चूत में ठूंस रहा था।

रश्मि को लगा कि अब जल्दी ही कुत्ते का वीर्य अपनी चूत में निचोड़ लेना चाहिए क्योंकि सलीम का लकड़ियाँ चीरने का काम कहीं पूरा ना होने वाला हो। वो अपने अनुभवों से जानती थी कि एक बार कुत्ते का लंड उसकी चूत में खिंच कर अटक गया तो उसे पूरा झड़ने के पहले चूत से निकालना नामुमकिन होगा। वैसे उसे अपनी चूत में उन कुत्तों के लंड के फँसने में बहुत मज़ा आता था क्योंकि उसे कुत्ते के वीर्य से भरी चूत बहुत पसंद थी।

शेरू इतनी जोर–जोर से अपना लंड पेल रहा था कि बालों से ढके उसके पुट्ठे काला धब्बा–सा लग रहे थे। जब वो वो अपना लंड अंदर को ठाँसता तो उसकी रीड़ ऐंठ कर मूड़ सी जाती। रश्मि को इस चुदाइ में बहुत ही मज़ा आ रहा था और वो इसे जारी रखना चाहती थी लेकि वो जानती थी कि इस चुदाई को सुखद रूप से अंत करना ज्यादा बेहतर होगा, क्योंकि सलीम के अक्समत लौट कर दरवाजा खटखटाने या सीधे अंदर ही आ जाने से चरमानंद में दखल पड़ता।

रश्मि पूरी निपुणता से कुत्ते के लंड को चोदने लगी। उसकी चूत की भीगी दीवारें कुत्ते के लंड के सुपाड़े और डंडे के हर बहुमुल्य हिस्से पर जकड़ कर चिपक गयीं। उसकी चूत

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

की पेशियाँ कुत्ते के लंड को कस के जकड़ के दुहने लगीं।

जब रश्मि की चूत उसके लंड को कस कर निचोड़ने लगी तो शेरू मस्ती में भौंकने और गुर्राने लगा। वो जोर-जोर से लंबे झटकों के साथ अपना लंड रश्मि की चूत में हाँकने लगा और उसके टट्टे, हवा भरे गुब्बारों की तरह झूल रहे थे। उसका लंड चूत के अंदर फूलने लगा तो रश्मि समझ गयी कि अब किसी भी क्षण वो कुत्ता अपना वीर्य उसकी चूत में छोड़ सकता है। रश्मि ने अपने कुल्हों को झटक कर अपनी चूत में लंड के प्रवेश का ऐंगल बदला ताकि अंदर बाहर होते हुए उस लोहे जैसे सख्त लंड की डाली का हर हिस्सा उसकी दहकती क्लिट पर रगड़े। वो खुद भी झड़ने की कगार पर थी लेकिन उसने खुद को रोका हुआ था क्योंकि वो झड़ने से पहले कुत्ते का वीर्य-रस अपनी चूत में छुटता हुआ महसूस करना चाहती थी।

रश्मि का चेहरा निपट उत्तेजना और उन्माद से ऐंठा हुआ था, आँखें सिकुड़ गयी थीं और उसके होंठ ढीले पड़ कर काँप रहे थे। उसकी पलकें फड़फड़ाने लगी और उसकी जीभ की नोक उसके खुले होंठों के बीच से बाहर सरक आयी। वो कुत्ता-चोद औरत इस समय जन्नत में थी।

"कम ऑन," रश्मि सिसकी, *"दाग दे अपने लंड का माल मेरी चूत में.... साले... कुत्तिया की बेवकूफ औलाद!"*

शेरू भी आज्ञाकारी कुत्ता था। वो भेड़िये की तरह चींखा और उसके भारी टट्टे जैसे फट पड़े हों। उबलता हुआ गाढ़ा वीर्य उसके लंड में से वेग से दौड़ता हुआ उसके मूत-छिद्र से मलाईदार सैलाब की तरह छुटने लगा और रश्मि की चूत कुत्ते के गरम वीर्य से लबालब भरने लगी।

"आआआंआंआंईईईईईईईईं" रश्मि उन्माद में जोर से चींखने लगी। अपनी दहकती चूत मे गिरते हुए कुत्ते का लंड रश्मि को इतना गर्म और गाढ़ा लग रहा था जैसे पिघला हुआ सीसा हो। रश्मि की चूत भी कुत्ते के लंड पर ऐसे पिघलने लगी जैसे कि जलती हुई बाती पर मोमबत्ती का मोम पिघलता है।

शेरू उसे निरंतर चोदता रहा और हर धक्के के साथ और वीर्य अंदर छोड़ देता। रश्मि के

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

बदन में भी जब चरमानंद की लहर दौड़ने लगी तो वो भी कुत्ते के नीचे झटके खाने लगी और उसकी गाँड और चुत्तड़ प्रचंडता से थिरकते हुए नृत्य करने लगे। असीम उन्माद की कई सारी ऊँची लहरें तेज़ी से रश्मि के बदन में दौड़ने लगीं और फिर जैसे आपस में मिल कर एक ठोस रस्सी में बदल गयी और उसकी चूत को चीरने लगी।

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वो कुत्ता रश्मि की चूत में झड़ना बंद ही नहीं करेगा। उसके टट्टे जैसे अथाह थे और उसका वीर्य अनंत।

शेरू जोर से भौंका और अपनी ताल खो दी। उसकी पिछली टाँगें डगमगाने लगीं और रश्मि की चूत में उसके धक्के भी रह-रहकर डावांडोल होने लगे। उसका एक झटका चूकता, फिर वो दो झटके लगाता और फिर अगला चूक जाता। उसके टट्टे अब नीचे लटकने लगे थे जैसे कि पिचकी हुई थैलियाँ हों जो अभी-अभी रश्मि की चूत में खाली हुई थीं। रश्मि की उठी हुई गाँड पर पहले की तरह चोट मारने की जगह अब वो टट्टे झूल रहे थे।

उसका लंड अभी भी सख्त था और रश्मि की चूत में चुदाई जारी रखे हुए था लेकिन उसका वीर्य अब खत्म हो चुका था। हाँफता और राल टपकाता हुआ वो सुस्त पड़ने लगा।

रश्मि अपनी चूत को उसके लंड पर चोदना जारी रखती हुई अपनी चूत के उन्माद की बची हुई ऐंठन मिटा रही थी और वीर्य के मोतियों की चंद आखिरी बूँदें निचोड़ रही थी। जब शेरू बिल्कुल रुक गया तो रश्मि ने अपने सैंडल की ऊँची ऐड़ी बिस्तर में गड़ाकर उसके सहारे अपनी चूत कुत्ते के अचल लंड की जड़ तक ठोक दी और चूत की दीवारों को लंड पर स्पंदित करके वीर्य के बचे हुए कतरे दुहने लगी और अपनी क्लिट की अंतिम मीठी-सी सनसनाहट मिटाने लगी।

रश्मि ने वापस खुद को बिस्तर पर पीठ के बल गिरा दिया और अपनी बाँहें और टाँगें फैला कर पसर गयी। उसकी आँखें फड़फड़ा रही थीं और वो स्वप्नमय तृप्ति से मुस्कुरा रही थी।

कुत्ते ने अपना व्यय हुआ लंड रश्मि की चूत से धीरे से बाहर खींचा। एक आखिरी लंबे क्षण के लिये उसके लंड को चूत मे पकड़ कर निचोड़ते हुए रश्मि की चूत की फाँकों ने

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

उसके लंड को नंगी गाँठ के बिल्कुल पीछे से गिरफ्तार कर लिया। फिर उसने वो लंड रिहा कर दिया। कुत्ते के लंड की मोटी-सी गाँठ तड़ाक करके चूत में से बाहर निकली जैसे शैंपेन की बोतल से डाट छूटती है। शेरू धीमे से कराह कर बिस्तर से नीचे कूद गया। उसका लंड अभी भी ऊपर-नीचे हिचकोले खा रहा था और अभी भी अर्ध-सख्त था लेकिन उसके टट्टे बिल्कुल मुर्झा गये थे। लंड के छोर से उसके वीर्य और रश्मि की चूत का रस कालीन पर टपक रहा था।

रश्मि लालसा से टकटकी लगाये उसे घूरती हुई मुस्कुराने लगी। वो अच्छी तरह जानती थी कि ज़रा सा चूस कर वो उस भयानक लंड को वापिस दनदनाता छड़ बना सकती थी। फिर उसने कमरे के कोने में सुल्तान की तरफ नज़र घुमायी और देखा कि कुछ देर पहले निचुड़ा हुआ उसका लंड नवीन जोश और ताकत का आशाजनक संकेत दे रहा था।

रश्मि की इच्छा हुई कि काश उसके पास इन दोनों कुत्तों को फिर से चोदने का समय होता। लेकिन तभी कुल्हाड़ी के आखिरी वार की आवाज़ आयी और उसके बाद बाहर सन्नाटा हो गया। रश्मि ने खुद को समझाया कि उसे कुत्तों से चुदवाने के लिये अगले मौके का इंतज़ार करना पड़ेगा।

अपनी इस गुप्त और विकृत चुदाई के मलाईदार प्रमाण को छिपाने के लिये रश्मि ने बिस्तर से उतर कर अपने नंगे सुडौल बदन पर छोटा सा रेशमी गाऊन डाल लिया। कुत्तों के गाढ़े वीर्य और उसकी खुद की चूत के रस के मिश्रण ने उसकी चूत पर झाग सा फैला रखा था और उसकी भीतरी जँघों को भी भिगो रखा था। इसे छिपाने के लिए रश्मि ने गाऊन के फ्लैप अपने चारों ओर खींच लिए। उसे महसूस हो रहा था जैसे कि उसका बदन गाऊन के नीचे दमक रहा था। जब वो चली तो उसे लगा कि वो अपनी चूत में कुत्तों के वीर्य की 'पिच पिच' सुन सकती थी।

'चूतिये साले!" रश्मि ने मन में कहा। *"इन चोदू कुत्तों ने कम से कम एक बाल्टी वीर्य तो मेरी चूत में आज डाल ही दिया होगा। अगर कुत्ते का वीर्य हवा से हल्का होता तो मैं अभी बादलों में उड़ रही होती"* इसी लिए तो कुत्तों की खुराक का खास ख्याल रखा जाता था। दूध, मीट, अंडों के अलावा बादाम, काजू, अखरोट इत्यादि सूखे मेवे हर रोज़ कुत्तों की खुराक में शमिल थे।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

फिर उसने अपने सुंदर चेहरे को सुव्यवस्थित करके गंभीर और नम्र भाव लाये और अपने अरदली सलीम का कमरे में लकड़ियाँ ले कर आने का इंतज़ार करने लगी। वो सलीम से अनेक बार चुदवा चुकी थी पर चुदाई के अलावा बाकी समय उनका रिश्ता सामान्य नौकर–मालकिन का ही था। जब रश्मि का मन हो तभी वो उसके साथ संभोग कर सकता था। सलीम को खुद से चुदाई की पहल करने की छूट नहीं थी। रश्मि उस पर अपना रौब और अधिकार बनाये रखती थी और उसके साथ सामान्य और गंभीर रहती थी। सलीम को उसे 'मैडम' कह कर ही संबोधित करना पड़ता था लेकिन इसके बिल्कुल विपरीत, चुदाई के समय रश्मि का दूसरा रूप होता था। चुदाई के वक्त वो एक गर्म राँड की तरह पेश आती थी और उस समय 'मैडम' नहीं, बल्कि गंदी गंदी गालियाँ पसंद करती थी।

कुत्तों से चुदने के बावजूद इस वक्त रश्मि का दिल और चूत दोनों कुछ ज्यादा उदारता महसूस कर रहे थे। शायद वो आज सलीम को भी चुदाई का मौका दे दे। यही सोच कर रश्मि ने अपनी टाँगों के बीच लगा वीर्य और चूत रस का लिसलिसा मिश्रण अपने हाथ से पोंछा और फिर अपने हाथ पर से उस पदार्थ को बड़े चाव से अपनी जीभ से चाटने लगी।

****

रीना कँवर © 2007

****

रश्मि के बेडरूम के पीछे छप्पर में सलीम ने कुल्हाड़ी नीचे करके ज़मीन पर रखी। लकडी के टुकड़े आसपास बिखरे पड़े थे। सलीम सिर्फ दो दिन के लिये पर्याप्त लकड़ी चीरने के लिये आया था लेकिन उसने सप्ताह भर के लिये पर्याप्त लकड़ियाँ चीर ली थीं। वास्तव में लकड़ियाँ चीरते वक्त बीच में उसे शेरू के भौंकने और कराहने की आवाज़ आ गयी थी और वो समझ गया था कि रश्मि मैडम फिर कुत्तों से चुदवा रही है। वो इस हकीकत से वाकिफ़ था कि उसकी मालकिन कुत्ता–चोद थी। सलीम को इससे कोई तकलीफ़ नहीं थी बल्कि जब वो छिप कर रश्मि को कुत्तों से चुदते देखता था तो बहुत उत्तेजित होता था। इसके अलावा रश्मि उससे भी हफ्ते में चार–पाँच बार चुदवा लेती थी जिसके लिए वो शुक्रगुज़ार था।

सलीम कुछ देर वहीं खड़ा रहा जिससे रश्मि को कुत्तों को चुदाई के बाद व्यवस्थित होने का पर्याप्त समय मिल जाये। सलीम ऊँचे कद का हट्टा–कट्टा 22 वर्ष का जवान लड़का

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

था और उसके पास दमदार बड़ा लंड था जो इस समय उसकी पैंट में ठोकर मार कर बाहर आने के लिए उतावला हो रहा था। उसका लंड उसके हाथ में मौजूद कुल्हाड़ी की तरह सख्त था और सलीम को लगा कि वो कुल्हाड़ी की जगह इतने सख्त लौड़े से भी लकड़ियाँ चीर सकता था। लेकिन उसे उम्मीद थी कि रश्मि मैडम कुत्तों के साथ-साथ शायद उस पर भी मेहरबान हो जाये। सलीम का तजुर्बा था कि जब भी रश्मि शराब के नशे में होती थी तो उसकी चुदाई की भूख काफी बढ़ जाती थी और आज भी रश्मि को नशे की हालत में ही किसी का ड्राइवर घर तक छोड़ कर गया था। इस वजह से उसे काफी उम्मीद थी कि उसे मुठ मार कर लंड को शांत नहीं करना पड़ेगा। सलीम ने कुल्हाड़ी छोड़ी और लकड़ी के थोड़े से टुकड़े समेट कर रश्मि के बेडरूम की तरफ बढ़ गया।

जब सलीम ने दरवाज़ा खटखटाया तो उस समय रश्मि बेडरूम में बने छोटे से बार के पास खड़ी एक ग्लास में वोडका उड़ेल रही थी। रश्मि ने वहीं से उसे दरवाज़ा खोल कर अंदर आने के लिए आवाज़ दी। लकड़ियों के टुकड़ों का गट्ठा उठाये सलीम अंदर आया और रश्मि पर एक नज़र डाल कर फॉयर-प्लेस की तरफ बड़ गया और उसमें कुछ लकड़ियाँ डाल कर आग ठीक करने लगा।

दोनों कुत्ते सलीम को देख कर खड़े हो गये। सलीम ने गर्दन घुमा कर उन पर दृष्टि डाली। उनके लंड के सिरे चिपचिपे दिख रहे थे और उनके लंड के बालों वाले बाहरी खोल भी चूत रस से लिसड़े हुए थे। वो जब खड़े हो कर आशा भरे मन से रश्मि की तरफ पीछे घूमा। रश्मि ने दो घूँट में वोडका का आधा भरा ग्लास खाली किया और सलीम को देख कर मुस्कुराई।

रश्मि को सलीम की पैंट में उसके लंड का उभार साफ नज़र आ रहा था। उसकी पैंट मे उसके हलब्बी लंड का उभार इतना बड़ा था कि उसका कठोर लंड जैसे पैंट के कपड़े को चीर कर बाहर निकलने की धमकी दे रहा था। रश्मि मुस्कुराती हुई उसकी तरफ बढ़ी। उसकी चाल नशे के कारण डगमगा रही थी। सलीम ने देखा कि रश्मि ऊँची हील की सैंडल में थोड़ी लड़खड़ा रही थी और आँखें भी मदहोश लग रही थी। एक बार सलीम को लगा कि कहीं रश्मि उन सैंडलों में नशे के कारण अपना संतुलन न खो दे लेकिन वो अपनी जगह ही खड़ा रहा क्योंकि वो किसी प्रकार की पहल कर के रश्मि को गुस्सा नहीं दिलाना चाहता था। इस समय रश्मि के रंग-ढंग देख कर उसकी आशा विश्वास में बदलने

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

लगी थी।

"क्यों साले! ये अपनी पैंट के सामने कुल्हाड़ी दबा रखी है क्या तूने?" रश्मि कुटिल मुस्कान के साथ उसके उभार को घुरती हुई उसी बेशर्मी से बोली जैसे की वो हमेशा चुदाई के वक्त होती थी।

फिर रश्मि ने उसके सामने आ कर उसके गले में एक बाँह डाली और दूसरे हाथ से उसके पैंट की ज़िप नीचे करने लगी लेकिन लंड के उभार के ऊपर से ज़िप खींचने में उसे थोड़ी दिक्कत हुई। ज़िप नीचे होते ही सलीम की पैंट का आगे से चौड़ा मुँह खुल गया और उसका लंड ऐसे लपक कर बाहर निकला जैसे किसी राक्षस ने गुस्से में भाला फेंका हो। रश्मि की आँखें चौड़ी हो गयीं। इस लंड से उसने कितनी ही बार चुदाई की थी लेकिन रश्मि ने कभी भी इसे इतना फूला हुआ और इतना सख्त नहीं देका था। उसे देख कर रश्मि खी चूत थरथराने लगी।

रश्मि ने अंदर हाथ डाल कर सलीम के टट्टे भी बाहर कींच लिए और अपनी चमकती आँखों के समक्ष उसके विशाल चुदाई–हथियार को पूरा नंगा कर दिया। यकीनन काफी प्रभावशाली नज़ारा था। सलीम के लंड का बड़ा सुपाड़ा फूल कर जामुनी रंग कुकुरमुत्ते के आकार का लग रहा था। उसके लंड की डाली भी खूब लंबी और मोटी थी और उस पर रश्मि की अँगुलियों जितनी मोटी, धड़कती हुई काली नसें उभरी हुई थीं। उस मोटी–ताज़ी मांसल मिनार की जड़ में गुब्बारों की तरह फूले हुए उसके टट्टे थे।

"ऊऊऊऊहहहह" रश्मि ने रोमाँच में गहरी साँस ली।

रश्मि बिल्कुल अतृप्य थी। उसकी चूत चाहे कितनी बर भी चुद ले, हर समय प्यासी ही रहती थी। यद्यपि वो अभी ही दोनों कुत्तों के लौड़ों पर जम कर झड़ी थी, लेकिन अब वो फिर अपने अरदली के मांसल लंड से अपनी चूत भरने को उतावली हो रही थी।

दोनों कुत्ते हल्के से भौंके। उन मूक जानवरों को भी आभास हो गया था कि उस कमरे में अभी और चुदाई होने वाली है। सलीम की तरह उन दोनों को भी अपनी मालकिन की चूत किसी से बाँटने में आपत्ति नहीं थी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

यद्यपि सलीम को रश्मि के कुत्तों से संभोग करने से कोई दिक्कत नहीं थी पर वो रश्मि को स्वयं चोदते हुए कुत्तों की मौजूदगी नहीं चाहता था। उसे पता था कि कुत्ते कितने उत्तेजित हो सकते थे उसे डर था कि कहीं गल्ती से उनमें से कोई कुत्ता अपना लंड उसकी गाँड में ना पेल दे।

सलीम ने कुत्तों को बाहर जाने का आदेश दिया। दोनों कुत्ते बेमन से बेडरूम के बाहर जाने लगे। उनके अर्ध–सख्त लंड अभी भी उनके नीचे झूल रहे थे। रश्मि आशा कर रही थी कि सलीम कुत्तों के लंड के हालत देखकर कहीं जाहिर मतलब ना समझ जाये। लेकिन सलीम की नज़रें कुत्तों की बजाये रश्मि पर थीं। फिर रश्मि को लगा कि कहीं वीर्य से चिपचिपी जँघों और चूत को देखकर उसे शक ना हो जाये। उसने अपने गाऊन में हाथ डल कर एक बार फिर अपनी चूत ओर जाँघों पर फिराया। फिर उसने अपना गाऊन ज़मीन पर गिरा दिया और अपना एक हाथ अपने पेट पर फिराती हुई दूसरे हाथ से अपनी भीतरी जाँघों को सहलाने लगी। उसकी चूत का रस उसके जिस्म पर चमक रहा था और रश्मि की विकृत करतूत का सुराग, कुत्तों के लंड का वीर्य, उस चूत रस में छिपा हुआ था। रश्मि बिस्तर पर अपनी कुहनियों के सहारे पीछे को झुक कर अपनी टाँगें फैला कर बैठ गयी।

सलीम भी रश्मि के पास आ गया और अपनी मुट्ठी अपने लंड की जड़ में कस दी जिससे उसके लंड का सुपाड़ा आलूबुखारे की तरह दमकने लगा। रश्मि के लिए यह मुँह में पानी लाने वाला दृश्य था। वो आगे झुकी तो उसके लंबे बाल सलीम के पेट और जाँघों पर गिर गये। रश्मि ने अपनी जीभ लंड के सुपाड़े पर फिरायी।

“उम्म्म... यम्मी”, वो बिल्ली की तरह घुरगुरायी।

“हाँ... चूसो मैडम... उम्म... मेरा मतलब चूस साली कुत्तिया”, सलीम सिसका। रश्मि उसका आलूबुखारे जैसा पूरा सुपाड़ा मुँह में ले कर चूसने लगी। रश्मि की चुस्त और फुर्तीली जीभ सलीम के सुपाड़े के फूले हुए आकार पर फिसलने और सुड़कने लगी। उसकी जीभ बीच में कभी सुपाड़े की नोक पर फिरती और कभी उसके मूतने वाले छिद्र को टटोलती। अपने मुँह में अग्रिम वीर्य–स्राव का स्वाद महसूस होते ही रश्मि की भूख और बढ़ गयी। जब वो उसके सुपाड़े के इर्द–गिर्द बहुत सारी राल निकालने लगी तो उसका थूक लंड की छड़ पे नीचे को बहने लगा। रश्मि का सिर किसी लट्टू की तरह

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

सलीम के लंड पर घूम रहा था।

सलीम की गाँड अकड़ गयी और धक्के लगाती हुई लंड को रश्मि के मुँह में भोंकने लगी। रश्मि जब चूसती तो उसके गाल अंदर को पिचक जाते और जब वो उसके लंड पर फूँकती तो गाल फूल जाते। रश्मि लंड के सुपाड़े पर पर बहुत अधिक मात्रा में राल निकाल रही थी और सलीम के अग्रीम वीर्य से मिला हुआ रश्मि का बहुत सारा थूक नीचे बह रहा था। सलीम के अग्रिम वीर्य की गंध कुत्तों के वीर्य जैसी तेज और भारी नहीं थी लेकिन रश्मि को वो उतना ही स्वादिष्ट लग रहा था।

सलीम के लंड को चूसते हुए रश्मि के काले बालों का पर्दा सलीम के लंड और टट्टों पर पड़ा हुआ था। लंड के स्वाद का मज़ा लेते वक्त रश्मि के मुँह से रिरियाने की आवाज़ निकल रई थी। सलीम के दाँत आपस में रगड़ रहे थे और उसका चेहरा उत्तेजना से ऐंठा हुआ था। रश्मि का सिर तेजी से लंड पर ऊपर–नीचे डोलने लगा और वो और अधिक लंड की छड़ अपने मुँह में लने लगी। उस मोटे और रसीले लंड पर ऊपर नीचे होती हुई रश्मि लंड पर अपने होंठ जकड़ कर चूस रही थी। जब वो अपना सिर ऊपर लेती तो उस लंड पर अपना मुँह लपेट कर अपने होंठ कस कर पेंचकस की तरह मरोड़ती।

सलीम सुअर की तरह घुरघुराता हुआ और अपना लंड ऊपर को ठेलता हुआ रश्मि के मुँह को ऐसे चोदने लगा जैसे कि कोई चूत हो।

“ऊम्मफ्फ”, जब लंड का फूला हुआ सुपाड़ा रश्मि के गले में अटका तो वो गोंगियाने लगी। रश्मि ने सलीम का लंबा लंड लगभग पूरा अपने मुँह में भर लिया था। सलीम के टट्टे रश्मि की ठुड्डी पर रगाड़ रहे थे और रश्मि की नाक सलीम की झाँटों में घुसी हुई थी। रश्मि की साँस घुट रही थी लेकिन फिर भी उसने कुछ क्षणों के लिए लंड के सुपाड़े को अपने गले में अटकाये रखा और फिर उसने लंड को चुसते हुए बाहर को निकाला।

“ऊँम्म्म”, रश्मि बिल्ली की तरह घुरगुराई और फिर से उस लंड पे अपने होंठ लपेट कर सुड़कने लगी।

सलीम ने अपना लंड रश्मि के मुँह में निरंतर चोदते हुए अपना वजन एक टाँग से दूसरी टाँग पर विस्थापित किया। सलीम ने अपना एक हाथ रश्मि की गर्दन के पीछे रखा और

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

उसका मुँह अपने लंड पर थाम कर अंदर–बाहर चोदने लगा। उसके टट्टे ऊपर उछल–उछल कर रश्मि की ठुड्डी के नीचे थपेड़े मार रहे थे।

सलीम के मूत–छिद्र से और भी अग्रीम–बीर्य रस चूने लगा और रश्मि की स्वाद–ग्रंथियों पर बह कर रश्मि की प्यास और भड़काने लगा। रश्मि और भी जोर से लंड चूसने लगी और अपने मुँह में सलीम को अपने टट्टे खाली करने को प्रेरित करने लगी। वो उसका गर्म वीर्य पीने के लिए उतावली हो रही थी।

चुदक्कड़ रश्मि को वीर्य भरी चूत के बाद मुँह भर वीर्य बहुत पसंद था। उसकी चूत और उसका मुँह आपस में एक दूसरे के प्रतिरूप थे। उसकी जीभ भी उसकी क्लिट की तरह ही गर्म थी। सिसकती हुई वो अपना मुँह सलीम के लंबे–मोटे लंड पर ऊपर–नीचे डोलने लगी।

लेकिन तभी सलीम ने अपना लंड रश्मि के होंठों से बाहर खींच लिया। उसका सुपाड़ा एक डाट की तरह बाहर निकला। रश्मि के होंठ चपत कर बंद हो गये पर वो फिर से अपने होंठ खोल कर अपनी जीभ बाहर निकाले, पीछे हटते लंड पर फिराने लगी।

सलीम को रश्मि से लंड चुसवाना अच्छा लग रहा था पर आज वो चूत चोदने के मूड में था। रश्मि ने नज़रें उठा कर अपनी नशे में डूबी आँखों से सलीम के चेहरे को देखा। वो हैरान थी कि उसने अपना स्वादिष्ट लंड उसके मुँह से खींच लिया था। ऐसा कभी नहीं हुआ था कि किसी आदमी ने रश्मि के मुँह में झड़ने से पहले लंड बाहर निकाला हो। उसने अपने होंठ अण्डाकार खोल कर उन्हें चूत के आकार में फैला दिया और अपनी जीभ कामुक्ता से फड़फड़ाती हुई उसे फिर निमंत्रित करने लगी।

नशे में चूर अपनी मैडम को सलीम ने उसके कंधे से पकड़ कर धीरे से बिस्तर पर पीछे ढकेल दिया। अगर वो उसके मुँह की जगह उसकी चूत चोदना चहता था तो रश्मि को कोई आपत्ति नहीं थी क्योंकि उसे तो दोनों ही जगह से चुदवाने में बराबर मज़ा आता था। जब तक उसे प्रचुर वीर्य मिल रहा था उस इसकी कोई फिक्र नहीं थी कि किस छेद से मिल रहा था।

अपने घुटने मोड़ कर और अपनी जाँघें फैला कर रश्मि पसर गयी। उसने अपनी कमर

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

उचका कर अपनी रसीली चूत चुदाई के कोण में मोड़ दी। सलीम उसकी टाँगों के बीच में झुक गया। वो अपनी मालकिन के कामुक बदन से परिचित था। अपने हाथों और घुटनों पर वजन डाल कर सलीम ने अपने चूत्तड़ अंदर ढकेले और उसके लंड का फूला हुआ सुपाड़ा रश्मि की चूत के अंदर फिसल गया।

रश्मि मस्ती से कलकलाने लगी। अपने लंड का सिर्फ सुपाड़ा रश्मि की चूत में रोक कर सलीम लंड कि मांस–पेशियों को धड़काने लगा। उसका सूजा हुआ सुपाड़ा चूत में धड़कता हुआ हिलकोरे मार रहा था।

पहले रश्मि का मुँह, चूत की तरह था और अब उसकी चूत, मुँह की तरह थी। उसकी चूत के होंठ लंड के सुपाड़े को चूसने लगे और उसकी कड़क क्लिट जीभ की तरह लंड पर रगड़ने लगी। सलीम घुरघुराते हुए स्थिर हो गया। रश्मि की चूत उसके लंड को सक्शन पंप की तरह अपनी गहराइयों में खींच रही थी। सलीम ठेल नहीं रहा था लेकिन रश्मि की चूत खुद से उसके लंड को अंदर घसीट रही थी।

सलीम उत्तेजना से गुर्राया। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसका लंड उसके शरीर से खींच कर उखाड़ा जा रहा था और रश्मि की चूत के शिकंजे में अंदर खिंचा जा रहा है। अपनी चूत में आखिर तक उस विशालकाय लौड़े की ठोकर महसूस करती हुई रश्मि सिसकने लगी। उसकी चूत फड़कते लंड से कोर तक भरी हुई थी। उसका अरदली चोदू कुत्ते जैसे पाशविक जोश से तो उसे नहीं चोद सकता था परंतु ये कमी उसके लंड की लंबाई से पूरी हो गयी थी, जोकि रश्मि की चूत को उन गहराइयों तक भरे हुए था जहाँ कुत्तों का लंड नहीं पहुँच सकता था।

सलीम का लंड रश्मि की चूत में धड़कने लगा तो रश्मि की चूत की दीवारें भी उसके लंड की शाखा पर हिलोरे मारने लगी। रश्मि की चूत के होंठ लंड की जड़ पे चिपके हुए थे और लंड को ऐसे खींच रहे थे जैसे कि उस कड़क लंड को सलीम के शरीर से उखाड़ कर सोंखते हुए चूत की गहराइयों में और अंदर समा लेने की कोशिश कर रहे हों।

सलीम के लंड का गर्म सुपाड़ा रश्मि को ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कि उसकी चूत में गरमागरम लोहे का ढेला ठूँसा हो। उसके फड़कते लंड की शाखा ऐसे प्रतीत हो रही

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

थी जैसे लोहे की गरम छड़ चूत की दीवरों को खोद रही हो। उसका लंड इतना अधिक गरम था कि रश्मि को लगा कि वो जरूर उसकी चूत को अंदर से जला रहा होगा पर उसकी खुद की चूत भी कम गरम नहीं थी। रश्मि की चूत भी भट्टी की तरह उस लंड पर जल रही थी जैसे कि सलीम का लंड तंदूर में सिक रहा हो।

रश्मि ने पहले हिलना आरंभ किया। सलीम तो स्थिर था और रश्मि ने अपनी चूत उसके लंड पर दो–तीन इंच पीछे खींची और फिर वापिस लंड की जड़ तक ठाँस दी। *"चोद मुझे... चोद मुझे!"* रश्मि मतवाली हो कर विलाप–सा करने लगी।

सलीम ने अपने घुटनों पर जोर दे कर अपना लंड इतना बाहर खींचा कि सिर्फ उसका सुपाड़ा चूत के अंदर था। रश्मि की क्लिट उसके लंड पर धड़कने लगी। सलीम ऐसे ही कुछ क्षण रुका तो रश्मि की चूत के होंठ फिर से उसके लंड को अंदर खींचने के लिए जकड़ने लगे। रश्मि के भरे–भरे चूत्तड़ पिस्टन की तरह हिल रहे थे उसकी ठोस गाँड बिस्तर पे मथ रही थी।

"पेल इसे मेरे अंदर... सलीम!" रश्मि चिल्लायी। वो अपनी चूत को लंड से भरने को उतावली हो रही थी। उसे अपनी चूत अचानक खोखली लग रही थी। *"ठेल दे अपना पूरा मूसल अंदर तक!"*

सलीम ने हुँकार कर अपनी गाँड खिसकायी और रश्मि को एक धीरे पर लंबा सा झटका खिलाया। उसका लंड चीरता हुआ उसकी धधकती चूत में अंदर तक धंस गया। चूत के अंदर धंसी उसके लंड की शाखा ने रश्मि की गाँड को बिस्तर से ऊपर उठा दिया। सलीम ने एक बार फिर बाहर खींच कर इस तरह अपना लंड अंदर पेल दिया कि रश्मि की गाँड और ऊपर उठ गयी और उसका लंड इस तरह नीचे की दिशा में चूत पेल रहा था कि अंदर–बाहर होते हुए गरम लंड का प्रत्येक हिस्सा रश्मि की चूत पर रगड़ खा रहा था।

रश्मि भी उतनी ही तीव्रता से अपनी आगबबुला चूत ऊपर–नीचे चलाती हुई सलीम के जंगली झटकों का जवाब दे रही थी। उसकी चूत इतनी दृढ़ता से लंड पर चिपक रही थी कि सलीम को लंड बाहर खींचने के लिए वास्तव में जोर लगाना पड़ रहा था।

सलीम का लंड रश्मि के चूत–रस से भीगा और चिपचिपाता और दहकता हुआ बाहर

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

निकलता और फिर चूत में अंदर चोट मारता हुआ घुस जाता जिससे रश्मि के चूत-रस का फुव्वारा बाहर छूट जाता। सलीम के टट्टे भी चूत-रस से तरबतर थे। रश्मि का पेट भी चूत के झग से भर गया था और गरम चूत-रस उसकी जाँघों के नीचे और उसकी गाँड की दरार में बह रहा था। जब भी उसकी चूत से रस का फव्वारा फूटता तो मोतियों जैसी बड़ी-बड़ी बूँदें उसकी चूत और दोनों टाँगों के बीच के त्रिकोण पर छपाक से गिरतीं।

चुदाई के आनंद और शराब के नशे से रश्मि मतवाली हुई जा रही थी। उसने सलीम से चिपकते हुए अपनी जाँघें सलीम के चूत्तड़ों पर कस दीं। रश्मि के सैंडलों की ऊँची ऐड़ियाँ सलीम की गाँड पर ढोल सा बजाने लगीं।

सलीम लगातार चोद रहा था और जब भी उसका लंड चूत में ठँसता तो उसके टट्टे झूलते हुए रश्मि की झटकती गाँड पे टकराते। साथ ही रश्मि की चूत से और रस बाहर चू जाता। *"मैं... मैं झड़ी!"* रश्मि हाँफी, *"ओह... चूतिये... मैं झड़ने वाली हूँ... तू भी झड़ जा... मादरचोद... भर दे मेरी चूत अपने गरम, चोदू-रस से..."*

फिर सलीम ने एक असाधारण काम किया। उसने अपना लंड चूत से बाहर निकाल लिया।

रश्मि संत्रासपूर्वक चिल्लायी और यह सोच कर कि शायद गल्ती से निकल गया होगा, उसने अपना हाथ बढ़ा कर लंड पकड़ लिया और फिर से अपनी चूत में डालने की चेष्टा करने लगी। वो गरम चुदक्कड़ औरत झड़ने के कगार पर थी और उसे डर था कि लंड के वापस चूत में घुसने के पहले ही वो कहीं झड़ ना जाये।

सलीम कुटिलता से मुस्कुराया। सलीम जानता था कि सिर्फ ऐसी ही स्थिति में वो हर समय धौंस देने वाली अपनी अकड़ू मालकिन को अपने इशारे पर नचा सकता था। शराब और चुदाई के मिलेजुले नशे में वो कुछ भी खुशी से करने को फुसलायी जा सकती थी।

सलीम ने रश्मि के चूत्तड़ पकड़ कर उसे धीरे से पलट दिया। जब वो रश्मि को बिस्तर पे पेट के बल पलट रहा था तो वो उसके हाथों में मछली की तरह फड़फड़ा रही थी। फिर उसने रश्मि को जाँघों से पकड़ कर पीछे की ओर ऊपर खींचा जिससे रश्मि अपने घुटनों पे उठ कर झुक गयी और उसकी गाँड सलीम के लंड की ऊँचाई तक आ गयी। सलीम भी ठीक रश्मि के पीछे झुका हुआ था। सलीम का लंड रश्मि की गाँड के घुमाव के ऊपर

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

मिनार की तरह उठा हुआ था। उसका लंड की शाखा रश्मि के चूत-रस से भीगी हुई चिपचिपा रही थी और उसके लंड का सुपाड़ा ऐसे दमक रहा था जैसे कि प्रकाश-गृह (लाइट हाऊस) की मिनार के ऊपर लगा आकाश-दीप हो और नीचे अपने टट्टों में छिपी पथरीली गोलियों के चेतावनी दे रहा हो।

रश्मि का सिर नीचे था और गाँड ऊपर हवा में थी। उसका एक गाल बिस्तर पे सटा हुआ था और उसके लंबे काले बाल बिस्तर पर फैले हुए थे। रश्मि की ठोस, झटकती गाँड उसकी इस मुद्रा की अधिकतम ऊँचाई तक उठी हुई थी। यह मुद्रा रश्मि के लिए नई नहीं थी। उसकी भारी चूचियाँ बिस्तर पर सपाट दबी हुई थीं और जब वो अपनी गाँड हिलाने लगी तो उसकी तराशी हुई जाँघें कसने और ढीली पड़ने लगीं और उसकी प्यारी गाँड कामुक्ता से ऊपर-नीचे होने लगी।

एक क्षण के लिए तो रश्मि को लगा कि सलीम उसकी गाँड मारने वाला है और रश्मि को इसमें कोई आपत्ति भी नहीं थी पर सलीम का एक हाथ उसकी चूत पर फिसल कर चूत की फाँकों को फैलाते हुए उसकी फड़कती क्लिट को रगड़ने लगा।

"हाँ... हाँ... ऐसे ही कुत्तिया बना कर चोद मुझे!" अपनी चूत में सलीम का विशाल लौड़ा पिलवाने की तड़प में रश्मि गिड़गिड़ाने लगी। सलीम के चोदू-झटके की आशा में रश्मि पीछे को झटकी।

"तुझे कुत्तिया बन कर चुदवाने में बहुत मज़ा आता है ना, राँड?" सलीम उसके कुल्हों को हाथों में पकड़ते हुए फुसफुसाया। उसका स्वर व्यंगात्मक लग रहा था।

रश्मि थोड़ी सी चौंक गयी। क्या मतलब था उसका? कहीं उसे शक तो नहीं हो गया था? क्या वो जान गया था कि रश्मि कुत्तों से चुदवाती है। एक क्षण के लिए तो रश्मि का जोश ठँडा पड़ गया और उसे डर लगने लगा। उसने अपने कंधे के ऊपर से पीछे निगाह डाली पर उसे सलीम के चेहरे पर कोई गुस्सा नज़र नहीं आया और उसने सलीम के लंड को अपनी गाँड के ऊपर लहराते हुए देखा। इस दृश्य से रश्मि की कामेच्छा इतनी बढ़ गयी कि किसी प्रकार की चिंता य ग्लानि के भावों का कोई स्थान नहीं रह गया था।

"हाँ! मुझे कुत्तिया बना कर चोद!" रश्मि कराही।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

सलीम ने मुस्कुरा कर अपने लंड की नोक से उसकी दहकती चूत को छुआ और उसे रश्मि की क्लिट पर रगड़ने लगा। रश्मि दुगनी कामेच्छा से कराहने लगी और उसने अपने चूत्तड़ सलीम के लंड पर पीछे धकेल दिये।

सलीम ने अपना भीमकाय, फड़कता हुआ लंड पूरी ताकत से एक ही झटके में रश्मि की गाँड के नीचे उसकी पिघलती हुई चूत में ठाँस दिया। उसका लंड अंदर फिसल गया और उसका सपाट पेट रश्मि के चूत्तड़ों से टकराया। अपनी झुकी हुई जाँघों के बीच में से अपना हाथ पीछे ले जाकर रश्मि उसके टट्टे सहलाने लगी। सलीम अपना लंड रश्मि की चूत में अंदर तक पेल कर उसे घुमाता हुआ उसकी चूत को पीस रहा था।

फिर सलीम ने पूरे आवेश में अपना लंड रश्मि की चूत में आगे–पीछे पेलना शुरू कर दिया। रश्मि कसमसाती हुई अपने चूत्तड़ पीछे ठेल रही थी और उसकी चूचियाँ भी जोर–जोर से झूल रही थी। सलीम कुत्ते की तरह वहशियाना जोश से रश्मि की चूत चोद रहा था और कुत्ते की तरह ही हाँफ रहा था।

सलीम ने थोड़ा झुक कर जोर सा अपना लंड ऊपर की तरफ चूत में पेला जिससे रश्मि की गाँड हवा में ऊँची उठ गयी और उसके घुटने भी बिस्तर उठ गये। फिर अगला झटका सलीम ने ऊपर से नीचे की तरफ दिया और फिर से रश्मि के घुटने और गाँड पहले वाली मुद्रा में वापिस आ गये। रश्मि का शरीर स्प्रिंग की तरह सलीम के नीचे कूद रहा था।

“ऊँऊँम्म.... मैं झड़ी!” रश्मि चिल्लाई।

सलीम भी पीछे नहीं था। उसका लंड फूल कर इतना बड़ा हो गया था कि रश्मि को लगा जैसे कुल्हों की हड्डियाँ अपने सॉकेट में से निकल जायेंगी। रश्मि ने अपनी झूलती चूचियों के कटाव में से पीछे सलीम के विशाल लंड को अपनी चूत में अंदर–बाहर होते हुए देखने की कोशिश की।

सलीम जोर–जोर से चोदते हुए रश्मि की चूत को अपने लंड से भर रहा था और रश्मि को कामानंद से। रश्मि की चूत सलीम के लंड पे पिघलती हुई इतना अधिक रस बहा रही थी कि वो फुला हुआ लंड जब चूत की गहराइयों में धंसता तो ‘छपाक–छपाक’ की आवाज़ आती थी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

"ले... साली कुत्तिया... मैं भी आया!" सलीम हाँफते हुए बोला।

"हाँ.... हाँ... डुबा दे मुझे अपने वीर्य रस में!" रश्मि कराही।

जब सलीम ने अपना लंड जड़ तक ठाँस दिया तो उसकी कमर आगे मुड़ गयी और उसका सिर और कंधे पीछे झुक गये। रश्मि को जब उबलता हुआ वीर्य अपनी चूत मे छूटता महसूस हुआ तो जोर से कराहने लगी। सलीम का गाढ़ा वीर्य तेज प्रवाह की तरह रश्मि की चूत में बह रहा था।

सलीम के टट्टों को फिर से हाथ में पकड़ कर रश्मि निचोड़ने लगी जैसे कि उसके निचोड़ने से ज्यादा वीर्य निकलने की संभावना हो। जैसे ही सलीम अपना लंड उसकी चूत में अंदर पेलता तो रश्मि उसके टट्टे नीचे खींच देती और जब वो अपना लंड बाहर को खींचता तो रश्मि उसके टट्टे सहलाने लगती। सलीम का वीर्य किसी ज्वार-भाटे की तरह हिलोरे मारता हुआ रश्मि की चूत में बह रहा था।

हर बार जब भी रश्मि को अपने अंदर, और वीर्य छूटता महसूस होता तो उसकी अतृप्य चूत भी फिर से अपना रस छोड़ देती।

हाँफते हुए, सलीम की गति कम होने लगी।

रश्मि ने उसके लंड पे अपनी चूत आगे-पीछे चोदनी जारी रखी और उसके लंड को दुहती हुई वो अपने चर्मानंद के शेष लम्हों का रस लेने लगी। रश्मि को लग रहा था जैसे कि उसकी चूत लंड पर पिघल रही हो। रिक्त होने के बाद सलीम ने कुछ क्षण अपना लंड चूत में ही रखा। उसके वीर्य और रश्मि के चूत-रस का गाढ़ा और झागदार दूधिया सफ़ेद मिश्रण सलीम के धंसे हुए लंड की जड़ के आसपास बाहर चूने लगा। रश्मि की चूत के बाहर का हिस्सा और उसकी जाँघें चुदाई के लिसलिसे दलदल से सनी हुई थी।

जब आखिर में सलीम ने अपना लंड रश्मि की चूत में से बाहर निकाला तो उसके लंड की छड़ इस तरह बाहर निकली जैसे तोप में गोला दागा हो। रश्मि की चूत के होंठ फैल गये और उसकी चूत बाहर सरकते लंड पर सिकुड़ने लगी। जब उसके लंड का सुपाड़ा चूत में से बाहर निकला तो रश्मि कि चूत में से वीर्य और चूत-रस का मिश्रण झागदर

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

बाढ़ की तरह बह निकला।

रश्मि संतृष्टि से मुस्कुराती हुई पेट के बल नीचे बिस्तर पर फिसल गयी। वो तृप्त थी पर फिर भी उसने अपनी जाँघें फैला रखी थीं कि शायद सलीम एक बार फिर चोदना चाहे। परन्तु सलीम बिस्तर से पीछे हट गया। रश्मि ने उसे पीछे हटते सुना और साथ ही उसे कमरे के बाहर से कुत्तों के भौंकने की आवाज़ भी सुनायी दी। रश्मि ने पीछे मुड़ कर देखा कि सलीम ने अपना मुर्झाया हुआ चोदू लंड अपनी पैंट में भर लिया था और उसे लंड के उभार के ऊपर ज़िप चढ़ाने में कठिनाई हो रही थी। रश्मि अपना हाथ नीचे ले जाकर अपनी तरबतर चूत सहलाने लगी।

"मज़ा आया चोदने में?" रश्मि बिल्ली जैसे घुरघुरायी।

सलीम ने दाँत निकाल कर मुस्कुराते हुए सहमती में अपनी गर्दन हिलायी।

"मैं बाहर जा कर शेरू और सुल्तान को कुछ खाने को दे देता हूँ", सलीम बोला। उसकी आँखें रश्मि पर टिकी थीं। दोनों कुत्ते बाहर भौंक रहे थे। *"काफी थके हुए लग रहे हैं..."* सलीम पैनी नज़रों से रश्मि को ताकता हुआ एक क्षण रुका और फिर आगे बोला, *"आज लगाता है दोनों ने काफी कसरत की है।"*

रश्मि के चेहरे पर हल्की सी लाली आ गयी और उसकी नज़रें झुक गयीं। रश्मि फिर सोचने लगी कि कहीं सलीम को शक तो नहीं हो गया है कि वो हर उपलब्ध मौके पर कुत्तों से चुदवा रही थी। अगर सलीम को संदेह हो गया था तो शायद उसे इस बात की परवाह नहीं थी और वो इस बात को नज़र-अंदाज़ कर रहा था। अगर सलीम को परवाह नहीं तो वो स्वयं क्यों चिंता करे।

रश्मि ने अपनी नज़रें उठा कर ऊपर देखा और नटखट मुस्कुराहट के साथ बोली, *"ठीक है तू उन्हें खिला-पिला कर खुद भी खाना खाले... तुने भी काफी कसरत की है....।"*

सलीम ने फिर से गर्दन हिलायी। वो सोच रहा था कि उसकी मालकिन ने क्या अभी-अभी इशारे में ये कबूल कर लिया था कि वो कुत्तों से चुदवाती थी। जो भी हो उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था। सलीम मुड़ा और कमरे के बाहर चला गया।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

रश्मि भी बिस्तर से उठी और बार के पास जा कर एक ड्रिंक बनाने लगी। उसके कदम अभी भी हाई–हील के सैंडलों में लड़खड़ा रहे थे।

****
रीना कँवर © 2007
****

हफ़्ते भर बाद की बात है। शाम के छः बज रहे थे। चंडीगढ़ से रश्मि की कॉलेज के दिनों की सहेली, योगिता, उसके साथ दो–तीन दिन रहने आयी हुई थी। मौसम बहुत ही सुहाना था। सुरज ढलने को था और मंद सी ठंडी हवा चल रही थी। दोनों घर के पीछे लॉन में बड़ी सी छतरी के नीचे कुर्सियों पर बैठी वोडका पी रही थीं और अपने कॉलेज के दिनों की अपनी शरारतों और साथ बिताये वक्त की बातें कर रही थीं। सामने पहाड़ों की चोटियों का दृश्य बड़ा मनोहर था।

सलीम पकौड़े तल कर उनकी टेबल पर रखने के बाद चार–पाँच घंटे की छुट्टी ले कर पास के गाँव में अपने किसी दोस्त की शादी में शामिल होने के लिये चला गया था। वो रात को देर से लौटने वाला था। जाने से पहले, रश्मि के कहने पर उसने मूवेबल बार भी बाहर ला कर उनके पास रख दिया था जिस पर बर्फ की बाल्टी, ग्लास और वोडका, व्हिस्की, जिन इत्यादि कि कई बोतलें मौजूद थीं।

दोनों सहेलियों पर हल्का नशा छाया हुआ था और वो पुरानी बातें याद करती हुई कहकहे लगा रही थीं।

"याद है रश्मि! किस तरह तू हॉस्टल से रात को भाग कर लड़कों के कमरों में चुदवाने जाती थी", योगिता ने हँसते हुए कहा।

"तू क्या कम थी... तू तो लड़कों को गर्ल्स हॉस्टल में ही छिपा कर ले आती थी"

"मुझे तो आज भी याद है जब हम दोनों ने उस रिक्शा वाले को सुनसान जगह पर रिझाया था"

"हाँ! बेचारा उत्तेजना से काँपने लगा था"

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

“और जब तूने उसकी धोती में हाथ डाल कर उसका लंड पकड़ा था तो बेचारा तेरे हाथ में झड़ गया था और फिर बिना पैसे लिये ही भग गया था।”

दोनों इसी तरह अपनी ऐयाशियाँ याद करते हुए ड्रिंक पी रही थीं। दोनों की चूत गरमाने लगी थी।

“कितनी मज़े की ज़िंदगी थी... आखिरी साल में फ्रेशर लड़कियों कि रैगिंग में तो हमने हद कर दी थी.... जब हमने अपने रूम में उन्हें शराब पिला कर उन्हें नंगी नचाया था।”

“पी तो हमने भी रखी थी...”

“सिर्फ शराब ही नहीं पी रखी थी.... उस दिन तो हम सीनियर लड़कियों ने गाँजे की सिगरेट भी पी थीं... वो वंदना कहीं से सब को सपलाई करती थी।”

रश्मि ने दोनों के ग्लास में व्हिस्की और वोडका मिला कर कुछ तगड़ा कॉकटेल बनाया।

“हाँ यार हमें भी कहाँ होश था... तभी तो रैगिंग इस हद तक पहुँच गयी थी कि हमने उन फ्रेशर लड़कियों कि चूतें मोटी-मोटी मोमबत्तियों से चोदी थीं और बाद में उनसे अपनी चूतें चटवायी थीं।”

“और तूने तो हद ही कर दी थी जब तूने एक लड़की के मुँह में मूत ही दिया था।”

दोनों जोर से खिलखिला कर हंस पड़ी। योगिता सोच रही थी कि उसे बाद में बेडरूम में जाकर अपने हाथ से अपनी चूत की प्यास बुझानी पड़ेगी। रश्मि भी सोच रही थी कि योगिता के सोने के बाद अपने कमरे में जाकर आज तो शेरू और सुल्तान से जी भर कर रात भर चुदवायेगी। रश्मि ये सोच कर मुस्कुरा दी कि योगिता कि क्या प्रतिक्रिया होगी अगर उसे पता चल गया कि वो चुदवाने में आज भी पीछे नहीं है बल्कि उसकी चुदाई की भूख इस कद्र बढ़ चुखी है कि वो अपने कुत्तों से नियमित चुदवाती है।

योगिता भी सोच रही थी कि रश्मि को बताये कि नहीं कि वो आज भी पराये मर्दों से चुदवाती है क्योंकि उसके इंडस्ट्रियलिस्ट पति को उससे ज्यादा अपने बिज़नेस में

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

दिलचस्पी थी। उसका पति भी अपनी सेक्रेटरी और दूसरी औरतों को चोदता था। योगिता तो कॉलेज के समय से ही चुदासी थी इसलिए उसे अपनी चूत की प्यास बुझाने के लिये दूसरे मर्दों से चुदवाने में कोई आपत्ति नहीं थी। सुबह जब वो यहाँ रश्मि से मिलने आयी थी तब से ही उसकी नज़र सलीम पर भी थी।

तभी वहाँ एक गधा दिखायी दिया। योगिता तो अचानक गधे को देख कर डर गयी और चींख पड़ी।

"अरे यार! डरने की कोई बात नहीं है... ये हमारे धोबी का गधा है... वो पास के गाँव में रहता है और आजकल बिहार में कहीं अपने घर गया हुआ है। इसलिए अपना गधा हमारे फार्म पर छोड़ गया... सलीम इसे चारा-पानी इत्यादि दे देता है। वैसे तो ये ऊधर छप्पर (बार्न) में बंधा रहता है पर शायद सलीम इसे बाँधना भूल गया", रश्मि ने कहा पर ये नहीं बताया कि उस धोबी से भी वो चुदवा चुकी है।

रश्मि ने दोनों के लिए नया ड्रिंक बनाया और दोनों फिर बतियाने लगीं।

उस गधे को भी शायद उन दोनों की चूत की महक आ गयी थी। वो उनकी कुर्सियों के पीछे बिल्कुल पास आकर खड़ा हो गया। रश्मि ने हाथ बढ़ा कर उसकी गर्दन पर हल्के से मारते हुए उसे भगाने की कोशिश की। पर गधा कहाँ इतनी आसानी हटने वाला था।

"ये गधे बहुत अड़ियल होते हैं... रश्मि इतनी आसानी से नहीं हटेगा ये", योगिता ने हँसते हुए कहा।

रश्मि भी अब नशे में थी और वो भी जोर से अपनी हर्कत पर खिलखिला कर हँस पड़ी।
"छोड़ यार... खड़ा रहने दे... अपने आप ही छप्पर में चला जायेगा।"

उस गधे के टट्टे उसकी पिछली टाँगों के बीच खरबूजे की तरह फुलने लगे। भुरे रंग की बालों से भरी खाल धीरे से पीछे खिसकने लगी और उसका काला विशाल सुपाड़ा खिसकता हुआ बाहर निकलने लगा। वो विशाल सुपाड़ा काले ग्रेनाइट के पत्थर की तरह चमक रहा था। गधे का लंड पहले तो नीचे लटक गया और फिर दाँय-बाँय फड़फ़ड़ाने लगा। उसका लंड डगमगाता हुआ और बाहर निकल कर लंबा होने लगा और जल्दी ही

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

लगभग ज़मीन तक पहुँचने लगा। फिर उसका वो विशाल लंड फूल कर मोटा और कड़क होने गया और अंत में झटक कर उसके पेट के नीचे समानंतर (हॉरिज़ोंटल) उठ गया।

योगिता ने गधे के नथुने की घरघराहट सुनी तो उसने अपने पीछे तिरछी नज़र डाली और उसकी आँखें हैरत से फैल गयीं। वो इतने बड़े लंड को पहली बार इतनी करीब से देख रही थी। गधे के लंड का सुपाड़ा उसकी तगड़ी छाती तक पहुँच रहा था और उसका वो मोटा लंड खरबूजे जितने बड़े टट्टों से बाहर को विकसित हो रहा था।

योगिता के चेहरे पर लाली आ गयी और उसने फटाफट अपने बराबर में बैठी रश्मि की तरफ नज़र घुमा ली। रश्मि अपने ड्रिंक की चुसकियाँ लेती हुई कोइ किस्सा बता कर हँस रही थी। योगिता ने अपने ड्रिंक का बड़ा घूँट पिया और उसकी नज़रें चुंबक की तरह उस विराट लंड की तरफ खिंच गयीं। उसका ध्यान रश्मि की बातों में बिल्कुल नहीं था। वो ऐसे ही उसकी बातों पे 'हाँ... हुँ" कर रही थी। अचानक रश्मि ने योगिता के हाथ से उसका खली ग्लास लेना चाहा तो योगिता चौंक गयी और हड़बड़ाहट में उसका हाथ गधे की टाँगों को छू गया। उसे अपने हाथ के नीचे गधे का बलवान शरीर धड़कता सा महसूस हुआ और उसने लंड को भी फड़फड़ाते हुए महसूस किया।

योगिता ने रश्मि पर एक नज़र डाली कि रश्मि उसे देख तो नहीं रही। रश्मि तो नशे में डगमगाते हाथों से उन दोनों के लिये फिर से ड्रिंक बना रही थी। योगिता भी नशे में खुद पर काबू नहीं रख पा रही थी उसने धीरे से अपना हाथ गधे के पेट के नीचे खिसका दिया। उसकी अँगुलियाँ गधे के फड़कते लंड को छूने के लिये सनसना रही थीं। पर जैसे ही गधे को योगिता का हाथ अपने पेट के नीचे खिसक कर अपने लंड की तरफ बढ़ता महसूस हुअ तो वो उत्तेजना में जोर से रेंकने लगा। रश्मि भी चौंक कर पीछे पलटी कि एकाएक गधे को क्या हो गया।

योगिता ने अपना हाथ ठीक समय पर फटाफट हटा लिया और जितना हो सके उतनी सहजता से आगे देखते हुए अपना ड्रिंक पीने लगी। उसे ग्लानि के साथ-साथ काफी उत्तेजना महसूस हो रही थी। उत्तेजना से उसका सिर घूम रहा था पर वो सोच रही थी कि सिर तो इतनी शराब पी लेने की वजह से घुम रहा है। रश्मि ने वैसे भी योगिता के चेहरे के भावों पर ध्यान नहीं दिया।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

रश्मि तो स्वयं आँखें फाड़े और मुँह खोले हुए गधे के विराट लंड को देख रही थी। गधे की टाँगें चौड़ी फैली हुई थीं और रश्मि की नज़र ठीक उसके फूले हुए सुपाड़े पर थी। वो गहरे रंग का विशाल लंड गधे की छाती तक बढ़ा हुआ था और लगभग उसकी अगली टाँगों के आगे निकल रहा था। गधे का लंड अंदर–बाहर ऐसे धड़क रहा था जैसे कि साँस लेते हुए फेफड़े और उसका मूत–छिद्र भी फैला हुआ था और उसमें से अग्रिम वीर्य–रस के कतरे बुदबुदा रहे थे। रश्मि ने उसके लंड की अविश्वसनीय लंबी छड़ पर नज़र दौड़ायी जैसे कि तोप की नाल को देख रही हो और फिर उसे खरबूजे जितने बड़े और प्रचुर वीर्य से भरे हुए टट्टे दिखायी दिये।

कुछ क्षणों के लिए तो रश्मि की आँखें उस जानवर के महान लंड पर चिपकी रहीं परंतु फिर अपनी सहेली योगिता की मौजूदगी का एहसास होते ही उसने स्वयं को सामने देखने के लिए मजबूर किया। रश्मि का मुखड़ा उत्तेजना से लाल हो रहा था और योगिता के गाल भी अभी तक सुर्ख थे। दोनों औरतें उस गधे के खड़े लंड की वजह से व्याकुल थीं और दोनों स्वयं को ही इसकी उत्तरदायी मान रही थी कि उनकी खुद की गर्म चूत की सुगंध ही उस जानवर के लंड की प्रचंडता का कारण थी।

रश्मि ने पलट कर एक ही घूँट में अपना भरा ग्लास खाली कर दिया। रश्मि की चूत इतनी गर्म हो गयी थी कि उसे लग रह था कि कहीं चूत में से रस के साथ–साथ धुँआ ना निकलने लगे और वो उम्मीद कर रही थी कि योगिता ने गधे के लंड के प्रति उसकी भावनाओं को कहीं ताड़ ना लिया हो। परंतु योगिता तो खुद उत्तेजना और कामुक्ता से जली जा रही थी और अपने ख्यालों में थी। वो अपनी चूत की आग बुझाने के लिए बेकरार हो रही थी।

तभी अंदर से फोन घंटी बजी। रश्मि ने पहले तो सलीम को कॉर्डलेस फोन बाहर लाने के लिए आवाज़ दी पर फिर उसे ध्यान आया कि सलीम तो घर में है ही नहीं। वो भुनभुनाती हुई खड़ी हुई पर नशे में इतनी चूर होने के कारण बुरी तरह डगमगा रही थी। इसकी अतिरिक्त ऊँची हील के सैंडल पहने होने की वजह से इतने नशे में दो कदम भी सीधे चल पाना कठिन था पर फिर भी किसी तरह लड़खड़ाती हुई वो फोन सुनने अंदर गयी।

जब वहाँ योगिता उस उत्तेजित गधे के साथ अकेली रह गयी तो उसने गधे के लंड को अपने हाथ से छूने की अपनी नापाक विवशता को बड़ी मुश्किल से दबाया। योगिता को

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

बहुत तीव्र कामना हुई कि अपनी सहेली के वापस आने के पहले शीघ्रता से उसे हाथ में लेकर महसूस करले परंतु उसे भय था कि अगर एक बार उसने उस अद्भुत चुदाई–यंत्र को अपने हाथ में ले लिया तो शायद उसे छोड़ नहीं पायेगी।

तभी रश्मि उसी तरह हाई हील पहने नशे में डगमगाती वापस लौटी। योगिता की तरह रश्मि भी गधे के लंड को सहलाने की दुष्ट इच्छा पर संयम पाने की कोशिश कर रही थी। *"सॉरी यार... रॉंग नंबर था... ऐसे ही रंग में भंग पड़ गया... कितना मज़ा आ रहा था... चल मैं नये पैग बनाती हूँ... फिर..."* रश्मि बोलने पर योगिता ने बीच में ही उसकी बात काटकर हंसते हुए कहा, *"काफी पी ली आज रश्मि... इससे पहले कि मैं यहीं लुढ़क जाऊँ मेरा ख्याल है कि मुझे अब बेडरूम में जा कर सो जाना चाहिए...।"* योगिता की आवाज़ नशे में बहक रही थी।

"ओके डियर... पर पहले हमारा गुड ओल्ड ट्रैडिशन... एक–एक वोडका शॉट..." रश्मि बोली। फिर उसने फटाफट दो छोटे–छोटे शॉट ग्लासों में नीट वोडका भरी और दोनों ने एक–दूसरे के बांह में अपनी बांह डाल कर एक ही साँस में वो तगड़ा शॉट पिया। फिर जब योगिता अंदर जाने के लिये खड़ी हुई तो दूसरी कुर्सी पर गिरते–गिरते बची। रश्मि की तरह ही वो भी नशे में बेहद चूर थी।

इस समय तो बस वो किसी तरह कमरे में जाकर अपनी अँगुलियों से अपनी चूत को चोदकर विस्फोटक रूप से झड़ने का भरपूर आनंद लेना चाह रही थी। वो उसी तरह डगमगाती हुई रश्मि की तरफ बढ़ी और लगभग उस पर गिरते हुए उससे गले मिली। *"चल यार! गुड–नाइट... तुझे भी बहुत चढ़ी हुई है... तू भी आराम कर... सुबह बात करेंगे..."* कहते हुए योगिता ने धीरे से रश्मि के गाल पर चुम्मा दिया और जैसे ही वो चलने के लिए पलटी तो मेज से टकरा गयी। दोनों फिर खिलखिला कर हँस पड़ी।

योगिता ने गधे के लंड पर एक बार फिर हसरत भरी निगाह डाली और घर की तरफ झूमती हुई चल पड़ी। नशे के कारण वो साढ़े चार–पाँच इंच ऊँची हील के सैंडलों में संतुलन नहीं रख पा रही थी। रश्मि ने उसे जाते हुए देखा और वो वहीं कुर्सी पर लुढ़कती हुई बैठ गयी। उसने नशे में थरथराते हाथों से अपने लिए एक और पैग बनाया। उसका एक हाथ अचेतन ही उसकी सलवार के ऊपर से ही चूत को सहलाने लगा।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

योगिता किसी तरह अपने बेडरूम में पहुँची। नशे और अपनी वासना में उसे दरवाजा बंद करने की सुध नहीं थी। खड़े-खड़े ही उसने फटाफट बेतरतीबी से अपनी साड़ी उतार फेंकी और आननफ़ानन पेटीकोट भी उतार दिया। पैंटी के ऊपर से उसने अपनी चूत पर अपन हाथ रखा तो चूत इतनी गर्म महसूस हुई कि योगिता को लगा कि उसकी हथेली पर छाले पड़ जायेंगे। साथ ही पैंटी इतनी तरबतर थी कि योगिता की हथेली भी भीग गयी। उसने अपनी अंगुलियाँ पैंटी के इलास्टिक में डाल कर पैंटी भी नीचे खिसकायी और निकाल कर एक तरफ उछाल दी। दीवार पर बारहसींगे का सिर लगा था और योगिता की चूत-रस से तरबतर पैंटी उछल कर बारहसींगे के सींगों में अटक गयी। कुछ क्षणों में उसका ब्लाउज़ कमरे के एक कोने में पड़ा था और ब्रा ऊपर पंखे पर लटकी थी।

जितनी देर तक योगिता निर्वस्त्र हो रही थी, वो नशे में ऊँची हील के सैंडल पहने खड़ी-खड़ी आगे पीछे गिरती हुई डगमगा रही थी। योगिता ने झुक कर अपनी चूत निहारी और उसे ताज्जुब हुआ कि वो कितनी उत्तेजित और गरम थी। उसे ऐसा लगा जैसे ज़िंदगी में वो पहले कभी इतनी उत्तेजित नहीं हुई थी। उसकी चूत की गुलाबी फाँकें ऐसे खुली हुई थी जैसे कि मोतियों जैसी ओस की बूँदों से भीगी हुई किसी गुलाब की कली की पँखुड़ियाँ खिल रही हों। उसकी चूत की दरार फैल कर अण्डाकार हो गयी थी और चूत की भीतरी परतें चूत रस के झाग से भीगी हुई दिख रही थीं। उसकी तनी हुई गुलाबी क्लिट भी बहर को खड़ी थी। चूत-रस की कईं धारें चू कर योगिता की भीतरी जाँघों से नीचे बह रही थीं।

योगिता ने अपनी अँगुलियों को अपनी चूत पे फिराया तो उसे अपनी सख्त क्लिट थिरकती हुई महसूस हुई। उसने धीरे से सहलाते हुए अपनी अँगुलियाँ चूत के अंदर खिसका दीं। उसकी चूत में लहरें उठने लगीं और उसके हाथ में और अधिक चूत-रस बह निकला। वो दोनों हाथों से अपनी चूत रगड़ने लगी। वो वहीं फॉयर-प्लेस के पास खड़ी-खड़ी ही अपनी चूत की गर्मी शाँत कर लेना चाहती थी। परंतु उसकी टाँगें बुरी तरह काँप रही थीं और नशे में उन हाई हील सैंडलों में वो टिक कर खड़ी नहीं हो पा रही थी। योगिता को लगा कि कहीं वो गिर ना पड़े।

योगिता लड़खड़ाती हुई पास ही रखी चमड़े की कुर्सी पर जा का इस तरह बैठ गयी कि उसकी ठोस गाँड सीट के किनारे पर टिकी थी और उसकी लंबी टाँगें फैली हुई थीं। उसी क्षण उसका काम-रस चूत में से बह कर योगिता की गाँड के नीचे लैदर की सीट पर

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

फैल गया। एक क्षण के लिए अपनी चूत को बगैर छुए योगिता ने सारस की भांति अपनी सुराहीदार गर्दन आगे को निकाल कर अपना सिर झुकाया। योगिता झड़ने के लिए तड़प रही थी किंतु फिर भी वो विलंब कर रही थी। उसे आभास था कि आज उसका कामोन्माद बहुत ही विस्फोटक होगा और वो चूदासी औरत इसी उम्मीद में उत्तेजना से उन्मादित हो रही थी।

थोड़ा और नीचे झुक कर योगिता ने अपनी टाँगों के बीच में फूँक मारी। उसकी क्लिट धधकने लगी और चूत जलती हुई प्रतीत हुई जैसे कि उसने सुलगती हुई लकड़ी में अपनी साँस फूँक कर उसमें आग भड़का दी हो। अपनी चूत की प्रचंड गर्मी का झोंका उसे अपने चेहरे पर महसूस हो रहा था। अपनी ही चूत की तीक्ष्ण खशबू से उसकी नाक फड़क उठी। सुगंध लेते हुए वो सोचने लगी कि इसमें आश्चर्य वाली कोई बात नहीं थी कि वो गधा इतना उत्तेजित हो गया था।

योगिता अपनी गोद में आगे झुकी। उसकी जीभ उसके निचले होंठ पर आगे–पीछे फिसलने लगी। उसके मुँह में उसके झगदार थूक के बुलबुले उठने लगे। योगिता सोच रही थी कि काश वो इतनी लचीली होती कि स्वयं अपनी चूत चाट सकती। उसे अपनी चूत इतनी स्वादिष्ट और मनोहर लग रही थी कि उसे अपनी जीभ भी अपनी क्लिट जितनी ही उत्तेजित महसूस हो रही थी। कितना अद्भुत होता अगर वो अपनी चूत खा सकती और अपनी फड़फड़ाती जीभ पर झड़ सकती। कितना कामुक रोमांचक होता अगर वो अपनी ही चूत का गरमागरम रस अपने ही मुँह में बहा सकती। झड़ते हुए अपनी ही चूत से काम–रस पीने का दोहरा आनंद कितना निराला होता। ये विचार उसे और उत्तेजित कर रहे थे और साथ ही तड़पा भी रहे थे क्योंकि वो जानती थी कि ये उसके बस की बात नहीं है। उसने पहले भी कई बार कोशिश की थी।

हांफते हुए फिर से पीछे हो कर योगिता अपनी भितरी जाँघों की गर्म और गीली त्वचा पर अपने हाथ फिराने लगी। उसकी गाँड लैदर की सीट पर मथ रही थी और उसका पेट ऊपर–नीचे हो रहा था। उसने अपना एक हाथ चूत की मेंड़ पर रखा और उसकी अँगुलियाँ फिसल कर क्लिट को आहिस्ता से सहलाने लगी।

योगिता ने अपने दूसरे हाथ की चार अंगुलियाँ आपस में जोड़कर लंड के आकार में इकट्ठी कीं और धीरे से स्थिरतापूर्वक चूत में अंदर घुसा दीं। उसकी क्लिट प्रबलता से

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

हिलकोरे मारने लगी और चूत से बहुत सारा झाग निकलने लगा।

योगिता थरथराते हुए सिसकने लगी। वो एक हाथ की अंगुलियों से अपनी चूत को चोद रही थी और दूसरे हाथ से अपनी क्लिट सहला रही थी। उसकी जाँघें हिलोरे मारते हुए झटक रही थीं। वो जानती थी कि आज तृप्ति के लिए उसे एक से अधिक बार झड़ना पड़ेगा।

उसकी पलकें बंद हो गयी और उसके हाथ तीव्रता से चलते हुए कामोन्माद के पहले मलाईदार उत्कर्ष के लिए उद्यम करने लगे। उसकी चूत जितनी गर्मी ही उसके दिमाग में भी चढ़ी हुई थी। कई कल्पनायें और तसवीरें उसके दिमाग में प्रचंड नृत्य कर रही थीं। बारबार उसके ख्यालों में गधे के विशाल लंड की तसवीर ही आ रही थी। उसे एहसास था कि अपनी चूत को अंगुलियों से चोदते हुए जानवरों के लौड़ों की कल्पना करना कितना विकृत था, किंतु ये ख्याल था कितना उत्तेजक और मादक।

एक लहराती हुई तरंग उसके पेट और चूत में दौड़ गयी। हांफते हुए योगिता ने अपनी चारों अंगुलियाँ पूरी की पूरी अपनी चूत में घुसा दीं। दूसरे हाथ से अपनी क्लिट को प्रचंडता से रगड़ते हुए योगिता अपनी तरबतर चूत के अंदर चारों अंगुलियाँ घुमाने लगी।

अचनक ही वो कामोत्कर्ष पर पहुँच गयी। एक पल वो कामोन्माद के शिखर पर मंडरा रही थी उर दूसरे ही क्षण उसकी चूत ज्वालमुखी की तरह फट पड़ी।

एक के बाद एक लहर उसके शरीर में हिलोरे मारती हुई दौड़ने लगी और एक के बाद एक ऐंठन उसकी चूत और जाँघों को झंझोड़ने लगी। योगिता को ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसका पूरा शरीर पिघल रहा है और रगों में चरम आनंद की करोड़ों चिंगारियाँ फूट रही हैं और जैसे उसका दिमाग फट जायेगा और उसकी धमनियाँ काम–रस से भर गयी हैं।

योगिता आगे झुकी और फिर कमर पीछे मोड़कर अपनी चूत को अंगुलियों से लगातार चोदते हुए उत्तेजना से अपनी चूत का रस निकालने लगी और चरम–आनंद की लहरें श्रृंखला में फूटने लगी। उसकी चूत का अमृत उसके पेट के नीचे झाग बनाने लगा और उसकी धारायें टाँगों से नीचे बहने लगी। उसकी क्लिट में भी बार–बार विस्फोट होने लगा

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

और हर विस्फोट के साथ उसकी चूत की गहराइयों से चूत–रस की धार फूट पड़ती।

चूत मे कामोन्माद की एक जोरदार आखिरी लहर ने उसे झंझोड़ कर रख दिया और योगिता हाँफती हुई कुर्सी पर पीछे फिसल कर मुस्कुराने लगी। उसकी अंगुलियाँ अभी भी उसकी चूत में चल रही थी कि कहीं रोमांच की कोई लहर अंदर ना रह जाये। उसकी उत्तेजना कुछ कम हुई पर जैसे–जैसे उसने अपनी चूत को सहलाना जारी रखा, उसकी क्लिट फिर से तनने लगी। इतनी बार झड़ने के कुछ ही क्षणों पश्चात वो चुदक्कड़ औरत फिर से उत्तेजित हो गयी थी।

****

रीना कँवर © 2007

****

उधर रश्मि ने भी अपना पैग खत्म किया और नशे में अपना ग्लास एक तरफ घास पर उछाल दिया। उसकी चूत भी भट्टी की तरह दहक रही थी। उसने अपनी कमीज़ के हुक खोलकर उतार दी। रश्मि ने ब्रा नहीं पहनी हुई थी और उसकी भारी चूचियाँ बाहर उछल पड़ीं। शाम की पहाड़ी ठंडी हवा चल रही थी जिसके सपर्श से उसके गुलाबी निप्पल तन कर सीधे खड़े थे। रश्मि ने अपनी चुचियों को गूंधते हुए अपने सनसनाते निप्पलों को मरोड़ा। उसके निप्पल मानो उसकी अंगुलियों में तड़क–से उठे। उसने अपनी चूचियों को हाथों में भरकर ऊपर उठाया और साथ ही अपनी गर्दन झुका कर अपना सिर नीचे गिरा दिया। उसकी जीभ चाबुक की तरह बाहर निकली और गरम रश्मि अपनी जीभ से अपने निप्पल चाटने लगी। पहले उसने अपने एक निप्पल को मुँह में लेकर चूसा और फिर दूसरे निप्पल को चूसने लगी।

"उममम" वो आनंद से बिल्ली जैसी घुरघुरायी। वो जल्दी ही अपने बेडरूम में जाकर शेरू और सुल्तान से चुदाई की आकांक्षा कर रही थी। परंतु वो चाहती थी कि पहले योगिता दूसरे बेडरूम में ठीक से सो जाये, फिर वो अंदर अपने बेडरूम में कुत्तों के लौड़ों से अपनी चूत को शांत करेगी। वो जानती थी कि योगिता भी अय्याश और चुदक्कड़ किस्म की औरत है पर उसे डर था कि कुत्तों से चुदाई का विषय शायद योगिता सहजता से नहीं ले पायेगी। इसलिए रश्मि ने कुछ देर तक वहीं बैठ कर अपने हाथों से मज़ा लेने का निश्चय किया। उसने अपनी गर्दन घुमा कर देखा तो वो गधा नदारद था। शायद वो अपने छप्पर में चला गया था। उस गधे के विशाल लंड के दर्शन ने उसे अत्यधिक उत्तेजित कर

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

दिया था।

उसने अपनी सलवार का नाड़ा खोला और टाँगों से सलवार नीचे खिसकाने लगी। सलवार के नीचे उसने काले रंग की बिकिनी पैंटी पहनी हुई थी जो महज एक सिल्क के बारीक पट्टे जितनी थी। चूत के ऊपर का पैंटी का पतला सा पट्टा रश्मि के चूत–रस से तरबतर था और पैंटी के काले रेशमी कपड़े में से चूत–रस की सफ़ेद धारियाँ निकल रही थी। उसने पैंटी भी नीचे खींच कर एक तरफ घास पर उछाल दी। वो पैंटी जमीन पर ऐसे गिरी जैसे कि भीगे परों वाला काला पतंगा पड़ा हो। रश्मि की चूत का अमृत उसकी चिकनी अंदरूनी जाँघों पर बह निकला।

छप्पर की दिशा से रश्मि को गधे के रेंकने की मंद सी आवाज़ आयी। उसे गधे के विशाल लंड के बारे में सोचने के कारण ही रश्मि की चूत का ये हाल था। रश्मि ने झुक कर अपनी चूत को निहारा। योगिता की तरह उसने भी कई बार कोशिश की थी अपनी चूत स्वयं चाट सके पर कभी सफ़ल नहीं हो पायी थी। चूत–रस उसे बहुत स्वादिष्ट लगता था। कॉलेज के दिनों में हॉस्टल में वो दूसरी लड़कियों की चूत चाट कर उनके चूत–रस का पान करती थी और अपनी चूत दूसरी लड़कियों से चुसवाती थी। परंतु पिछले कई वर्षों से वो किसी लड़की या औरत के साथ हम–बिस्तर नहीं हुई थी। रश्मि को योगिता का ख्याल आया। दोनों ने हॉस्टल में कितनी ही बार एक दूसरे की चूत चाटी थी। योगिता आज भी उसे काफी सैक्सी लगी थी। रश्मि ने सोचा कि योगिता के वापिस जाने के पहले एक बार उसे को रिझा कर जरूर चुदाई करेगी। पर इस समय तो गधे के लंड का विचार उसके ख्यालों में था और अपनी चूत की ज्वाला शांत करने के लिए उसे अपने दोनों कुत्तों के लौड़ों की जरूरत थी।

वो अपनी चूत–रस से भीगी अंदरूनी जाँघें सहलाने लगी और बीच–बीच में चूत पर भी हाथ फेरने लगी। उसकी चूत के होंठ फड़कते हुए फैल गये और उसकी क्लिट किसी बंदूक की गोली की तरह छूट कर बाहर को निकली। रश्मि की चूत में से मादक सुगंध बाहर बह कर मंद–सी ठंडी सुहानी हवा में फैलने लगी।

रश्मि की चूत की मीठी सुगंध हवा के साथ बह कर पीछे छप्पर तक पहुँची जहाँ वो गधा खड़ा था और उसका लंड अभी भी उसकी टाँगों के बीच झूल रहा था। उसके मुलायम और गीले नथुने फड़कने लगे और चूत की खुशबू से उसका लंड हथौड़े की तरह हवा

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

को कूटने लगा और उसके बड़े टट्टे उसकी पिछली टाँगों के बीच में घूमने लगे। वो लालसा से रेंकने लगा।

रश्मि को उसकी विलापी कराहट सुनायी दी और उसकी अंगुलियाँ चूत में धंस गयी। उसे ख्याल आया कि गधे का लंड कितना विशाल, कठोर और गरम था – और निश्चय ही इस समय भी वो इसी अवस्था में होगा। इस ख्याल ने उसके अंदर एक नयी प्रेरना फूंक दी और वो पूरे जोश में अपनी चूत में चार अँगुलियाँ डाल कर चोदने लगी। उसकी क्लिट जोर से फड़क रही थी और उसकी अंगारे जैसी चूत से उसका अमृत–रस किसी छोटे–से दरिया कि तरह बाहर बहने लगा।

छप्पर में से फिर गधे का विलाप सुनायी पड़ा और रश्मि का हाथ एक बार फिर धीरे पड़ गया।

अगर गधे के लंड और टट्टों की कल्पना करके अपनी चूत को अंगुलियों से चोदने में इतना रोमाँच आ रहा था तो उसे यथार्थ में देखते हुए झड़ने में कितना मज़ा आयेगा। नशे में चूर उसके दिमाग में नयी लालसा छा रही थी। उसने अपना सिर झटका तो गधे के लंड की तसवीर थोड़ी सी डाँवाडोल हुई पर मिटी नहीं। ऐसा लग रहा था जैसे उस मुर्ख गधे के मूसल जैसे लंड की तसवीर रश्मि के दिमाग में छप गयी थी। उसे अपनी विकृत कामना पर हल्की सी ग्लानि हुई पर ये ग्लानि क्षण भर का एक तुच्छ मनोभाव था जो काम लिप्सा और उत्तेजना की गरमी में आसानी से पिघल गया। रश्मि के होंठों पर एक मुस्कुराहट आयी और उसने फैसला कर लिया।

वो छप्पर में जायेगी और अपनी चूत को अंगुलियों से चोदते हुए जब तक जोर से झड़ नहीं जाती तब तक गधे के लंड और टट्टों पर अपनी आँखें सेंकेगी।

ये इतना भी विकृत नहीं था, रश्मि ने स्वयं को आश्वासित किया। लंड को देखना उसकी कल्पना करने के बराबर ही तो था –– और निस्संदेह इतना ही उसका इरादा था। हालांकि उसने गधों और घोड़ों के लंड को चूसने और चुदने की अनेक बार कल्पना की थी पर रश्मि को अपने ऊपर भरोसा था। और अगर उसके दिमाग में संदेह था भी तो आश्वासन के लिये नशे में वो जोर से चिल्लाते हुए बोली, *"मैं सिर्फ उसके लंड को निहारूँगी!"*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

फिर उसने अपनी गर्दन हिलायी जैसे कि आश्वासित हो गयी हो।

अपने विकृत इरादों से वो और भी उत्तेजित हो गयी हालांकि उसे एहसास नहीं था कि उसकी करतूत कितनी विकृत होने वाली थी। योगिता की नामौजूदगी के आश्वासन के लिए रश्मि ने एक बार घर के दरवाजे की तरफ देखा। वो अपनी दुराचारी हरकतों में योगिता द्वारा कोई बखेड़ा नहीं चाहती थी पर योगिता का वहाँ कोई नामोनिशान नहीं था।

असल में, योगिता जो खुद कुछ कम नहीं थी, घर के अंदर अपनी ही हरकतों में लिप्त थी – और जल्दी ही और भी ज्यादा व्यस्त होने वाली थी जिसका ना तो उसे और न ही रश्मि को एहसास था।

रश्मि नशे में नंगी ही हाई हील के सैंडल पहने लड़खड़ाती खड़ी हुई। उसकी पहली ठोकर घास में गिरी हुई वोडका की बोतल पर लगी। उसने झुक कर वो बोतल उठा ली। उसमें थोड़ी सी वोडका बाकी थी और वो बोतल से घूँट पीती हुई छप्पर की तरफ बढ़ी। चलते हुए उसकी नंगी चूत ऐसे महसूस हो रही थी जैसे उसमें से भाप निकल रही हो। रश्मि का बदन उत्तेजना से काँप रहा था और वो नशे में काफी चूर थी। इस वजह से ऊँची ऐड़ी के सैंडलों में उसके कदम सीधे नहीं पड़ रहे थे और वो छप्पर तक पहुँचने तक तीन–चार बार गिरी।

जैसे–जैसे रश्मि छप्पर के नज़दीक आ रही थी, उसकी गरम चूत की महक छप्पर में तेज़ होती जा रही थी। रश्मि को उस उत्तेजित गधे के पैरों की ज़मीन पर ठाप सुनायी दी। छप्पर के द्वार पर वो कुछ क्षण के लिए रुकी और धीरे से बहती हुई शीतल हवा से उसके लंबे काले बाल उड़कर उसके चेहरे पर आ गये और उसे लगा जैसे वो शीतल हवा उसकी चूत की आग को भड़का रही हो। उस मुर्ख गधे ने अपना सिर उछाल कर रश्मि की तरफ देखा। गधे की अकड़ी हुई गर्दन के बाल भी सीधे खड़े हो गये जब वो अपने दाँतों के पीछे अपने भीगे होंठ मोड़कर जोर से घुरघुराया तो उसके जबड़ों से थूक की बौंछार सी निकल गयी।

रश्मि अंदर दाखिल हुई और बोतल में से वोडका की आखिरी घूँट पी कर दरवाजा बंद कर दिया। लकड़ी के खंबे के सहारे खड़े हो कर रश्मि ने उस जानवर के अविश्वसनीय लंड पर अपनी निगाह डाली। और कुछ नहीं तो उसका लंड पहले से अधिक बड़ा हो

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

गया लग रहा था। चूत को रगड़ते हुए देखने के लिए कितना रोमांचक नज़ारा था।

इतना विशाल और काला, नंगा लंड बालों से भरे खोल में से बाहर निकल कर खड़ा था। उसके चिकने सुपाड़े पर वीर्य की कुछ दूधिया बूँदें चमक रही थी।

गधे के लंड और टट्टों को घूरते हुए रश्मि ने बोतल अपने होंठों से लगायी पर जब उसे एहसास हुआ कि वो खाली है तो उसने वो बोतल एक तरफ पटक दी और अपना हाथ चूत पे रख कर अपनी अंगुलियाँ दहकती हुई चूत में घुसा दीं। गधे ने जब उसकी मलाईदार चूत को देखा तो उसकी आँखें बाहर को उभर आयीं। उसकी लाल जीभ राल टपकाती हुई उसके खुले जबड़े के किनारे फिसलने लगी। रश्मि जैसी चुदक्कड़ और कामुक औरत के लिए काफी रोमाँचक बात थी कि एक उत्तेजित गधा इतनी लालसा से उसकी चूत को घूर रहा था। उतना ही और रोमाँच रश्मि को गधे के लंड और टट्टों को निहारने में भी आ रहा था। नशे के कारण रश्मि एक जगह स्थिर खड़ी नहीं हो पा रही थी। इसलिए उसने लकड़ी के खंबे पर अपनी पीठ टिका कर अपने घुटने थोड़े से नीचे झुका लिए और गधे को अपनी खुली चूत का दर्शन करवाने लगी।

वो गधा घुरघुराया और उसके फटफटाते होंठों से बुदबुदाने की अवाज़ आने लगी। उसके पुष्ठ बदन में तनाव की लहरें उठ रही थीं। उसका लंड अकड़ कर ऐसे फूल गया था कि रश्मि को लग रहा था कि वो लंड की ठनठनाहट सुन रही थी।

रश्मि ने अपनी क्लिट रगड़ी तो उसका बदन थरथरा उठा। उसने अपनी दो अंगुलियाँ धीरे से चूत में अंदर तक घुसा दीं और उन्हें चूत में घुमाने लगी। गधे की नज़रें रश्मि की चूत पर ऐसे गड़ी थीं जैसे वो अपनी नज़रों से उसे सहला रहा हो। रश्मि के चूत–अमृत की एक धार चू कर उसकी टाँग से नीचे की ओर बह गयी। उसनी अपनी अँगुलियाँ पूरी अंदर तक घुसा दीं और फिर उसने धीरे से बाहर खींची तो उसकी तंग चूत जैसे उसकी अंगुलियों को अंदर चूसने लगी और उसकी चूत का रस उसकी चुल्लू बनी हथेली में भर गया। रश्मि ने फिर अपनी अंगुलियाँ अंदर घुसा दीं और अंदर–बाहर चोदते हुए अपना अंगूठा क्लिट पर आगे–पीछे फिराने लगी।

उसके चेहरे पर विकृति और नीचता छायी हुई थी, आँखें सिकुड़ कर बारीक हो गयी थी और हाँफते होंठ खुले हुए थे। उसकी भी राल बह रही थी – पर उतनी नहीं जितनी उस

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

उत्तेजित गधे की बह रही थी। उस गधे का थुथन थूक से बुरी तरह लिसड़ा हुआ था।

अपने हाथ पर अपनी चूत को ऊपर–नीचे चोदते हुए रश्मि की गाँड आगे–पीछे झटक रही थी। उसका बहता चूत–रस और भी गर्म और सुगंधित हो गया और उस गधे ने अपनी पुष्ट गर्दन तान कर रश्मि की तरफ अपना सिर ढकेल दिया। उसकी जीभ बाहर निकली हुई थी और किनारों से टपक रही थी। उसके मुँह से इतनी राल टपक रही थी कि उसकी जीभ मुँह में गोते लगाती प्रतीत हो रही थी।

रश्मि कामोत्तेजना से अभिभुत हो रही थी। उसकी टाँगें काँप रही थीं और सिर घूम रहा था। अपनी चूत में अंगुलियाँ अंदर–बाहर चोदती हुई रश्मि गधे के निकट खिसक गयी। उसने अपना हाथ चूत से हटया। उसकी अंगुलियों पर चूत–अमृत बह रहा था और उसकी हथेली भी मलाईदार द्रव्य से प्लावित थी। रश्मि ने अपना हाथ गधे के थुथन के नज़दीक लाया तो गधे के नथुने फड़कने लगे और उसकी आँखें चमक उठी। उसकी जीभ बाहर लपकी और और उस गधे ने रश्मि के हाथ से चूत–रस सुड़कना शुरू कर दिया।

गधे की भीगी हुई गर्म जीभ काफी फुर्तीली और अधीर थी। जब वो गधा अपनी भीगी जीभ से इतनी उत्साह से उसका हाथ चाट रहा था तो रश्मि के विकृत दिमाग में ये ख्याल आना स्वाभाविक था कि गधे की जीभ उसकी चूत पर फिरती हुई कैसी महसूस होगी।

रश्मि अपने हाथ बदलने लगी। वो एक हाथ की अंगुलियों से अपनी चूत चोदती और दूसरा हाथ गधे के थुथन को पेश करती और फिर हाथ बदल लेती। चूत के मलाईदार रस से भीगा हुआ रश्मि का हाथ गधे के थुथन पर जाता और फिर जब वो हाथ चूत पर वापस आता तो उस उत्तेजित जीव के थूक से तरबतर होता।

“ऊँम्म ––– कोशिश करूँ क्या?” रश्मि ने सोचा। उसकी अन्तरात्मा विरोध कर रही थी पर वो विकृत वासना से अभिभुत थी। *“सिर्फ उसकी जीभ ही तो है, उसने स्वयं–सेवी तर्क किया। वो पहले से मेरे हाथ से चूत क रस चाट रहा है तो सीधे चूत से रस चाटने में क्या बुराई है। शेरू और सुल्तान भी तो मेरी चूत चाटते हैं और फिर जीभ ही तो है... मैं कौनसा इससे चुदवाने वाली हूँ। बेचारा इतना उत्तेजित है... मैं तो सिर्फ इसकी सहायता कर रही हूँ... एक बे–ज़ुबान जानवर के प्रति दया। और फिर जब मैं इसकी जीभ पर झड़ुँगी तो मेरी चूत भी शाँत हो जायेगी, जिससे वासना में बह कर और आगे बढ़ने का*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

खतरा भी नहीं रहेगा।"

यहाँ तक कि रश्मि अपने तर्क पर मुस्कुराये बिना नहीं रह सकी। रश्मि गधे के और नज़दीक आ गयी और अपनी चिकनी जाँघें फैलाते हुए अपने घुटने थोड़े से झुका कर उसने अपनी चूत ऊपर को ठेल दी। रश्मि ने अपने दोनों हाथ अपनी टाँगों के बीच में ले जाकर अपनी लचीली चूत के होंठ फैला दिये और चूत को मलाई के कटोरे की तरह खोल दिया।

गधे ने अपना थुथन रश्मि की जाँघों के बीच मे ढकेल दिया। रश्मि थरथरा उठी जब उसे अपनी चूत पे गधे का थुथन फड़कता हुआ महसूस हुआ। जब वो गधा घुरघुराया तो उसकी गर्म साँस सीधे रश्मि की चूत में लहरा गयी। उसका मुलायम थुथन रश्मि की क्लिट पर रगड़ा और वो कठोर कलिका ऐंठ कर फड़फड़ाने लगी।

"ओहह!" रश्मि ने गहरी साँस ली, *"भोंसड़ी के!"*

रश्मि ने अपनी चूत के अधर और भी चौड़े खोल दिये और उन लचीले अधरों को गधे के थुथन पर इस तरह खींच के अपनी चूत उसके थुथन पर घुमाने लगी जैसे कि लंड पर कॉन्डम चढ़ा रही हो।

गधा उसकी चूत में घरघराया और फिर चूत की भिनी सुगंध अपनी नाक में खिंची। उसकी नाक चूत में फड़क रही थी। उसकी जीभ धीरे–धीरे बाहर फिसलने लगी, जैसे कि वो गधा अनिश्चित हो कि क्या करना है। गर्म चूत की सुगंध से वो गधा अवश्य परिचित था। वो एक चोदू गधा था जिसने अपने जीवन में कईं गधियों को चोदा था। परंतु पहले कभी उसके थुथन पर किसी औरत की चूत नहीं दबायी गयी थी और इसलिए वो चकराया हुआ था।

पर फिर उसकी पाश्विक फितरत ने उसे अपने प्रभाव में ले लिया। वो रश्मि की चूत के बाहर चाटते हुए चूत के अंदर सुड़कने लगा और फिर उसने अपनी लंबी जीभ सीधे रश्मि की चूत में घुसेड़ दी। रश्मि जोर–जोर से कराहने और सिसकने लगी। गधे की जीभ इतनी बड़ी थी कि वो रश्मि की चूत इतनी अंदर तक भर रही थी जितना की औसत लंड उसकी चूत भर सकता था।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

रश्मि गधे के थुथन के सहारे हिलने–डुलने लगी। रश्मि का सुडौल बदन पूरा काँप रहा था और वो आनंद और उत्तेजना से कराह रही थी। उसके चुत्तड़ गोल–गोल घूम रहे थे और उसकी कमर आगे–पीछे हो रही थी। चूत को फैला कर खोलने के लिए रश्मि को अब अपने हाथों की जरूरत नहीं थी। वो अब उस गधे का सिर पकड़ कर अपनी टाँगों के बीच में दबा रही थी। गधे को भी अब और प्रोत्साहन की जरूरत नहीं थी। वो भी पूरे आवेश से रश्मि की चूत में चर रहा था।

गधा इतना भी मुर्ख नहीं था और जल्दी ही सीख गया। स्थिति से डरे बगैर, वो रश्मि की चूत में अपनी जीभ ऊपर–नीचे चोद रहा था। चोदने में उसकी जीभ किसी भी मानव लंड से कम नहीं थी।

गधे के सिर को अपने हाथों में थामे हुए रश्मि अपनी चूत उस पर रगड़ रही थी। हलांकि रश्मि हाई–हील के सैंडल पहने हुए थी, पर फिर भी वो अपने पैरों के पंजे और मोड़ कर ऊपर उठी और फिर वापस झुक गयी। गधे का सिर भी उसके साथ ऊपर–नीचे हुआ। जब रश्मि की जाँघों पर उसका चूत रस बहने लगा तो गधे ने सिर झुका कर चूत–रस की धार को मुँह में सुड़क लिया, और फिर ऊपर उठा कर चूत के बाहर लगी मलाई को चाटने लगा।

रश्मि ने खुद को और आगे ढकेल दिया जैसे कि वो गधे का पूरा सिर अपनी चूत में लेने की कोशिश कर रही हो। गधे की जीभ के किनारों से रश्मि के चूत–रस के मोतियों की लढ़ें लटकी हुई थीं। रश्मि फिर अपने पंजे मोड़ कर ऊँची उठी। गधे का थुथन उसकी चूत पर फिसला और उसकी लंबी जीभ रश्मि के चूतड़ों की दरार में लिपट गयी। रश्मि के गाँड के छिद्र से चूत तक सुड़कती हुई गधे की जीभ धीरे से वापस खिसकी।

गधे का भूरा थुथन रश्मि की चूत की मलाई से भीगा हुआ था और उसकी जीभ भी उस स्वादिष्ट द्रव्य से तरबतर थी। वो भी रश्मि की चूत में राल बहा रहा था। उसका थूक बुदबुदा कर निकलता हुआ रश्मि की चूत की मलाई में मिश्रित हो रहा था जिससे रश्मि की चूत और जाँघें दलदल में परिवर्तित हो गयी थीं।

रश्मि ने अपने हाथ नीचे, गधे के जबड़े के पास ले जाकर उसकी जीभ अपनी अंगुलियों में पकड़ ली और उसकी जीभ को इस तरह अपनी क्लिट पर रगड़ने लगी जैसे कि वो

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

वायब्रेटर से चुदाई कर रही हो परंतु किसी भी प्लास्टिक के वायब्रेटर से उसे इतना मज़ा नहीं मिला था। वो जानती थी कि इस समय गधे के साथ जो वो कर रही है वो समाज के लिए विकृति है पर यह एहसास ही उसकी उत्तेजना और रोमांच को बढ़ा रहा था।

रश्मि ने गधे की जीभ अपनी चूत में भर ली। रश्मि की चूत ने उस जीभ को चारों तरफ से झटक लिया और चूत की दीवारें जीभ को चूसती और अंदर खींचती हुई उस पर चिपकने लगी। गधे की जीभ भी सरकती और फिसलती हुई रश्मि की चूत के अंदर धड़कने लगी। गधे ने जीभ और अंदर ठेल दी और फिर धीरे से वापस खींच कर रश्मि की क्लिट पर सुड़कने लगा।

रश्मि ने अब झड़ना शुरू कर दिया। रश्मि को ऐसा लग रहा था जैसे कामोत्कर्ष का चरम आनंद उसकी ऐड़ियों से शुरू होकर उसकी काँपती टाँगों से ऊपर बहता हुआ चूत में अकर फूटेगा। रश्मि की क्लिट में विस्फोट हुआ और उसकी चूत पिघल उठी। रश्मि की चूत से चूत-रस की गर्म मलाई बाहर बहने लगी तो रश्मि गधे के थुथन पर जोर-जोर से झटकने और अपनी चूत पीटने लगी।

जब रश्मि का तीखा और पिघले मोतियों जैसा गाढ़ा और गर्म चूत-रस गधे की स्वाद-ग्रंथियों पर बहने लगा तो गधे की जीभ पागलों की तरह उसे सुड़कने लगी और गधा जोर से रेंकने लगा। रश्मि की गाँड और चूतड़ आगे-पीछे हिलने लगे और गधे की जीभ चूत के अंदर फावड़े की तरह खोदती हुई जल्दी-जल्दी चूत-रस पीने की चेष्टा करने लगी।

रश्मि का बदन ऐंठ कर झनझनाने लगा और वो आनंद से चींखने लगी। वो झटकने, काँपने और लड़खड़ाने लगी और जोश से उसे चकर आने लगा। उसे अपनी टाँगें नरम होती महसूस हुईं और उसकी सारी शक्ति चरमानंद की गर्मी में पिघलने लगी। रश्मि अपने उत्कर्ष पर वहाँ चिपकी हुई मीठे स्वर्गसुख की खाई के ऊपर झूल रही थी। गधे की जीभ ने चाटना जारी रखा और रश्मि के अंदर आनंद की एक और तरंग छेड़ते हुए गधा चूत-रस का पान कर रहा था।

झनझनाते हुए आखिरी झटके के साथ रश्मि फिर जोर से चींखी और फिर अस्थिर कदमों से पीछे हट गयी। गधे ने अपना सिर रश्मि के साथ-साथ पीछे ढकेला और आखिरी बार सुड़कते हुए अपनी जीभ उसकी चूत पर फिरायी। रश्मि में खड़े रहने की शक्ति नहीं बची

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

थी इसलिए वो अपने घुटने जमीन पर टिका कर बैठ गयी। अधखुली आँखों से रश्मि ने गधे पर दृष्टि डाली – उसकी जीभ से जो अदभुत रोमाँच और आनंद रश्मि को मिला था, उसके लिए कृतज्ञता भरी दृष्टि थी। रश्मि ने देखा कि गधे का जबड़ा और थुथन उसके चूत–रस से दमक रहा था।

गधे ने भी रश्मि को निहारा। गधे के भाव आशापूर्ण थे। रश्मि की चूचियाँ ऊपर–नीचे उठ रही थीं और वो अपनी साँसों पर नियंत्रण पाने की कोशिश कर रही थी। गधा भी हाँफ सा रहा था। गधे के चेहरे के भाव बदले और उसकी बड़ी आँखों पर उसकी पलकें झुक गयी और वो उदास दिखने लग। रश्मि ने ऐसे ही सोचा कि शायद गधा उसके पीछे हट जाने से उदास है। क्या उसकी अतृप्य जीभ उसकी चूत को और चाटना चाहती थी। रश्मि ने झुक कर अपनी टाँगों के बीच में देखा। उसकी चूत और जाँघें गधे के थूक से सराबोर थीं।

रश्मि सोचने लगी कि क्या वो एक बार फिर इस तरह झड़ सकती है। ख्याल तो सुखद था और उसे विश्वास था कि गधा भी एक बार फिर उसकी चूत का स्वाद लेना पसंद करेगा। उसे ये भी विश्वास था कि योगिता अब तक तो सो चुकी होगी और उसके वहाँ आकर रश्मि को गधे की जीभ से अपनी चूत चटवाते हुए देख लेने की कोई संभावना नहीं थी। रश्मि अपनी चूत और गधे के थुथन को बारी–बारी देखने लगी।

लेकिन तभी गधे ने अपना सिर उछाला और फिर घूम कर तिरछा खड़ा हो गया। रश्मि की आँखों के सामने गधे का लौड़ा लहराने लगा। जब वो उत्साह से रश्मि की चूत चाट रहा था तो उसका लंड और भी विशाल हो गया था। उसका लौड़ा इतना विशाल दिख रहा था जैसे कि कल्पित प्रतिमा हो, काले पत्थर से गढ़ा हुआ खंबा।

“ओहह! बेचारा जानवर”, रश्मि ने सोचा। *“मैं भी कितनी स्वार्थी हूँ जो अपने मज़े के लिए इस बे–ज़ुबान जानवर को इतना उत्तेजित कर दिया और अपनी चूत की शान्ति के बाद इसे तड़पता हुआ छोड़ रही हूँ।”*

रश्मि ने ज़िंदगी में कभी भी किसी जानवर के प्रति क्रूरता नहीं की थी और ना ही वो अब ऐसा कर सकती थी...

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

****

रीना कँवर © 2007

****

घर के अंदर गेस्ट–बेडरूम में योगिता की चूत में फिर से मीठी लहरें उठ रही थीं और उसकी अंगुलियाँ एक बार फिर चूत में अंदर–बाहर हो रही थीं। योगिता को दूर से गधे के रेंकने की आवाज़ आ रही थी जो उसकी चूत की दहकती ज्वाला में घी का काम कर रही थी।

योगिता के होंठों पे मुस्कुराहट आ गयी। वो सोच रही थी की दो–तीन दिन में वो अपने घर चली जायेगी। काश उसे उस गधे के लंड और टट्टों से खेलने का और सहलाने का मौका मिले। परंतु उसे सावधान रहना होगा। अगर रश्मि ने या किसी और ने उसे गधे का लंड सहलाते हुए देख लिया तो बहुत शर्मिन्दगी होगी और उसकी इज्जत खाक में मिल जायेगी। योगिता क्या पता था कि बाहर रश्मि पहले से इस समय गधे के साथ ये सब कर रही थी।

योगिता कल्पना कर रही थी कि उसके हाथों में फड़कता हुआ वो विशाल लंड कैसा महसूस होगा। उसे खुद पे आश्चर्य हुआ जब वो यहाँ तक सोचने लगी कि उस लंड का स्वाद कैसा होगा। *"रँड योगिता!"* उसने सोच, *"ये तो हद ही हो जायेगी!"* योगिता की चूत से चिपचिपा रस फिर बाहर बहने लगा था और वो जोर–जोर से अपनी चूत को अंगुलियों से चोद रही थी।

और तभी उसे कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनायी दी।

शेरू और सुल्तान, रश्मि के बेडरूम में सुस्ता रहे थे। योगिता की चूत की गंध हवा में फैली तो दोनों सिर उठा कर खुशबूदार हवा को सूँघने लगे और फिर उत्तेजना से भौंकने लगे। उन दोनों के लंड अपने खोल में से निकल आये थे और टट्टे भी सुजने लगे थे। भौंकते हुए दोनों कुत्ते चूत की मीठी सुगन्ध के पीछे उछलते हुए भागे।

जब योगिता ने कुत्तों को भौंकते और गुर्राते हुए सुना तो उसने अपनी चूत को हाथ से ढक कर ऊपर देखा। गुस्से से योगिता की भौंहें चढ़ गयीं। उसका ख्याल था कि रश्मि ने उन्हें अपने बेडरूम में बंद कर रखा था पर शायद जब रश्मि फोन सुनने अंदर आयी थी

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

तो दरवाजा बंद करना भूल गयी होगी।

कुत्ते कहीं इस कमरे में आकर उसके आनन्द में बाधा ना डालें, इसलिए वो अपने बेडरूम का दरवाजा बंद करने के लिये उठी पर खड़ी होते ही नशे के कारण कार्पेट पर लुढ़क गयी। तभी वो दोनों कुत्ते लपकते हुए कमरे में घुसते हुए दिखायी दिये।

दोनों काफी डरावने लग रहे थे। उनके नुकीले सफ़ेद दाँत चमक रहे थे और दोनों के जबड़ों से राल टपक रही थी। डर के कारण, योगिता का ध्यान उनके सख्त लौड़ों की तरफ नहीं गया था और उसे लग रहा था कि कुत्ते उस पर हमला करने वले हैं। वो फिर से उठी और डर से चिल्लाती और नशे में डगमगाती हुई बिस्तर की तरफ लपकी। कुत्ते भी उसके पीछे लपके तो वो डर से चींखी। उसे कुत्तों की साँसें अपने चूतड़ों पर महसूस होने लगी। कुत्तों की लंबी लाल जीभें बाहर झूल रही थीं।

"बचाओ!" योगिता दहाड़ी।

कुत्ते भी भौंकते हुए गुर्रा रहे थे। दोनों अपने सिर बढ़ा कर योगिता के चूतड़ चाटने लगे। योगिता फिर जोर से चिल्लायी जब उसे अपनी गाँड पर उनकी जीभें महसूस हुई और उसे लगने लगा कि कुछ ही पलों में उनके दाँत उसके चूतड़ों में गड़ने वाले हैं। तभी सुल्तान उसके ऊपर कूदा।

सुल्तान ने उछल कर अपनी अगली टाँगें योगिता के कुल्हों के इर्द–गिर्द लपेट दीं। योगिता पहले ही नशे और हाई–हील की सैंडल के कारण लड़खड़ा रही थी और कुत्ते के वजन की वजह से वो सुल्तान को अपने साथ घसीटती हुई दो कदम और बढ़ी और फिर लुढ़क कर ज़मीन पर गिर पड़ी।

सुल्तान ने योगिता को कस कर जकड़ लिया। योगिता ये सोच कर बिल्कुल सहम गयी कि उस कुत्ते के नुकीले दाँत उसके मुलायम शरीर को फाड़ डालेंगे। योगिता को लगा कि जल्दी ही दोनों वहशी कुत्ते उसे चीर डालेंगे। योगिता खुद को उस जिद्दी कुत्ते से दूर घसीटने की कोशिश करने लगी। संयोग से वो अपने घुटनों और हाथों के बल झुकी थी – कुत्तों के चोदने की मुद्रा।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

"ओह, नहीं!" वो सुबकने लगी।

योगिता घसिटती हुई दूर होने लगी तो सुल्तान ने अपनी जकड़ बनाये रखी और अपने अगले पंजों से पीछे खींचने लगा। इससे योगिता की गाँड ऊपर उठ गयी और उसका सिर ज़मीन पर कार्पेट पे झुक गया। ये सोच कर कि अब वो मारी जाने वाली है, योगिता हताश होकर सुबकने लगी। वो सिर्फ बत्तीस साल की थी और ये उम्र मरने के लिए बहुत छोटी थी। अभी तो बहुत सारी चीज़ें थीं जिनका उसे अपने जीवन में अनुभव नहीं हुआ था – जैसे की गधे के लंड को सहलाना – और अब ये जंगली कुत्ते उसे नोच कर खाने वाले थे।

परंतु उस कुत्ते ने उसे काटा नहीं।

योगिता का डर कुछ कम हुआ। हैरानी से उसकी भोंहें चढ़ गयीं। क्या वो कुत्ता सिर्फ स्नेह दिखा रहा था?

फिर सुल्तान अपने कुल्हे आगे पीछे हिलाने लगा।

"मादरचोद!" योगिता ने सोचा, *"ये चोदू कुत्ते खाने के नहीं बल्कि चुदाई के भूखे हैं!"*

योगिता राहत से खिलखिलायी। सुल्तान उसके चूतड़ों से चिपका हुआ अपने कुल्हे आगे पीछे हिला रहा था। अपनी लालसा में वो योगिता की चूत से चूक रहा था। उसका सख्त लंड योगिता के चूतड़ से टकरा कर पीछे होता और उसकी जँघों के पीछे सरक जाता।

योगिता को विश्वास हो गया कि वो किसी प्रकार के खतरे में नहीं थी। वो कुत्ते उसे मारने वाले नहीं थे और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसके पीछे वाला कुत्ता उसका बलात्कार भी नहीं कर पा रहा था। उसका बड़ा लंड जोश में आगे पीछे कूट रहा था पर उसे सही कोण नहीं मिल रहा था। योगिता ने स्वयं से तर्क किया कि उसे सिर्फ थोड़ा इंतज़ार करना पड़ेगा जब तक कुत्ते की उत्तेजना कम नहीं हो जाती।

या फिर वो स्वयं ही उसे अपनी चूत में लंड घुसेड़ने में मदद कर दे!

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

योगिता ने ये सोचते हुए लंबी साँस ली। उसकी पलकें झपकीं और उसके होंठ थरथराये। कुत्ते से चुदने का ख्याल काफी विकृत था, ये योगिता जानती थी – पर फिर भी ये ख्याल था बहूत चोदू। योगिता को महसूस हो रहा था कि उसके चूतड़ों पे टकराता लंड कितना बड़ा और सख्त था – और वो कल्पना करने लगी कि वो विशाल लंड–माँस उसकी चूत को चोदता हुआ कैसा महसूस होगा।

एक चोदू जानवर को उसके टट्टे खाली करने में मदद करके उससे बचने का यह तर्कसंगत तरीका प्रतीत हो रहा था।

दूसरा कुत्ता भी उनके आसपास उछलता हुआ उत्तेजना से भौंक रहा था। योगिता ने देखा कि उस कुत्ते की टाँगों के बीच में उसका अत्यंत बड़ा लंड ऐसे झूल रहा था जैसे कि समुद्री जहाज का मस्तूल। अगर वो एक कुत्ते को चोदने देती है तो, योगिता ने सोचा कि उसे दूसरे कुत्ते को भी चोदने देना पड़ेगा। सिर्फ एक को ही चोदने का मौक देना तो दुसरे के लिये उचित नहीं होगा।

"वैसे भी दो बार चुदने में तो अधिक आनन्द आयेगा!" नशे में चूर चुदक्कड़ औरत ने सोचा।

योगिता ने अपना हाथ अपने घुटनों के बिच में से पीछे ले जाकर सुल्तान के चिपचिपे लंड को अपनी मुट्ठी में ले लिया। वो विशाल लंड योगिता की पकड़ में धड़कने लगा। अब योगिता को समझ आया कि उसके चूतड़ों पर वो लंड इतना सख्त क्यों महसूस हो रहा था। असल में उसके लंड में हड्डी सी थी जिसके कारण वो इतना सख्त और कड़क था। योगिता ने लंड को अपनी मुट्ठी में सहलाया और सुल्तान ने आगे–पीछे हिलना बंद कर दिया। वो समझ गया कि इस चुदक्कड़ औरत का हाथ सहायता के लिये हाज़िर है और वो अपना लंड सही स्थान पर टिकाने के लिए योगिता का इंतज़ार करने लगा।

योगिता ने फिर से अपनी मुट्ठी लंड पर आगे–पीछे चला कर उसे सहलाया। वो सोच रही थी कि क्यों ना ऐसे ही अपनी मुट्ठी से उस कुत्ते के लंड को झड़ा दे और फिर वैसे ही दूसरे कुत्ते को भी मुठ मार कर झड़ा दे। कुत्तों को मुठ मार कर झड़ाना, उनको चोदने जितना विकृत नहीं होगा, योगिता ने सोचा।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

परंतु इसमें चोदने जैसा मज़ा भी तो नहीं आयेगा।

सुल्तान के लंड को जड़ से पकड़ कर योगिता ने अपनी कलाई तिरछी की और लंड का गर्म और दहकता सुपाड़ा अपनी गर्म चूत पर रगड़ने लगी। जब लंड का धड़कता हुआ गर्म माँस उसकी क्लिट को छुआ तो योगिता थरथरा उठी।

सुल्तान मस्ती से पागल हुआ जा रहा था और योगिता के कुल्हों से चिपका हुआ वो भौंकने और ठिनठिनाने लगा। उसका पूरा हट्टा-कट्टा बदन कांप रहा था। योगिता यह जान कर बहुत रोमाँचित हो रही थी कि उसकी वजह से कुत्ता कितना उत्तेजित हो गया था और उसे चोदने के लिये कितना मतवाला हुआ जा रहा था। और दूसरा कुत्ता भी उतना ही मतवाला और जोश में था और अपना सख्त लंड झुलाता हुआ उनके आसपास ही कूद रहा थ। अपनी चूत के लिये कुत्तों की लालसा देख कर योगिता और अधिक उत्तेजित हुई जा रही थी। जानवरों से चुदाई के संबंध में जो भी शक या शुबहा उसे था, वो उसकी कामुक्ता और उत्तेजना की गर्मी में पिघल कर दूर हो गया।

योगिता ने अपनी कलाई घुमायी और सुल्तान के लंड का सुपाड़ा अपनी मलाईदार चूत में चमचे की तरह घुमा कर अपनी चूत के रस को गर्म शोरबे में परिवर्तित करने लगी। फिर उसने खींच कर कुत्ते के लंड का सुपाड़ा अपनी चूत में घुसा दिया परंतु उसने अपनी पकड़ उसके लंड पर बनाये रखी। योगिता उस मतवाले कुत्ते को जोरदार चुदाई करने के लिए खुला छोड़ने से पहले उसके लंड से आरंभिक कामुक-खिलवाड़ का मज़ा लेना चाहती थी।

लंड का सिर्फ आधा सुपाड़ा चूत के अंदर घुसे होने से सुल्तान पागल हुआ जा रहा था। उसने आगे धक्का दिया पर योगिता की मुट्ठी ने उसे अंदर घुसने से रोक दिया। वो गुर्राया और अपने ताकतवर जबड़े चटकाने लगा। उसकी काली आँखें गोल-गोल घूम रही थीं और वो योगिता की झुकी हुई पतली कमर पर अपने जबड़ों से बहुत अधिक मात्रा में राल बहा रहा था। उसके पिछले पैरों के पंजे कार्पेट में गड़े हुए थे। उसके पुष्ट बदन में प्रत्येक रग चटक रही थी और उसके बदन की सब माँसपेशियाँ तनाव से खिंच रही थीं।

कुत्ते के वजन के तले अपने चूतड़ हिलाती हुई योगिता उत्तेजना और विकृत आनन्द के पूर्वानुमान से कलकलाने लगी। कुत्ते के लंड का सुपाड़ा उसकी खुली चूत मे चौड़ा फैलने

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

लगा और उसकी चूत के बाहरी अधर उसे गिरफ़्त में लेकर उस गर्म और लाल लंड को खींचते हुए अंदर चूसने लगे।

सुल्तान के लंड का मूत–छिद्र लहरा कर खुला और योगिता सिसकने लगी जब उसे अपनी मलीदार गुफा में कुत्ते के अग्रिम–वीर्य का गरम स्राव चूता हुआ महसूस हुआ। कुत्ते का लंड योगिता की मुट्ठी में भिनभिना और ठनठना रहा था और लंड का सुपाड़ा चूत में ज़बरदस्त कुटाई कर रहा थ। लंड में से और अधिक मात्रा में चिपचिपा द्रव्य रिसने लगा। योगिता को इस आरंभिक काम–क्रिया में बहुत मज़ा आ रहा था पर कुत्ते के लंड से चिपचिपा रस इतना सारा निकल रहा था कि उसे डर लगने लगा कि कहीं वो चोदू कुत्ता समय से पूर्व ही ना झड़ जाये – कहीं वो अपना लंड उसकी चूत में पूरा अंदर ठेलने से पहले ही अपना वीर्य उसकी चूत में ना दाग दे।

योगिता ने बाकी का फुला हुआ सुपाड़ा अपनी चूत में खींचा। उसकी गीली चूत की तहों ने उसे घेर लिया और चूत के गुलाबी होंठ उस मोटे लंड के इर्द–गिर्द जकड़ गये। योगिता जानती थी कि सुपाड़ चूत में धंसने के बाद अब कुत्ते को उसके हाथ की सहायता की जरूरत नहीं पड़ेगी। अपने हाथ के बंधन से लंड को आज़ाद करके वो अपने हाथ को उसके लंड पर सरकाती हुई पीछे ले गयी और उसके फूले हुए टट्टों को सहलाने लगी।

योगिता ने प्यार से टट्टों को अपनी अँगुलियों से मसला जैसे कि कुत्ते के टट्टों में उफनता वीर्य महसूस कर रही हो। फिर उसने अपना हाथ वहाँ से दूर खींच लिया। अपनी गाँड और ऊँची उचका कर और सिर नीचे झुका कर योगिता उस ताकतवर कुत्ते द्वारा जोरदार चुदाई शुरू होने की प्रतीक्षा करने लगी। एक क्षण के लिए सुल्तान स्थिर रहा। सिर्फ उसका सुपाड़ा योगिता की चूत में था और उसके लंड में से बह कर और अधिक वीर्य–स्राव योगिता की चूत में बुदबुदाने लगा।

योगिता का जवान मादक बदन स्प्रिंग की तरह लिपट गया – उसने अपनी गाँड और चूतड़ ऊपर उठाये और अपना पेट और चूचियाँ पीछे धकेलीं तो उसकी पीठ और मुड़ गयी और उसका बदन सिकुड़ गया। योगिता ने फिर एक झटका दिया और उसकी चूत में कुत्ते का डेढ़–दो इंच लंड घुस गया। जब उसके लंड पर योगिता की चूत खिसकी तो सुल्तान जोर से गुर्राया। उसके पुट्ठे अकड़ गये और उसने जोर से एक वहशियाना धक्का दिया और अपना कड़कड़ाता पूरा लंड योगिता की चूत में गाड़ दिया।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

"ओहहहहहह... आआआआहहह!" योगिता चींखी जब उसे अपनी चूत में पहली बार किसी जानवर का लंड भरा हुआ महसूस हुआ। सुल्तान ने पूरी बेफिक्री से धुँआधार अपना लंड योगिता की चूत में चोदना शुरू कर दिया। उसका पूरा लंड टट्टों तक चूत में धँसता और फिर झटक कर इतना बाहर निकल आता कि सिर्फ सुपाड़ा ही अंदर रहता और फिर जोर से अंदर धँस जाता। सुल्तान का लंड योगिता की चूत की लचीली दीवारों को फैलाता हुआ उसकी दहकती चूत की गहराइयों में धक्के मारता हुआ चोद रहा था।

योगिता की चूत उस लंड के चारों ओर जैसे साँचे में ढल गयी थी और लंड के फिसलते हुए प्रत्येक हिस्से पर जकड़ कर चिपकी हुई थी। चूत की दीवारों ने चोदू लंड को पूरी शक्ति से चूसना शुरू कर दिया। योगिता के नशे ने उसमें नयी उत्तेजना और ऊर्जा भर दी थी और वो उस चोदू कुत्ते की शक्ति की बराबरी कर रही थी। सुल्तान का लंड जब उसकी चूत में अंदर धँसता तो योगिता उतनी ही ताकत से अपने चूतड़ पीछे ठेल देती और जब सुल्तान अपना लंड बहर खींचता तो योगिता अपने कुल्हे दांय–बांय घुमाती। सुल्तान प्रचंडता से अपना लंड योगिता की चूत में ठेल रहा था और उसके फूले हुए टट्टे चूत के बाहर चपेतें मार रहे थे।

कुत्ते का लंड काफी बड़ा था और हर धक्के के साथ वो और अधिक फूल रहा था। योगिता को लंड का सुपाड़ा अपनी चूत की बहुत गहरयी में धड़कता हुआ महसूस हो रहा था। सुल्तान का लंड उसकी चूत को कगार तक भर रहा था। जब भी वो झटक कर अपना सख्त लंड बाहर खींचता तो चूत के होंठ घिसट कर लगभग पल्ट से जाते। अंदर–बाहर ठिलते हुए लंड की छड़ का प्रत्येक हिस्सा योगिता की क्लिट पर रगड़ रहा था।

किसी भी क्षण, योगिता उस कुत्ते से गरमागरम वीर्य अपनी चूत में दागने की आशा कर रही थी। वो भी उस चिपचिपे गाढ़े रस की खुराक के लिए उत्सुक थी, पर फिर भी वासना से भरी कामुक औरत को इस चुदाई में इतना मज़ा आ रहा था कि वो इसका अंत नहीं चाहती थी। योगिता चाहती थी कि कुत्ते के झड़ने के पहले उसकी चूत की चटनी बन जाये।

सुल्तान पूरी गरजना से चोद रह था। चूँकि उसके टट्टे सुबह ही रश्मि के चूत में खाली हुए थे, इसलिए वो इस समय दृढ़ता से चुदाई कर रहा था। हर पल उसका लंड पहले से ज्यादा फूल रहा था और उसके टट्टे भी वैसे ही फुल रहे थे। कुत्ते के लंड के खुले हुए

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

मूत–छिद्र से अग्रिम वीर्य–स्राव लगातार चूत में टपक रहा था परंतु सुल्तान अभी झड़ने के लिये तैयार नहीं था। योगिता को इस बात का एहसास नहीं था और उसे सुल्तान के शीघ्र ही झड़ने का अनुमान था, इसलिए उसने अपनी नज़रें दूसरे कुत्ते की तरफ घुमायीं और सुल्तान के झड़ने के पहले से ही मस्ती से शेरू के लंड और वीर्य की कल्पना करने लगी। योगिता का चेहरा दमक रहा था जब उसने उपेक्षित कुत्ते की तरफ देखा और पाया कि वो कितना तड़प रहा था।

शेरू झुक कर योगिता के सामने बैठ गया। उसका शक्तिशाली विशाल लंड सीधा खड़ा था और उसके लंड का सुपाड़ा उसके वीर्य–स्राव के झाग से लिसड़ा हुआ था। वो गाढ़ा द्रव्य लंड के सुपाड़े के लाल माँस पर पारे की तरह बह रहा था। वीर्य–रस की पतली–पतली धारायें लंड से नीचे की तरफ बह रही थीं और चाँदी की तरह झिलमिलाती एक डोरी–सी उसके मूत–छिद्र से कार्पेट तक लटकी हुई थी।

योगिता ये देख कर ठिनठिनाने लगी। वो शेरू के प्रबल लंड की लिप्सा करने लगी जबकि सुल्तान उतने ही शक्तिमान लंड से उसकी चूत की लगातार धुनायी कर रहा था।

योगिता को चिंत होने लगी थी कि दूसर कुत्ता, बेचरा जो इतनी देर से उपेक्षित था, कहीं ऐसे ही झड़ ना जाये और उसका गर्म और गाढ़ा वीर्य व्यर्थ हो जाये। योगिता हाथ बढ़ा कर उसके लंड और टट्टों को सहलाना चाह रही थी लेकिन उसे डर था थी कि कहीं गल्ती से कुत्ता झड़ ना जाये।

तभी सुल्तान ने पीछे से योगिता की चूत में जोर के झटके से एक करारा धक्का लगाया जिससे वो आगे की तरफ, शेरू के नज़दीक खिसक गयी। शेरू ने सिर उठा कर देखा। उसकी जीभ बाहर लटकी हुई थी। वो कुत्ता रश्मि द्वारा भली भांति प्रशिक्षित था और औरतों के मीठे भेद समझता था। योगिता का सुंदर चेहरा कर्पेट पर नीचे शेरू के पेट के स्तर तक झुका हुआ था। शेरू रिरियाता हुआ खड़ा हो गया और उसने अपनी अगली टाँगें योगिता की गर्दन में डाल दीं और योगिता के सिर पर इस तरह सवार हो गया जैसे सुल्तान योगिता के चूतड़ों पर सवार था। शेरू ने अपना लंड योगिता के चेहरे पर धकेल दिया।

योगिता ने चौंक कर अपना सिर घुमाया और कुत्ते का पत्थर की तरह सख्त लंड उसके

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

गाल पर छूने लग और कुत्ते के वीर्य की चिपचिपी धार उसके गाल पर बहने लगी। *"मादरचोद – ये चौदू कुत्ता तो लंड चुसवाना चाहता है"*, योगिता को एहसास हुआ तो इस ख्याल से वो दहल गयी।

कुत्ते के लंड को चूसने का ख्याल योगिता को कुत्ते से चुदवाने से भी ज्यादा विकृत लगा – पर उतना ही अधिक रोमाँचक भी। अपने दोनों छोरों में कुत्तों के लंड लेने की कल्पना से उस अति–कमुक और अय्याश औरत की हवस और बढ़ गयी और वो उस कुत्ते का लंड अपने मुँह में लेने के लिये अधीर हो गयी। योगिता का सिर अभी भी एक तरफ घूमा हुआ था और शेरू उत्तेजना से आगे–पीछे धक्के मारता हुआ उसके मुँह में अपना लंड डालने को छटपटा रहा था। वो कुण्ठा से भौंकने और रिरियाने लगा। कुत्ते की व्यग्रता और जोश असरदार था। योगिता की पलकें फड़फड़ायीं और उसके थरथरते होंठों में से उसकी जीभ बाहर फिसल आयी।

शेरू थोड़ा सा पीछे हटा और उसके लंड का अग्रीम–स्राव से चूता हुआ सुपाड़ा योगिता के मुँह पर फिसलने लगा और वीर्य उसके होठों पर बुदबुदाते हुए झाग बनाने लगा। योगिता ने अपनी जीभ फिरा कर वो चिपचिपा द्रव्य चाटा तो आवेश में उसके मुँह से सिसकरी निकल गयी। कुत्ते ने फिर से आगे की ओर धक्का लगाया तो उसके मोटे और वीर्य से लबालब भरे टट्टे योगिता की ठुड्डी से टकराये। योगिता ने अभी तक अपना मुँह नहीं खोला था। वो पूरी तरह निश्चय नहीं कर पायी थी कि वो कुत्ते का लंड चूसे या नहीं। कुत्ते के लंड का सुपाड़ा योगिता के बंद होठों पर टक्कर मर रहा था जिससे योगिता का सिर पीछे झुका हुआ था।

योगिता ने अपनी मुट्ठी उसके लंड पर लपेट दी और अपने मुँह के सामने पकड़ कर उसकी चिकनी निचली सतह चूमने लगी। योगिता ने अपनी नाक उस चिकने लंड पर रगड़ी और कुत्ते की तीखी पर मीठी सुगंध लेने लगी। उसने लंड को ऊपर–नीचे सहलाया तो सुपाड़ा जोर–जोर से धड़कने लगा और योगिता के बंद होंठों पर और अधिक वीर्य–स्राव छलक गया।

उसके पीछे, सुल्तान ने एक वहशियाना धक्का मार कर जोर से अपना लंड योगिता की चूत में ठेला और योगिता जोर से चिल्लायी। वो स्वयं भी इस समय किसी जानवर की तरह ही स्वच्छंद वासना और कामुक्ता से चूर थी। वो जानती थी कि शायद सब कुछ ठंडा होने पर

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

उसे पछतावा हो पर इस समय तो वो विकृत वासना की जकड़ में असहाय थी। सुल्तान ने फिर उसकी चूत में जोर से धक्का लगाया और योगिता का चेहर शेरू के लंड और टट्टों पर दब गया। योगिता ने सिसकरी भरी और उसकी जीभ फिर बाहर फिसल आयी। उसने शेरू के लंड के सुपाड़े की भीगी हुई निचली सतह चाटनी सूरू कर दी।

उसकी स्वाद-ग्रंथियों पर कुत्ते के लंड का कड़ा स्वाद पड़ा तो योगिता आनंद से चिल्ला उठी। कुत्ते का लंड इतना चोदू स्वादिष्ट था कि उसकी आँखों में पानी आ गया।

उसकी गाँड और चूतड़ आगे पीछे झटकने लगे और वो गर्म और चुदास औरत उल्लासित होकर चुदवाने लगी। वो इतनी उत्साहित और मतवाली थी कि वास्तव में वो सुल्तान से भी ज्यादा तेज चुदाई कर रही थी और उसके लंड पर पिस्टन की तरह अपनी चूत ऊपर-नीचे चला रही थी।

योगिता की जीभ शेरू के रसीले लंड पर हर जगह फिसल रही थी। कुत्ते के लंड से चिपचिपा पदार्थ बुदबुदा कर निकलता और योगिता झट से उसे चाट लेती और उसके थूक का झाग भी कुत्ते के लंड पर इकट्ठा हो रहा था। कुत्ते के लंड का अग्रिम स्राव नशे और वासना से चूर उस औरत की भूख बढ़ा रहा था और वो कुत्ते के टट्टों में उबलते हुए संपूर्ण वीर्य-रस को पीने के लिये तड़पने लगी थी। कुत्ते का वीर्य आदमी के वीर्य से अधिक गर्म और तीखा था और योगिता उस लंड को चूसती हुई उत्तेजना के शीर्ष पर झूल रही थी।

योगिता ने अपनी जीभ की नोक कुत्ते के लंड के फैले हुए मूत-छिद्र में घुसा दी और लंड के सुपाड़े को चूसती हुई वो उस छिद्र को जीभ से चोदने लगी। फिर उसने धीरे से अपने होंठ खोले और कुत्ते के लंड का स्वादिष्ट सुपाड़ा अपने मुँह के अंदर ले लिया। उसके होंठों ने चिकने लंड के चारों और से ढक लिया और वो लालसा से लंड को मुँह में भर कर चूसने लगी।

"ऊँऊँऊँमममममम", वो निहाल हो कर गोंगियाई।

कुत्ते के लंड को चूसते हुए योगिता के गाल अंदर पिचक गये और उसके होंठ लंड के चारों ओर बाहर की तरफ मुड़ गये। उसकी जीभ लंड की निचली सतह पर फिसलने लगी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

www.asstr.org/~reena_kanwar
groups.yahoo.com/group/reena_kanwar2002

कुत्ते का वीर्य अब योगिता की जीभ पर बाढ़ की तरह लगातर बह रहा था। हालांकि कुत्ता अभी झड़ा नहीं था परंतु उसका आरंभिक रिसाव भी किसी आम आदमी के संपूर्ण स्खलन से अधिक प्रचुर था। योगिता मस्त हो कर उसे निगल रही थी।

शेरू ने आगे–पीछे धक्के मारते हुए योगिता के मुँह में अपना लंड इस तरह चोदना शुरू कर दिया जैसे कि वो योगिता की चूत हो। उसका मुँह कुत्ते को चूत की तरह महसूस हो रहा था – और योगिता को भी। उसकी जीभ उसकी क्लिट की तरह ही गर्म थी और वो इतनी अधिक मात्रा में राल टपका रही थी जितनी कि उसकी चूत अपना मलाईदार रस छोड़ रही थी। शेरू ने धक्का मार कर योगिता का सिर पीछे झुकाते हुए अपने लंड का सुपाड़ा योगिता के हलक में ठाँस दिया।

"ऊँममघघ" कुत्ते का लंड गले में अटकने से योगिता की साँस घुटने लगी। फिर जब कुत्ते ने अपना लंड बाहर खींचा तो योगिता ने बिल्ली जैसे घुरघुराते हुए लंड के आरपर हर बहुमूल्य हिस्से को चूसा।

उस कामुक औरत के दोनों छोरों पर सवार, योगिता को आपस में बाँटते हुए, शेरू और सुल्तान योगिता के पीठ के ऊपर से एक दूसरे को ताक रहे थे। उनकी जीभें बाहर लटकी हुई थीं और आँखें चमक रही थीं। भली भांति प्रशिक्षित कुत्तों की तरह दोनों योगिता को एक ताल और लय में चोद रहे थे। सूल्तान योगिता की चूत में धक्का मार कर चोदता और योगिता का सिर शेरू के लंड पर और आगे ढकेल देता। फिर शेरू उसके मुँह में अपना लंड ठेल कर उसकी चूत को वापस सूल्तान के लंड पर पीछे ढकेल देता। योगिता एक हड्डी की तरह उनके बीच में प्रतीत हो रही थी जिसके लिये दोनों कुत्ते लड़ रहे हों।

योगिता निश्चय नहीं कर पा रही थी कि ये दोहरी चुदाई किस छोर से उसे अधिक आनन्द दे रही थी। उसकी चूत थी कि मुँह की तरह सुल्तान का लंड चूस रही थी और उसका मुँह चूत की तरह चुद रहा था और वो चूदास औरत सातवें आसमन पर थी।

शेरू ने अपना संपूर्ण विशाल लंड उसके मुँह में गाढ़ दिया और उसके टट्टे योगिता की ठुड्डी के नीचे टकराने लगे। फिर सुल्तान ने भी उसकी चूत पूरी तरह अपने लहराते हुए लंड से भर दी। वो उन दोनों लौड़ों द्वारा इस तरह आरपार छिदी हुई प्रतीत हो रही थी जैसे सिलाई से छिदा हुआ सुअर आग के ऊपर भुना जा रहा हो। योगिता को सुल्तान का

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

लंड अपनी चूत में बिल्कुल अंदर तक धड़कता महसूस हुआ और फिर उसे शेरू का लंड अपने गले में टकराता महसूस हुआ। उसे संदेह हुआ कि क्या दोनों कुत्तों के लौड़ों के सुपाड़े उसके बदन के बीच में कहीं आपस में टकरा रहे हैं।

योगिता की चूत से मलाईदार रस बह रहा थ और मुँह से थूक की राल बह रही थी। असीम मादक सुख की तूफानी लहरें उसकी टाँगों से उठ कर उसकी चूत और पेट तक बह रही थीं और उसकी जीभ सनसना रही थी।

जब शेरू ने अपना लंड योगिता के गले तक ठाँस कर उसके पेट में अपने वीर्य की धारायें छोड़ी तो योगिता गोंगियाने लगी। योगिता के होंठ शेरू के लंड की बालों से ढकी जड़ पर लिपट गये और उसकी चूत के अधर भी सुल्तान के लंड की जड़ पर फैल गये।

दोनों कुत्ते आनन्द भरे शिखर की तरफ बढ़ते हुए भौंकने और गुर्राने लगे। योगिता की चूत पहले से ही अपनी मलाई छोड़ रही थी और उसकी चूत जब पटाखों की लढ़ी की तरह फूटने लगी तो योगिता कराहती और चिल्लाती हुई कुत्तों के झड़ने की प्रतीक्षा करने लगी। अपने मुँह और चूत में कुत्तों के वीर्य की पिचकारी छूटने के लिए योगिता तड़प रही थी।

झड़ने की कगार पर पहुँचते हुए सुल्तान इतनी तेजी और ताकत से अपना लंड योगिता की चूत में चोद रहा था कि उसकी पिछली टाँगें धुंधली दिखायी दे रही थीं। योगिता को उसका लंड अपनी चूत में बहुत अधिक फूलता हुआ महसूस हो रहा था और उसकी चूत की दीवारें भी उस धड़कते हुए लंड के चारों और फैल रही थीं। वो शेरू के सुहावने लंड को लोलुप्ता से चूस रही थी और उत्तेजना में गले तक भर कर निगलते हुए कलकल की आवाज़ निकाल रही थी। एक चुदक्कड़ औरत के लिये ये कितनी आनन्दप्रद स्थिति थी।

योगिता बार–बार तीव्रता से झड़ रही थी और दोनों कुत्ते भी झड़ने के कगार पर थे।

घुड़कते और गुर्राते हुए दोनों कुत्ते पूरे जोश में अपने लंड योगिता की चूत और मुँह में चोद रहे थे। योगिता को सुल्तान का पूरा लंड बहुत जोर से अपनी चूत में घुसता महसूस हुआ तो वो सिसकी पर मुँह में शेरू का लंड भरे होने के कारण उसकी सिसकरी की आवाज़ दब गयी। फिर शेरू ने भी आगे धक्का दिया और योगिता का मुँह अपने लंड से इतना भर दिया कि उसके दोनों गाल एक साथ बाहर की ओर फूल गये।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

योगिता ने भी अपनी चूत सुल्तान के लंड पर जड़ तक पीछे ढकेल दी और शेरू के लंड को इतनी जोर से चूसने लगी कि वो उसके लंड को अपने फेफड़ों में खींचती हुई प्रतीत हो रही थी। तभी योगिता को अपनी चूत में सुल्तान के लंड की गाँठ और अधिक फूलती हुई महसूस हुई। एक बार तो उसने अपनी चूत को भींच कर वो गाँठ चूत से बाहर ढकेलने की नाकाम कोशिश की। फिर उसे एहसास हुआ कि वास्तव में उसे गाँठ के चूत में फूलने से मज़ा आने लगा था। चूत में कुत्ते के लंड की गाँठ का स्पंदन उसे आनंद प्रदान कर रहा था।

सुल्तान के लंड से वीर्य का एक ढेर, रॉकेट की तरह निकल कर योगिता की पिघलती हुई चूत में फट पड़ा। योगिता कराही और दूसरे ही पल शेरू के लंड से गरमागरम वीर्य भभक कर उसके मुँह में भर गया।

वो कुत्ते योगिता के दोनों छोरों में अपना वीर्य भर रहे थे। सुल्तान ने अपना लंड जड़ तक उसकी चूत में ठाँस दिया और उसके लंड की जड़ फुल कर एक डाट की तरह चूत में फँस गयी। योगिता की चूत उसके वीर्य से लबालब भरने लगी। शेरू भी उसके मुँह में इतनी प्रचुर मात्रा में वीर्य बहा रह था कि, हालाँकि योगिता बड़े-बड़े घूँट पी कर निगल रही थी पर फिर भी बहुत सारा बहुमूल्य पदार्थ उसके होंठों से बाहर निकल कर उसकी ठुड्डी के दोनों किनारों से नीचे बह रहा था। वो जोर-जोर से कुत्ते का लंड चूसते हुए उसका वीर्य निगल रही थी। कुत्तों का इतना सारा वीर्य उसकी चूत में झटपट ऊपर दौड़ रहा था और हलक के नीचे बह रहा था कि उसे लगने लगा कि उसका पेट गुब्बारे की तरह फूलने लगेगा। वीर्य के ढेर के ढेर उसकी चूत में फूट रहे थे और दूसरे सिरे पर उसके मुँह में भर-भर कर वीर्य बह रहा था। दोनों कुत्ते कराहते हुए डगमगाने लगे और जैसे-जैसे उनके टट्टे खाली होने लगे उनके धक्के भी अस्थिर हो गये।

अतृप्य और चुदक्कड़ योगिता दोनों कुत्तों के बीच में अभी भी हिल रही थी और अपनी चूत सुल्तान के लंड पर चोदती हुई, वीर्य से रिसते शेरू के लंड को चूस रही थी। कुत्तों ने हिलना बंद कर दिया था और हाँफते हुए, उसके चूतड़ और कंधे के सहारे उससे चिपके हुए थे। योगिता उन दोनों के बीच झटकती हुई उनके झड़े हुए लौड़ों पर अपनी चूत के अंतिम तरंग महसूस कर रही थी।

उसकी चूत की दीवारें सुल्तान के लंड पर ऐंठ कर उसके चिपचिपे वीर्य के आखिरी कतरे

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

खींचने लगी। शेरू के लंड को भी योगिता अपना सिर हिला–हिला कर चूसती हुई उसमें से वीर्य के बहुमूल्य कतरे अपनी जीभ पर निकालने की कोशिश कर रही थी। वो आनन्द से सिसकी जब उसकी क्लिट में एक अंतिम झनझनाहट उठी। फिर उसने हिलना बंद कर दिया।

जैसे ही योगिता अपने चरम कामोन्माद के बाद थोड़ी सी संभली तो उसने सुल्तान को अपने ऊपर से हटाने की कोशिश की, लेकिन कुत्ते के लंड की गाँठ उन दोनों को कस कर एक साथ जकड़े हुए थी। असल में योगिता को वो गाँठ और भी बड़ी होती हुई महसूस हुई। सुल्तान ने अपनी टाँगें योगिता की कमर से हटा लीं और पीछे घूम गया जिससे अब उन दोनों की गाँड एक दूसरे से जुड़ी हुई थी। योगिता को अचंभा हुआ कि सुल्तान अपना लंड उसकी चूत में से बाहर क्यों नहीं निकाल पा रहा था और उसके लंड की गाँठ अभी भी योगिता की चूत में फँसी हुई थी। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि अब वो क्या करेगी। योगिता ने घबरा कर अपनी गाँड को दो–तीन झटके दे कर स्वयं को कुत्ते से आज़ाद करने की कोशिश की पर जब इससे योगिता को बहुत दर्द हुआ तो उसने कुत्ते से अलग होने की कोशिश छोड़ दी।

योगिता को याद आया कि कुत्तिया को चोदने के बाद कुत्तों का लंड कुछ देर तक अंदर फँसा रहता है। योगिता की परेशानी कुछ कम हुई और उसने सोचा कि उसे कुत्ते के लंड की गाँठ के सिकुड़ने का कुछ देर इंतज़ार करना पडेग़ा और वैसे उसे गाँठ के फूलने से मज़ा भी आ रहा था। वो शेरू के लंड को भी मुँह में लिये हुए थी। वो सोच रही थी कि क्या ऐसा हो सकता है कि उसकी चूत और मुँह से बाहर निकलने के पहले ही वो लंड फिर सख्त हो जायें? काफी कामुक ख्याल था और नवीन जोश के संकेत की उम्मीद में उसने अपनी चूत की दीवारों को सुल्तान के लंड पर एक बार भींच दिया।

****
रीना कँवर © 2007
****

रश्मि, उस समय, गधे के चट्टान जैसे सख्त लंड का इलाज कर रही थी।

गधा तिरछा घूम गया था और रश्मि ललचायी नज़रों से उसके विशाल लंड को निहार रही थी। इसमें कोई ताज्जुब नहीं था कि वो जानवर इतना हट्टा–कट्टा था, रश्मि ने सोचा। इतने

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

भारी लंड और टट्टों को हर समय ढोने से शरीर तो बलवान बनेगा ही।

अब वक्त आ गया था उस गधे के बोझ को कम करने का – उसके टट्टों को रिक्त करके उसके लंड के अकड़ाव को कम करने का। रश्मि घुटनों के बल उसके नज़दीक खिसकी। गधा रेंकने लगा और उसके लंड की मांसपेशियाँ फड़कने लगी और वो लंबा लंड ऊपर–नीचे झटकने लगा। जब वो लंड ऊपर की ओर झटकता तो उसका चमकीला काला सुपाड़ा गधे की छाती से टकराता। वो मूसल काला लंड वीर्य से चुपड़ा हुआ था और जब वो गधे की छाती पर टकराया तो लिसलिसे वीर्य के छींटे उड़े। यह देख कर रश्मि ने सिसकरी भरी और वो अपने होंठ चाटने लगी।

रश्मि ने अपना हाथ बढ़ा कर उस उत्तेजित गधे के लंड पर टट्टों से सुपाड़े तक फिराया। लंड की मोटी नस रश्मि के हाथ में धड़कने लगी। रश्मि ने अपनी अँगुलियाँ उसके सुपाड़े के निचके हिस्से पर फिरायीं और उसकी दरार से और अधिक लिसलिसा द्रव्य चू कर सुपाड़े पर से बहता हुआ रश्मि के हाथ में टपकने लगा।

उसने अपना चिकना हाथ वापस खींचा और अपने चेहरे के सामने ला कर उस चिपचिपे वीर्य में अपनी जीभ डुबा दी। रश्मि की आँखें सिकुड़ गयी और उसकी लंबी पलकें फड़फड़ाने लगी। उसने अपने खुले होंठ अपने हाथ पर दबा कर गधे का वीर्य अपने मुँह में अंदर सुड़क लिया। वो पदार्थ इतना गाढ़ा और चिपचिपा था कि रश्मि को लगा जैसे उसके मुँह में कच्ची झींगा मछली हो। फिर वो पदार्थ रश्मि की गरम जीभ पर पिघल गया और वो रिरियाते हुए उसे पी गयी।

गधे ने सिर घुमा कर रश्मि को देखा। उसकी जाँघें थरथराने लगी और उसका लंड आगे निकल कर हवा में लहराते हुए अपने मूत–छिद्र से और वीर्य छलकाने लगा।

हाथ से चाटने के बावजूद गधे का वीर्य बहुत स्वादिष्ट था और रश्मि लालच से कराहने लगी। उसकी लंड चूसने की इच्छा तीव्र हो गयी थी।

रश्मि ने झुक कर अपनी जीभ गधे के लंड के सुपाड़े पर फिरानी शुरू कर दी। उसकी गुलाबी जीभ तरलता से लंड के काले माँस पर फिसलने लगी और उस पर चुपड़ा हुआ चिपचिपा पदार्थ चाटने लगी। गधा उत्तेजना से कांपने लगा। गधा समझ नहीं पा रहा था

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

कि हो क्या रहा है – इस औरत की मुख–मैथुन की रूचि उस बेवकूफ गधे के लिये रहस्य थी – पर उसे बहुत ही निराला आनंद महसूस हो रहा था।

गधे का लंड फिर से लहराने लगा और और उसका सुपाड़ा रश्मि के होंठों पर फिसलने लगा। रश्मि ने उसके लंड की लंबी और चमड़े जैसी छड़ को चाटना शुरू कर दिया और वो अपनी जीभ उस पर लपेट कर फिराती हुई मग्न हो कर चाट रही थी। फिर वो अपनी जीभ सपाट करके गधे के लंड की नीचे की फड़कती हुई मोटी नस पर सरकाती हुई पीछे लंड की जड़ तक ले गयी और फिर कुछ समय उसके फूले हुए टट्टों पर जीभ फिराने में बिताया।

गधे का उपेक्षित लंड फिर कूदने लगा। रश्मि को डर था कि कहीं वो गधा जल्दी ही अपना वीर्य ना छोड़ दे। वीर्य की भूखी वो औरत चाहती थी कि चिपचिपे वीर्य के झरने के फुटने के वक्त, उसका मुँह सही जगह पर हो। रश्मि उसके लंड की छड़ पर अपने होंठ कस कर उसकी बांसुरी बजाती हुई आगे की तरफ चाटने लगी। उस विराट लंड के भारी सुपाड़े पर अपने होंठ आगे खिसकाते हुए रश्मि का मुँह उस लंड के तीखे पर रसभरे स्वाद से सनसना रहा था।

लंड के सुपाड़े के निचले हिस्से पर अपनी जीभ और होंठ सपाट करके रश्मि उसके उस नाज़ुक स्थान को सहलाने लगी जहाँ लंड की छड़ की मोटी नस सुपाड़े के नीचे त्रिकोण में फैलती है। फिर उसने अपना मुँह सुपाड़े के इर्द–गिर्द खोलना शुरू कर दिया।

उस सुनसान वातावरण में रश्मि को घर की तरफ से कुत्तों के गुर्राने और भौंकने की धुंधली सी आवाज़ आ रही थी। रश्मि सोच रही थी कि शेरू और सुल्तान शायद उसे चोदने की प्रतीक्ष में उत्तेजित हो रहे होंगे पर उसे बिल्कुल भी आभास नहीं था कि उसके कुत्ते उसकी सहेली को चोद कर मतवाले हो रहे हैं।

रश्मि ने अपने जबड़े चौड़े फैलाये और एक भयानक क्षण के लिये रश्मि को लगा कि गधे का लंड उसके मुँह में समाने के लिये काफी बड़ा है। वो कुण्ठा से कराही। उसने सोचा कि उसे लंड के सुपाड़े पर अपना मुँह लगा कर रखना पड़ेगा और अपने होठों से लंड को रगड़ कर उसे स्खलित करना पड़ेगा। रश्मि को यह उपाय भी अच्छा लगा पर उसे ज्यादा मज़ा तब आता जब झड़ते समय गधे का चोदता हुआ लंड ठीक उसके मुँह के

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

अंदर हलक तक होता।

परंतु फिर रश्मि के होंठ उस चिकने सुपाड़े के चारों ओर फैल गये और उसका निचला जबड़ा भी फैल कर लगभग उसकी चूचियों तक पहुँच गया और फिर सुड़कता हुआ गधे के लंड का सुपाड़ा रश्मि के मुँह मे लुप्त हो गया।

गधा तो जैसे पागल हो गया। उसका पूरा बदन उत्तेजना और आनंद से उछलने लगा। पहली बार उसे औरत के मुँह से अपना लंड चुसवाने के आनंद का एहसास हुआ था। उसका सुपाड़ा फूल कर रश्मि के कण्ठ में भर गया।

रश्मि उसे अति–लोलुप्ता से चूस रही थी। उसके दोनों मुलायम गाल लंड से पूरी तरह भरे हुए थे और बाहर की तरफ फूले हुए थे। उसके होंठ भी सुपाड़े के ऊपर खिंच कर सुपाड़े को बिल्कुल पीछे जकड़े हुए थे। सुपाड़े का टपकता हुआ अग्रभाग रश्मि के गले में दबा हुआ था पर वो इतना मोटा था कि हलक के नीचे नहीं फिसल सकता था और हलक के द्वार पर फँसा हुआ रश्मि के उदर में वीर्य छलका रहा था। रश्मि के मुँह में उसकी जीभ के लिये कोई स्थान नहीं रह गया था वो चुस्त और चटोरी जीभ सुपाड़े के तले फँसी हुई थी।

रश्मि को साँस लेने में दिक्कत हो रही थी और जब वो अंदर साँस लेती तो सुपाड़े के चारों ओर सीटी सी बज रही थी। रश्मि हाँफ रही थी और गोंगिया रही थी पर उसने लंड चूसना जारी रखा। वो लंड के मस्की स्वाद का आनन्द लेते हुए उसके वीर्य के छूटने की लालसा कर रही थी।

मुख मैथुन के प्रथागत तरीके (ट्रैडिशनल मैनर) के अनुसार उसने अपने सिर को ऊपर–नीचे हिचकोले देने की कोशिश की पर वो उस लंड की मोटी छड़ पर और आगे अपने होंठ नहीं खिसका पायी। लंड के सुपाड़े ने ही उसका मुँह आखिर तक भर दिया था।

रश्मि ने अपने खुले हाथ गधे के लंड पर पर पीछे खिसका कर लंड की नाल को अपने दोनों हाथों में भर लिया। फिर उसके टट्टों को सहलाती और पुचकारती हुई उन्हें प्यार से ऐसे ऊपर–नीचे खींचने लगी जैसे कि गाय का दूध दुह रही हो – पर वो तो इतने गाढ़े और मालईदार दूध की लालसा कर रही थी जितना कभी किसी गाय के थन से ना

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

निकला होगा।

गधे के टट्टों से खेलते हुए रश्मि लगातार उसके लंड के सुपाड़े को चूस रही थी। अपने होंठ, जीभ और गालों को समान स्वर में उपयोग करती हुई रश्मि अपने मुँह में लंड के माँस के स्वाद का मज़ा लेती हुई डेज़र्ट के लिये उत्सुक हो रही थी।

अपने नये अनुभव से सन्न होकर वो गधा अपनी टाँगें फैलाये स्थिर खड़ा था। उस जानवर को एहसास हो गया था कि औरत का मुँह, चूत का अच्छा विकल्प था और यह कि औरत दोनों छोरों से चुदाई योग्य बहुत ही शानदार जीव थी।

वो गधा अपने लंड को ठेलता हुआ रश्मि के मुँह को ऐसे चोदने लगा जैसे वो चूत हो। जब उसने अपना लंड आगे ठेला तो रश्मि का सिर पीछे झुक गया और जब उसने लंड पीछे लिया तो रश्मि ने अपने होंठ लंड पर लपेट कर अपना चेहरा तिरछा मरोड़ लिया।

जब मोटे मूसल जैसे लंड के सुपाड़े ने और वीर्य रश्मि के मुँह में छलकाया तो वो उसके फैले हुए होंठों के किनारों से बाहर बह निकला। रश्मि की जीभ मानो लिसलिसे वीर्य के समुद्र में तैर रही थी। उसने मुँह भर कर वो चिपचिपा वीर्य निगला और उसके मूत-छिद्र से और वीर्य दुहने लगी। वो हाँफते हुए गलल-गलल करती हुई घूँट पी रही थी और वासना में डूब कर गधे के रसभरे लंड की मन ही मन प्रशंसा कर रही थी।

जब वो झड़ने के कगार पर आया तो गधे ने एक झटका लगाया और उसका लंड रश्मि के मुँह में और फैल गया और उसके होंठों को इलास्टिक बैंड की तरह फैला कर और चौड़ा कर दिया। रश्मि उसके टट्टों को खींच रही थी और उसे वो फूलते और हिलकोरे मारते महसूस हुए। गधे के वीर्य के लिये रश्मि इतनी अधीर हो रही थी कि उसने अपने हाथ गधे के टट्टों से हटा कर उसके लंड को फकड़ लिया और चूसने के साथ-साथ अपनी मुट्ठियों से रगड़ कर लंड को उकसाने लगी।

रश्मि जोर-जोर से अपने हाथ लंड की नाल पर चलाने लगी और जब टट्टों में से वीर्य तेजी से बाहर बढ़ने लगा तो रश्मि को लंड में धड़कन महसूस हुई। रश्मि आशा से चींख उठी पर मुँह में भरे लंड के सुपाड़े पर उसकी चींख दब गयी। वो लालसा से लंड को चूसते हुए फिर अपने हाथों में मसलने लगी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

गधे का वीर्य–रस इतनी जोर से रश्मि के मुँह में छुटा कि रश्मि का सिर उसके लंड से पीछे झटक गया। रश्मि को लगा जैसे उस के मुँह में गर्म झरना फूट पड़ा हो। उसने साँस लेते हुए और वीर्य को निगलते हुए अपने होंठ लंड के सुपाड़े पर कस दिये। गधे का वीर्य रश्मि के हलक से नीचे बहते हुए उसके मुँह में भी भरने लगा। रश्मि किसी भूखे भेड़िये की तरह उसके वीर्य को निगल रही थी।

रश्मि उत्तेजना से कराही तो वीर्य से भीगे उसके गले से आवाज बुदबुदाती हुई निकली। गधा मज़े से अपने टट्टे खाली करता हुआ अपना लंड झटक रहा था और रश्मि भी उसे चूसती हुई दोनों हाथों से लंड को रगड़ कर उसमें से वीर्य निचोड़ रही थी। उसने गधे के टट्टों को मुर्झाते हुए देखा। वो सिसकती हुई और जोर से चूसने लगी।

गधा रेंका और उसने अपना लंड रश्मि के मुँह में झटकना बंद कर दिया। उसका सुपाड़ा थोड़ सा सिकुड़ा और अब रश्मि का मुँह पहले जितना नहीं भरा हुआ था। गधे के वीर्य की लालची औरत अब अपना सिर गधे के लंड पर ऊपर–नीचे हुचकाती हुई अपने होंठ आगे खिसका कर लंड की छड़ के दो–तीन इंच अपने मूँह में लेने लगी। उसके हाथ अभी भी गधे के लंड पर आगे पीछे मालिश कर रहे थे।

गधा घुरघुराता हुआ पीछे हटा और झटक कर अपना लिसलिसा लंड रश्मि के मुँह से बाहर खींच लिया। रश्मि के थूक के झाग से सना हुआ लंड ऊपर–नीचे झूलने लगा। रश्मि ने अपनी जीभ निकाल कर गधे के लंड के मूत–छिद्र से वीर्य का आखिरी कतरा चाटा और फिर अपना सिर पीछे झुका कर अपने मुँह में भरे वीर्य रस को अपने हलक में धीरे धीरे बहने देने लगी।

"मादरचोद! – कितना वीर्य था!" वो फुसफुसायी। वो गधे के वीर्य की इतनी अधिक मात्रा से अचंभित थी। रश्मि ने देखा कि गधे का काफी वीर्य उसके होंठों से बह कर उसकी चूचियों और टाँगों पर भी गिरा हुआ था। यहाँ तक कि उसके हाई–हील के सैंडलों में उसके पैरों की अँगुलियाँ भी वीर्य से चिपचिपा रही थीं। रश्मि के ख्याल से गधे के टट्टों में जितना समा सके, उससे कहीं ज्यादा वीर्य, गधे ने उसके मुँह में उड़ेला था। वो टट्टे अब कुछ मुर्झा से गये थे पर गधे का लंड अभी भी आशाजनक स्थिति में खड़ा था।

गधे का लंबा लंड थोड़ा झुक गया था परंतु ये स्पष्ट था कि ज़रा सी कोशिश करने पर वो

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

प्रबल लंड फिर से पूरा तन कर खड़ा हो सकता था। रश्मि ने उसके लंड को निहारा। हालांकि इतने बड़े लंड को वो अपने मुँह में सुपाड़े से अधिक नहीं ले पायी थी पर उसकी चूत तो उसके मुँह से कहीं ज्यादा गहरी थी।

अब जबकि, लंड को मुँह में ले कर चूसने की उसकी वासना शाँत हो गयी थी, उसकी चूत अब गधे के लंड और उसके वीर्य के लिये तरसने लगी थी।

****

रीना कँवर © 2007

****

कुछ देर उसी अवस्था में कुतिया की तरह सुल्तान से चिपके रहने के बाद योगिता ने शेरू का लंड जड़ से पकड़ा और धीरे से अपने होंठ उसके लिसलिसे लंड से दूर खींचे। वो कुत्ता योगिता के कंधों से चिपक कर धीमे से कराहया और फिर फुदक कर नीचे उतर गया। योगिता के मुँह से वीर्य का झाग निकल रहा था।

योगिता ने अपने घुटनों के बीच में से अपना हाथ पीछे ले जाकर सुल्तान के टट्टों को पकड़ कर धीरे से झँझोड़ा। योगिता का विचार था कि वो दोनों अभी भी एक दूसरे से चिपके हुए थे क्योंकि सुल्तान का लंड अभी भी उसकी चूत के अंदर था। पर फिर कुत्ते का लंड धीरे से बाहर फिसलने लगा। उसके लंड की गाँठ कुछ क्षण के लिये योगिता की चूत की पंखुड़ियाँ बाहर खींचे हुए चूत में टिकी रही और फिर 'पॉप' की आवाज़ के साथ बाहर आ गयी और फिर पूरा लंड बाहर फिसल गया।

सुल्तान फिर घूम कर उसके चूत्तड़ों पर चड़ गया। योगिता बहुत खुश हुई कि सुल्तान फिर से उसे चोदने को बेकरार हो रहा था पर वो पहले कुछ पीना चाहती थी। उसका गला शेरू के वीर्य से चिपचिपा रहा था। योगिता ने अपने चूतड़ जोर से झटका कर हिलाये तो सुल्तान ठिनठिनाता हुआ उसके चूतड़ों से नीचे उतर गया।

योगिता डगमगाती हुई खड़ी हुई। कुत्तों के साथ विकृत चुदाई और नशे के कारण उसका सिर चकरा रहा था। उसे एहसास हुआ कि वो ज्यादा चलने की हालत में नहीं थी। वो बेडरूम के बाहर किचन तक इस हालत में गिरते–पड़ते जाना नहीं चाहती थी क्योंकि इससे रश्मि के जाग जाने का खतरा था और वो कुत्तों के साथ चुदाई के दूसरे दौर का

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

मौका खोना नहीं चाहती थी। उसके बेडरूम में ही एक कोने में एक काँच की अलमारी में कुछ शराब की बोतलों के साथ सोडे की बोतलें भी सजी थीं। अपनी हालत पर योगिता खिलखिला कर हंस पड़ी। अपने ऊँची ऐड़ी के सैंडलों में वो लड़खड़ाती हुई वहाँ तक पहुँची और सोडे की एक बोतल खोल कर गटागट पीने लगी।

शराब की बोतलें देख कर उसका मन डोल गया। शराब उसकी कमज़ोरी थी। ऐसा नहीं था कि वो हर रोज़ पीती थी पर जब कभी भी वो शराब पीती थी तो उसे पीने पर नियंत्रण नहीं रहता था। उसने एक व्हिस्की की बोतल खोली और चूँकि वहाँ कोई ग्लास नहीं था, उसने बोतल ही मुँह से लगा कर चार-पाँच बड़े घूँट पीये। फिर बोतल लेकर वैसे ही लड़खड़ाती हुई चमड़े की कुरसी पर आकर बैठ गयी और धीरे-धीरे व्हिस्की की चुसकियाँ लेने लगी।

सुल्तान लपक कर योगिता के पास आ गया और उसने अपना थूथन योगिता की जाँघों के बीच में धँसा दिया और उसकी लंबी जीभ योगिता की चूत के ऊपर झटपट फिरने लगी। वो चपड़-चपड़ की आवाज़ करते हुए उसकी खुली हुई रसभरी चूत को चाटने लगा।

"हाँआँआँआँ!" योगिता गुर्रायी जब उसकी फूली हुई क्लिट पर सुल्तान की जीभ की चपत पड़ने लगी। योगिता की चूत में विकृत वासना की आग फिर से प्रज्वलित हो उठी थी। योगिता की रिसती हुई चूत को सुल्तान लप-लप करके चाट रहा था और उसकी जीभ जल्दी-जल्दी झपट कर योगिता की चूत से बहते रस को चाट रही थी। योगिता अपनी चूत जोर से आगे ठेलने लगी। अपने थूथन पर योगिता की चूत के जोर-जोर से टकराने से परेशान हो कर सुल्तान गुर्राया।

योगिता ने एक हाथ में पकड़ी हुई बोतल से व्हिस्की पीते हुए दूसरा हाथ नीचे ले जाकर अपनी चूत को चौड़ा खोल दिया। कुत्ते की लंबी, गरम जीभ ठीक उसकी चूत के अंदर फिसल गयी और सनसनाहट से योगिता की सिसकरी निकल गयी। सुल्तान ने फिर सुड़क कर अपनी जीभ उसकी चूत से उसकी नाभी तक फिरायी तो योगिता अपनी कमर अकड़ा कर काँपने लगी। कुत्ते की गीली जीभ उसकी गाँड की दरार से शुरू हो कर उसकी खुली चूत में खिसकती और फिर नाभि के ठीक नीचे जाकर झटकते हुए फिसल जाती थी।

योगिता की चूत के अमृत रस के छींटे उसके पेट पर पड़ने लगे। उस अमृत रस की एक

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

धार उसकी जाँघों के भीतरी हिस्से से नीचे बह कर उसकी गाँड की दरार को भिगोने लगी। उसकी उत्प्लावी चूत को चाटते हुए सुल्तान पागल सा हुआ जा रहा था और उसकी चुस्त लंबी जीभ पूरे जोश से योगिता की चूत पर चाबुक की तरह पड़ रही थी।

"ओह! ओह! ओओओओओहहहहह...." योगिता मतवाली हो कर सिसकती हुई झटक–झटक कर कुत्ते के थूथन पर अपनी चूत दबाने लगी।

सुल्तान योगिता की दहकती चूत में रिरियाने लगा। उसकी जीभ योगिता की चूत के अंदर धंस कर फिर बाहर निकलती और फिर चूत के किनारे से फिसल कर उसकी क्लिट को भिगो देती। जैसे–जैसे योगिता की चूत और अधिक गर्म हो कर ज्यादा मलाई उत्पन्न करने लगी, वैसे वैसे सुल्तान की उत्तेजना भी बढ़ने लगी और वो चूत के प्रवाह को मज़े से चाटने लगा।

"हाँ... हाँ... चोद मुझे अपनी जीभ से... साले... आँआँआँ!" योगिता ने कराहते हुए अपनी जाँघें बंद करके उसके सिर के दोनों तरफ कस कर उसे जकड़ लिया और फिर जाँघें फैला कर चौड़ी खोल कर उसे अपनी चूत चाटने की खुली छूट दे दी।

उसने व्हिस्की की बोतल अपनी बगल में टिका दी और उस एक हाथ से अपनी क्लिट और दूसरे हाथ से अपने निप्पल नोचती हुई अपनी टाँगें खोलने बंद करने लगी। अचानक ही उसका बदन ऐंठ कर काँपने लगा और वो एकाएक झड़ गयी। लेकिन उसकी वासना अभी शाँत नहीं हुई थी। कुत्ते की उस निराली जीभ की मौजूदगी में वो बार–बार झड़ना चाहती थी। नशे में उसका सिर चकरा रहा था और आँखें बोझल थी पर उसकी कामुक्ता अपनी चोटी पर थी और चूत की आग बुझने की जगह और दहकती ही जा रही थी।

योगिता ने सुल्तान के सिर पर हाथ फिराया। *"चाट मेरी चूत... और चाट... प्यारे चोदू कुत्ते!"* योगिता घुरघुरायी। सुल्तान ने वैसे भी चाटना बंद नहीं किया था।

पहले से रिस रहे चूत–रस और योगिता के झड़ने के वक्त निकले चूत रस के स्वाद में सुल्तान फर्क कर सकता था और उसे नया रस अधिक स्वादिष्ट लग रहा था। योगिता के झड़ने के वक्त सुल्तान ने उसकी चूत चाटना जारी रखा था और अब वो एक बार फिर योगिता की चूत से वैसा ही रस छुड़ाने के लिये नये जोश में चाट रहा था।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

योगिता ने गर्दन घुमा कर कमरे में चारों तरफ एक नज़र डाली पर उसे कहीं भी शेरू दिखायी नहीं दिया। उसे फिर से शेरू लंड चूस कर स्वाद लेने की कामना हो रही थी और शेरू को कमरे में ना पाकर उसे निराशा हुई। योगिता ने फिर अपनी बगल में झुक कर एक नज़र सुल्तान के लंड पर डाली।

"मादरचोद! यू फकिंग डॉग" योगिता ने गहरी साँस ली जब उसने देखा कि सुल्तान का बड़ा लाल लंड बाहर निकला हुआ फुंफकार रहा था। हालाँकि इस समय उसका लंड करीब छः इंच ही था पर योगिता अब तक जान गयी थी कि यह उसके लंड की असली लंबाई और मोटायी नहीं थी। कुत्ते का लंड वास्तव में चूत के अंदर जा कर फुलता है। चूत के बाहर तो लंड का आकार उसके अंदर की हड्डी का आकार होता है जो कि कुत्ते के उत्तेजित होने पर अपनी झिल्ली से बाहर निकल आती है। योगिता ने देखा कि लंड का छिद्र फैला हुआ था उसमें से वीर्य की कुछ बूँदें रिस कर कार्पेट पर टपक रही थीं। योगिता आँखें फाड़े मंत्र–मुग्ध सी सुल्तान के झटकते लंड को निहार रही थी कि उसे इस बात का एहसास ही नहीं था कि उसके होंठों से राल निकल कर उसकी ठुड्डी से नीचे बह रही थी।

योगिता ने अपना एक पैर बढ़ा कर किनारे से सुल्तान के नीचे खिसका दिया और उसके लंड को अपने सैंडल के तले से सहलाने लगी। फिर उसने पैर घुमा कर सुल्तान के लंड को अपने पैर के ऊपरी हिस्से से छुआ। योगिता की गहरी आँखें वासना और खुशी से फैल गयीं जब उसे एहसास हुआ की कुत्ते का लंड कितना सख्त और गर्म था। योगिता ने अपना दूसरा पैर भी सुल्तान के नीचे खिसका दिया और उसके लंड को अपने दोनों पैर के सैंडलों के तलों के बीच में धीरे से सहलाने लगी। सुल्तान के लंड का पारदर्शी चिपचिपा रस उसके सैंडलों और पैरों पर बहने लगा।

सुल्तान भी योगिता की चूत चाटते हुए आगे पीछे हिल कर योगिता के सैंडलों के बीच में अपना लंड चोदने लगा। एक बार तो योगिता के मन में ख्याल आया कि अपने पैरों और सैंडलों से ज़ोर–ज़ोर से कुत्ते का लंड सहलाते हुए उसे स्खलित कर दे पर फिर उसने सहलाने की गति कम कर दी। शेरू कहीं दिखायी नहीं दे रहा था तो उसे चुदाई के लिये सुल्तान का लंड ही उपलब्ध था। साथ ही योगिता एक बार फिर कामानंद की चोटी की तरफ अग्रसर होने लगी थी। कामानंद की लहरें उसके बदन में उठ रही थीं और उसके कड़क निप्पलों से शुरू हो कर उसकी चूत से होती हुई उसके टाँगों में दौड़ने लगी थीं।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

"चाट ले... चाट ले मेरी चूत... सक इट... ओह गॉड!" वो चिल्लायी। उसकी आवाज़ नशे में डगमगा रही थी।

वो भाप के इंजन की तरह हाँफ रही थी। सुल्तान भी वैसे ही हाँफ रहा था और उसकी गरम साँसें योगिता की चूत के अंदर लहरा रही थीं। योगिता इतनी गरम थी कि उसे लगा कि उसका बदन जलने लगेगा।

चरम कामानंद की तीसरी लहर उसके बदन में दौड़ गयी और फिर चौथी लहर। उसके बाद कामानंद की मीठी लहरें उसके अंदर इतनी तीव्रता से एक के बाद एक उठने लगीं की सब लहरें आपस में मिल कर परमानंद का विस्तृत कंपन बन गयीं। योगिता स्वर्गिक–सुख की चोटी पर थी। योगिता का पूरा बदन काँपने लगा और उसे लगा कि जैसे वो पिघल रही है। उसकी संपूर्ण चेतना, कुत्ते की जीभ पर पिघलती हुई अपनी चूत पर केंद्रित थी।

"चाट ले मेरी चूत की मलाई!" योगिता फिर चींखी।

कुत्ते के जीभ चूत का पूरा रस समेट रही थी। योगिता के चूत–रस को बेसब्री से पीते हुए सुल्तान का कण्ठ धड़क रहा था।

"आआआआआइईईईईई ऊँऊँऊँआआआआआआ..." योगिता आनंद की चोटी पर पहुँच कर जोर से चींखी और उस चरम आनंद की आखिरी लहरें उसके अंदर फूट पड़ीं। उसकी चूत पूर–द्वार (फ्लड–गेट) की तरह खुल गयी और चूत–रस का दरिया कुत्ते की अधीर जीभ और मुँह के अंदर बहने लगा।

योगिता के शरीर की ऐंठन और कंपन कम हो कर फिर बंद हो गयी। उसके होंठों पर आनंदमय मुस्कुराहट आ गयी और उसकी नशे में बोझल आँखें स्वप्नमय हो गयीं। उसने सुल्तान के सिर पर हाथ फिराया। वो कुत्ता अभी भी निष्ठा से उस गर्म चुदक्कड़ औरत की स्वादिष्ट चूत चाट रहा था। योगिता कि इच्छा तो हुई कि उसका चाटना जारी रहने दे क्योंकि वो जानती थी कि कुत्ते के चाटने से वो उसकी चूत कुछ ही पलों में फिर से कामानंद की चोटी पर चढ़ाई शुरू कर देगी। परंतु योगिता को बहुत जोर से पेशाब लगी थी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

उसने अपनी बगल में रखी बोतल उठा कर व्हिस्की के दो–तीन बड़े घूँट पिये और फिर वो बोतल वहीं रख कर बेडरूम से अटैच्ड बाथरूम की तरफ लड़खड़ाती हुई लगभग दौड़ पड़ी। परंतु नशे में होने के कारण वो हाई हील सैंडलों में अपना संतुलन खो बैठी और रास्ते में ही लुढ़क गयी। उसका पेशाब वहीं कार्पेट पर निकलने लगा तो पहले तो उसने रोकने की कोशिश की पर फिर यह सोच कर कि *'जाने दो.. क्या फर्क पड़ता है'*, उसने वहीं मूतना शुरू कर दिया और खिलखिला कर हँसने लगी।

सुल्तान जो पहले से तैयार था, योगिता को घुटनों और हाथों के बल गिरी हुई देख कर लपक कर पीछे से उसके चूतड़ों पर सवार हो गया। सुल्तान भी चुदाई के दूसरे दौर के लिये योगिता जितना ही उत्तेजित था। योगिता के कुल्हों पर अपनी अगली टाँगें कस कर लपेट कर सुल्तान उसके चुतड़ों चिपक कर हाँफने लगा। योगिता को उसका लंड अपनी चूत में घुसता महसूस हुआ।

"ठेल दे मेरी चूत में अंदर तक", योगिता बड़बड़ायी, *"भर दे अपना बड़ा चोदू लंड मेरी... ऊँऊँघघघ.... फक मॉय चूत, कुत्ते साले! भर दे अपने चोदू बड़े कुत्ते–लंड से! ओहहहह, हाँ! चोद डाल मेरी चूत को... मादरचोद... कुत्ते के लंड! फिर एक बार अपने वीर्य से मेरी चूत को निहाल कर दे!"* योगिता अपने चूतड़ और ऊपर उठा कर कुत्ते से अपनी चूत में लंड चोदने के लिये जिद्द करने लगी।

सुल्तान उत्तेजना से भौंका। अब चूंकि उसके लंड का सुपाड़ा चूत में घुस चुका था, सुल्तान के लिये आगे आसान था। उसका शरीर उत्तेजना से कांप रहा था और वो बुरी तरह हाँफते हुए योगिता की कमर पर राल बहाने लगा। फिर उसने अपना पूरा लंड योगिता की दहकती चूत में घुसेड़ना चालू कर दिया।

"ओओहहहह" योगिता ठिनठिनायी, जब उसे अपनी चूत में कुत्ते का लंड धंसता हुआ महसूस हुआ। उसने अपनी गाँड उसके गदा जैसे लंड पर पीछे की तरफ ढकेल दी। सुल्तान ने घरघराहट की आवाज़ के साथ फिर से एक धक्का लगा कर पूरा लंड योगिता की चूत में ठेल दिया। अब उसका लंड जड़ तक योगिता की चूत में गड़ा हुआ था।

योगिता के कुल्हों से चिपक कर रिरियाते हुए सुल्तान ने योगिता की मीठी और चिपचिपी चूत में अपने पूरे लंड की कस कर पैंठ बनायी हुई थी। अपनी चूत में कुत्ते के कड़क

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

लंड के भरे होने के एहसास से योगिता रोमांचित हो रही थी।

अपनी चूत में लंड की पैंठ कायम रखे हुए योगिता अपनी गाँड और चूतड़ हिलाकर अपनी चूत कुत्ते के लंड पर घिसने लगी। उसकी चूत की दीवारें धड़क उठीं और लंड पर जकड़ कर लहराने लगीं। उसके ठोस चूतड़ ऊपर नीचे हिलने लगे। योगिता की गीली चूत गन्ने का रस निकालने की मशीन की तरह कुत्ते के लंड को निचोड़ रही थी।

सुल्तान अभी भी पूरा लंड योगिता की चूत में गाढ़े हुए उन्मत्तता से तेज़ और महीन आवाज़ में कराह रहा था। सुल्तान के सख्त लंड पर अपनी चूत चोदती हुई योगिता ऊपर–नीचे हिलने लगी।

योगिता ने अपनी गाँड उस चोदू कुत्ते को सौंप दी और अपना सिर अपने आगे अपनी बांहों पे झुका कर टिका लिया। सुल्तान जब उसकी चूत की कस कर धुआंधार चुदाई करने लगा तो योगिता भी उत्तेजना और जोश में भर कर हिलने और थरथराने लगी।

योगिता की चूत में अपना मोटा लंड पेलते हुए सुल्तान की पिछली टाँगें योगिता के घुटनों के बीच में उछल रही थीं और वो लगातार योगिता की गोरी चिकनी कमर पर राल बहा रहा था। योगिता कई बार चींखी और चिल्लायी और उसने अपनी चूत उस शानदार लंड पर पीछे ठेल कर चोदी। वासना और कामुक्ता से कराहती और हाँफती हुई योगिता कुत्ते के चोदते हुए लंड पर अपनी चूत गोल–गोल घुमा कर कई बार झड़ी।

कामानंद से भरपूर लहरें योगिता की चूत से होते हुए उसकी जाँघों में दौड़ने लगीं। उस गर्म और चुदक्कड़ औरत की चूत बार–बार मलाई छोड़ते हुए झड़ रही थी। उसकी चूत और क्लिट वासना के ज्वार भाटे की चोटी पर पहुँच कर फूट के शांत हो जाती और फिर अगली चोटी पर चढ़ने लगती। *“झड़ जा... ऊँम्म्म्हहह.... भर दे मुझे... ऊँघघघघ... छोड़ दे अपना गर्म वीर्य मेरी चूत में!”* योगिता वासना के नशे में बड़बड़ाने लगी। चूत भर कर कुत्ते के गर्म वीर्य की चाह में वो अपनी गाँड उचका–उचका कर सुल्तान के लंड पर अपनी चूत चोदने लगी। सुल्तान भी लगातर जोर–जोर से अपना लंड उसकी चूत में पेलते हुए भौंक रहा था। जिस तरह उस कुत्ते का लंड योगिता की चूत चोद रहा था और उस के लंड की गाँठ फूल कर चूत की दीवारों को फैलाने लगी थी, उससे योगिता को आभास हो गया की कुत्ता उसकी चूत में अपने वीर्य की बाढ़ छोड़ने को तैयार है।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

कुत्ते के लंड की गाँठ योगिता की चूत में फूल गयी और योगिता को अपनी चूत में कुत्ते के वीर्य का दरिया बहता हुआ महसूस हुआ। वो फिर एक नये आनंद से चींख पड़ी और उसकी क्लिट में फिर एक बार जोरदार विस्फोट हुआ और उसकी चूत की दीवारें कुत्ते के लंड पर सिकुड़ गयीं। उसकी चूत की दीवारें धड़कती और लहराती हुई कुत्ते के लंड से वीर्य की आखिरी बूँदें दलदली चूत में दुहने लगीं।

जब सुल्तान के धक्के बंद हो गये तो योगिता को एहसास हुआ कि फिर से कुत्ते के लंड के गाँठ अंदर और अधिक फूल कर उसकी चूत को फैला रही थी और वो कुत्तिया की तरह फिर उससे चिपक गयी थी। इस अतिरिक्त उत्तेजना से उसकी चूत फिर एक बार घड़घड़ा कर झड़ गयी। सुल्तान ने अपनी टाँगें योगिता की कमर से हटा कर नीचे ज़मीन पर रखीं तो उसके लंड की फूली हुई गाँठ से योगिता की चूत निर्दयता से खिंच गयी और जब सुल्तान ने घूम कर अपनी टाँगें पीछे घसीटीं तो अचनाक उठे दर्द से योगिता चिल्ला उठी। अब योगिता कुत्तिया की तरह कुत्ते की गाँड से चिपकी हुई थी।

तभी शेरू भौंकता हुआ कमरे में दाखिल हुआ और धीरे से योगिता के पीछे आकर अपना थूथन उसके चूतड़ों में घुसा दिया। योगिता ने जब खोल में से बाहर लटके हुए शेरू के लंड का आकार देखा तो उसकी मदहोश आँखें कामवासना से चमक उठीं। कुछ देर पहले के अनुभव से योगिता जानती थी कि सुल्तान के लंड की गाँठ को धीली पड़ने मे पंद्रह–बीस मिनट लग जायेंगे। इसलिये उसने हाथ बढ़ा कर शेरू को अपने मुँह के पास खींचने की कोशिश की पर शेरू टस–से–मस नहीं हुआ।

शेरू चकरया हुआ था। वो औरत कुत्तिया की तरह चुदाई की मुद्रा में थी पर उसकी चूत भरी हुई थी। योगिता ने फिर एक बार पुचकारते हुए उस आगे खींचा तो वो आगे खिसक आया। योगिता ने अपने होंठ खोल कर उसे अपने सामने आने के लिये फुसलाया पर शेरू इस बार लंड चुसवाने के मूड में नहीं था। वो योगिता के मम्मों और कमर पर जीभ फिराने लगा। फिर उसने उछल कर बगल से अपनी टाँगें योगिता की कमर पर रख दीं और ज़ोर–ज़ोर से आगे पीछे हिल कर साइड से अपने लंड से उसकी कमर पर चोट मारने लगा।

शेरू व्याकुल हो कर जोर–जोर से गुर्राने और भौंकने लगा। वो योगिता की कमर से नीचे उतरा और फिर उसके पीछे जाकर योगिता की चूत और सुल्तान के टट्टों को चाटने लगा और फिर योगिता के चूतड़ों की दरार में चाटते हुए उसने अपनी जीभ उसकी गाँड के छेद

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

पर लगा दी। योगिता ने कलबला कर अपने कुल्हे पीछे की तरफ ढकेल कर अपनी गाँड शेरू के थूथन पर दबा दी।

अचानक शेरू स्वाभाविक्ता से उछल कर योगिता के चूतड़ों पर सवार हो गया और अपनी अगली टाँगें योगिता की कमर पर कस के जकड़ लीं। उसने आगे–पीछे हिलते हुए अपने पीड़ित लंड से योगिता की चूत पर वार किया पर योगिता की चूत तो सुल्तान के लंड से भरी थी। शेरू का चिकना लंड सुल्तान के लंड की जड़ से टकरा कर वापस उछल गया। वो जोर से रिरियाते हुए भौंका और योगिता की भरी चूत से हैरान हो कर पागलों की तरह आगे–पीछे हिलने लगा। हर धक्के के बाद उसका लंड योगिता के चूतड़ों से टकरा कर पलट जाता। योगिता के चूतड़ कुत्ते के लंड के वार से दुखने लगे थे क्योंकि कुत्ते के लंड में ठोस हड्डी होती है जिससे योगिता को चोट लग रही थी।

योगिता की भी चींख निकल गयी और उसने फिर शेरू को अपने ऊपर से हटाने की कोशिश की लेकिन शेरू ने उसकी कमर अपने अगले पैरों से कस कर जकड़ी हुई थी। शेरू ने एक और धक्का लगाया तो इस बार उसका लंबा लंड योगिता के चूतड़ों की दरार में फिसल गया और उसके लंड का सुपाड़ा योगिता की गाँड के छेद पर टेहोक गया।

“ओहहहहहह!” योगिता जोर से सिसकी और उसकी आँखें चौड़ी फैल गयीं। एक नयी संभावना से शेरू अपने लंड का सुपाड़ा योगिता की गाँड के छेद पे ठोकने लगा। *“मादरचोद... साला चोदू कुत्ता... मेरी गाँड में लंड पेलने की कोशिश कर रहा है”*, योगिता नशे में भरी कर्कश आवाज़ में बोली।

योगिता को कुत्ते के लंड की नोक अपनी गाँड में दहकती महसूस हुई तो वो एक क्षण के लिये हिचकिचायी पर फिर उसके होंठों पे वासना भरी कुटिल मुस्कुराहट आ गयी। अपनी चूत और गाँड में एक साथ दो–दो कुत्तों के लंड भरे होने का विचार उस हवस से भरी चुदक्कड़ औरत को कामवासना से पागल बना रहा था। वो पहले भी कई बार अपनी गाँड मरवा चूकी थी और उसे दो–दो आदमियों के लंड एक साथ अपनी चूत और गाँड में लेने का सुखद अनुभव था पर दो कुत्तों से एक साथ वही मज़ा लेने के विचार से वो उत्तेजना से थर–थर काँपने लगी।

उसने अपना हाथ पीछे ले जाकर शेरू का आधा लंड जड़ के पास से अपनी मुट्ठी में ले

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

लिया और उसके दहकते हुए सुपाड़े को अपनी तंग गुफा में ठेलने लगी। कुत्ता रिरियाते हुए अपना लंड योगिता की मुट्ठी में चोदने लगा। उसके लंड ने योगिता की गाँड के छिद्र पर धक्का मारा तो वो छोटा सा छेद फड़फड़ाता और लहराता हुआ फैल गया। वो गाँड–छिद्र पहले से ही कुत्ते के थूक से भीगा हुआ था। और अब कुत्ते के लंड के मूत–छिद्र से चिकने रस की कुछ बूँदें उस छेद में छलक गयीं और गाँड को और चिकना कर दिया। कुत्ते के लंड के नुकीले सुपाड़े की नोक योगिता की गाँड में ज़बरन घुसने लगी। योगिता ने अपनी गाँड उसके लंड की तरफ पीछे ठेल दी। वो भी कुत्ते के लंड से अपनी गाँड भरने के लिये उतनी ही उतावली थी जितना कि वो कुत्ता उसकी तंग गाँड में अपना लंड पेलने के लिये उतावला था।

लेकिन शेरू के लंड का सुपाड़ा गाँड के छोटे से छेद में सिर्फ नुकीला सिरा घुसा कर फँस कर जाम हो गया। योगिता का सुडौल जिस्म थरथरा रहा था। उसने अपनी हथेली पर तीन–चार बार थूक कर अपना थूक एकत्र किया और फिर वो हाथ पीछे ले जाकर शेरू के लंड पर वो थूक मल कर उसे चिपचिपा बनाने लगी। फिर उसने अपना थूक अपनी गाँड के छेद पर भी लगाया और दूसरे हाथ से कुत्ते का लंड पकड़ कर उसका सुपाड़ा अपनी चूत में पेल दिया।

लंड का सुपाड़ा गाँड में धँसने के बाद शेरू ने ज़ोरदार चुदाई शुरू कर दी। अपने प्रत्येक धक्के के साथ वो अपना लंड थोड़ा और अंदर तक योगिता की गाँड में पेल देता। योगिता को कुत्ते का गर्म लौड़ा अपनी गाँड की सुरंग में धँस कर धीरे–धीरे गाँड की अंतड़ियों में बढ़ता हुआ महसूस हुआ। *"आआँआँघघहहहहह!"* योगिता चिल्लायी। शेरू का लोहे की तरह सख्त लौड़ा धधकता हुआ योगिता की गाँड में चीरता हूआ अंदर धँस रहा था। जैसे जैसे वो भभकता हुआ लंड उसकी गांड की गहराइयों में उतरता महसूस हुआ तो योगिता किकयाने और चिल्लाने लगी। उसकी गाँड की सुरंग उस विशाल लंड की मोटाई के अनुकूल फैलने लगी। गाँड की तंग दिवारें लहरा कर कुत्ते के लंड को गहराइयों में खींचने लगीं।

उस कुत्ते ने एक ज़ोरदार धक्का लगाया और गाँठ के अलावा बाकी का पूरा लंड योगिता की गाँड में लुप्त हो गया। वो चींखने लगी जब उसे लंड का अगला हिस्सा गाँड कि अंतड़ियों में धधकता महसूस हुआ। अपना पूरा लंड अंदर ठेल कर कुत्ता कस कर योगिता के चूतड़ों पर चिपका हुआ था और उसकी फूली गाँठ और टट्टे सुल्तान के लंड पर दब

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

रहे थे।

कुछ क्षणों के बाद, योगिता की गाँड की पेशियाँ पर्याप्त रूप से ढीली पड़ गयीं और योगिता को अब गाँड में लंड का एहसास आनंद दे रहा था। इससे भी ज्यादा मज़ा उसे उस सनसनी से आ रहा था जब–जब उसे दोनों कुत्तों के लंड अपनी चूत और गाँड के बीच की झिल्ली पर एक साथ रगड़ते हुए महसूस हो रहे थे। योगिता की चूत और गाँड के द्वारों पर सुल्तान का लंड शेरू की बड़ी गाँठ पर रगड़ खा रहा था। योगिता को अपनी चूत में सुल्तान के लंड की गाँठ और फैलती हुई महसूस हुई। उसकी गाँठ की ढीली पड़ कर लंड चूत में से जल्दी आज़ाद होने की कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही थी।

योगिता अपनी गाँड झटकाती हुई आगे–पीछे हिलाने और अगल–बगल झुलाने लगी। जब योगिता की गाँड लालच से शेरू के लंड को निचोड़ने लगी तो शेरू ने गुर्राते और भौंकते हुए एक पल के लिये अपना पूरा लंड योगिता की गाँड में स्थिर रखा। योगिता की गाँड के छेद के अंदरूनी छल्ले फड़फड़ा कर कुत्ते के फूले हुए लंड को खींच और घसीट रहे थे ।

योगिता को यह पूरा अनुभव अपनी सबसे विकृत कामकल्पना से भी बढ़ कर महसूस हो रहा था। वो कभी सोच भी नहीं सकती थी उसे ऐसा यौन सुख भी कभी मिल सकता है। उसकी कमोत्तेजना इस कद्र बढ़ गयी थी कि उसके निप्पल बिना छुए ही कड़क हो गये थे। योगिता पर कामुक्ता का जुनून सा सवार हो गया था। अपनी गाँड में कुत्ते के लंड की धुँआधार चुदाई से योगिता की साँसें उखड़ सी रही थीं और वो अनाप–शनाप बक रही थी... *“चोद गाँडू.... मेरी गाँड... मार ले मेरी गाँड... फाड़ डल साले... गाँड मेरी... कुत्तिया की गाँड... पेल दे... चूत का भी भोंसड़ा हो गया... मादरचोद कुत्तों... भर दो मेरी चूत और गाँड अपने वीर्य से... तुम दोनों की कुत्तिया हूँ मैं... हाय.. ऊँऊँऊँऊँ... कितना मज़ा... क्या ज़िंदगी है... चोदो.. गाँड.. चूत... लंड... आआआआहहहह....”* इस समय अपनी चूत और गाँड में एक साथ दो लंड भरे होने के कामुक एहसास के अलावा उसे और किसी बात की परवाह नहीं थी।

शेरू अपना बड़ा लंड पूरे जोश से उस औरत की गाँड में पेल रहा था। उसके लंड के आखिर की बड़ी गाँठ योगिता की गाँड पर जोर–जोर से टकराने लगी। शेरू अपनी गाँठ भी गाँड में ठेलने का भरसक प्रयास कर रहा था पर उसे सफ़लता नहीं मिल रही थी। योगिता का दिमाग शराब और वासन के नशे में चूर हो कर सन्न हो गया था और उसे

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

समझ नहीं आ रहा था कि उसकी गांड के छेद पर क्या चीज़ इतनी जोर से चोट मार रही है। सुल्तान से दो बार चुदने के बाद उसे गाँठ के बारे में तो पता था और उसकी चूत में इस समय भी सुल्तान के लंड की गाँठ फँसी हुई थी पर उसकी गाँड पे टकराने वाली चीज़ उसे गाँठ से भीन्न लग रही थी। उसने अपना एक हाथ पीछे ले जा कर अपनी गाँड पे टकराती हुई चीज़ को छुआ। उसने मूँह खोल कर जोर से गहरी साँस ली जब छू कर उसे महसूस हुआ कि वो कुत्ते के लंड की गाँठ ही थी। उसकी चूत में दो बार फँस चूकी सुल्तान की बड़ी गाँठ जैसी ही थी पर आकार में उससे कहीं ज्यादा फूली हुई थी। जब योगिता ने शेरू का लंड अपने मुँह में चूसा था तब भी यह गाँठ इतनी नहीं फूली थी।

इतनी मस्ती और उत्तेजना में होने के बावजूद भी योगिता को पहली बार थोड़ी चिंता सी हुई और ना चाहते हुए भी क्षणिक प्रतिक्रिया से उसने कुत्तों से स्वयं को दूर खींचने की कोशिश की। लेकिन उसकी चूत में एक कुत्ते का लंड फँसा हुआ अभी भी धड़क रहा था और दूसरा कुत्ता उसकी गाँड में लंड पेलते हुए उसकी कमर को जोर से जकड़े हुए था जिस वजह से योगिता उनसे अलग नहीं हो पायी।

शेरू ने धक्के लगाना ज़ारी रखा और हर धक्के के साथ योगिता उसके लंड की गाँठ अपनी गाँड पर और जोर–जोर से और बर्बरता से टकराती महसूस होने लगी। दर्द के कारण उसकी आँखों में आँसू निकल आये। इसके बावजूद चुदाई के जुनून में भरे उसके जिस्म को मज़ा भी आ रहा था और उसका प्रतिरोध कुछ कम हो गया था। काफी समय तक शेरू अपनी गाँठ योगिता की गाँड के हल्के प्रतिरोध के बावजूद अंदर ठेलने की कोशिश करता रहा। हालाँकि योगिता ने अपनी गाँड में कई छोटे–बड़े लंड मज़े से लिये थे पर वो जानती थी कि कुत्ते की इस असमान्य मोटी गाँठ का अंदर घुसना संभव नहीं होगा। पर फिर एक जबरदस्त धक्के के बाद वो क्रिकेट की गेंद जितनी मोटी गाँठ अंदर घुस गयी और वो दोनों चिपक गये।

“आआआआइईईईईईईईई भोंसड़ी के... फाड़ डाली मेरी गाँड... चिपक गया तू भी मादरचोद... ऊऊऊईईई आँआँआईईई....” योगिता को जब वो फूली हुई गाँठ अपनी गाँड में चीरती हुई अंदर धँसती हुई महसूस हुई तो वो आश्चर्य और पीड़ा से चींख उठी।

चुदाई और व्याभिचार से भरी अपनी ज़िंदगी में योगिता ने कभी स्वयं को इतना भरा हुआ महसूस नहीं किया था। वो दो कुत्तों के लंड अपनी चूत और गाँड में फँसाये उनसे

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

चिपकी हुई थी। शेरू के लंड की संपूर्ण लंबाई योगिता को अपनी गाँड में ऊपर–नीचे फिसलती महसूस हो रही थी। वो लंड जितना हो सके, उतना अंदर तक पहुँचने का प्रयास कर रहा था। अंदर फँसी लंड की गाँठ की मोटाई योगिता की गाँड को बुरी तरह फैला कर चौड़ा कर रही थी। योगिता ने प्रैशर थोड़ा कम करने की नियत से थोड़ा हिलने की कोशिश की पर कोई फायदा नहीं हुआ।

शेरू ने योगिता की गाँड में चुदाई जारी रखी। उसे परवाह नहीं थी कि उसका लंड कितना बड़ा था और उसकी कुत्तिया, योगिता, की गाँड उस लंड की मोटी गाँठ को अपने अंदर समायोजित करने के लिये बहुत छोटी थी। जहाँ तक उस कुत्ते की दिलचस्पी का सवाल था, तो उसका लंड उसकी कुत्तिया की गाँड में फँसा हुआ था और जब तक वो झड़ नहीं जाता तब तक उसकी कुत्तिया के परे हटने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। उसने तुरंत योगिता को और भी जोर से जकड़ लिया जितना हो सके अपना लंड योगिता की जकड़ती गाँड में गहरायी तक पेलते हुए कस कर चोदना ज़ारी रखा।

जब कुत्ते के लंड की गाँठ ने फूलना ज़ारी रखा तो योगिता ने अपना सिर झटकते हुए कराहना शुरू कर दिया। अपनी गाँड में एक कुत्ते के लंड के धक्कों की ताकत और उसकी गाँठ की मोटाई और दूसरे कुत्ते के लंड की उतनी ही मोटी गाँठ के चूत में फँसे होने से कुछ ही क्षणों में उसके हलक से *“ओंओंघेंघ आँआँओं ऊँऊँ आँआँओंघ”* जैसी घुरघुराने की आवाज़ें निकलने लगीं। योगिता के कराहें और *‘घों घों’* की आवाज़ें उसके चूतड़ों पर पड़ रही शेरू के टट्टों की थाप के साथ मिलने लगी।

जो गाँठ कुछ देर पहले क्रिकेट की गेंद जैसी महसूस हो रही थी वो अब योगिता को ऐसे महसूस हो रही थी जैसे उसकी गाँड में अंदर फुटबॉल ठूँसी हो। जब भी शेरू अपना लंड पीछे खींचता, तो उसकी गाँठ योगिता की गाँड जैसे चीर–सी देती थी और योगिता को एक ही पल में एक साथ जीने–मरने का अनुभव हो जाता। उसके गालों पर आँसू बह रहे थे। उसके मन का एक हिस्सा गाँड में से लंड को बाहर निकालना चाहता था। योगिता ने एक बार कोशिश भी की पर वो एक नहीं दो–दो लौड़ों से बंधी हुई थी। पर फिर उसके मन का दूसरा मौलिक हिस्सा, चाह रहा था की वो लंड जितनी जोर से हो सके उसकी गाँड की धुनाई करे –– उसकी गाँड तब तक चीरते हुए मारता रहे जब तक वो आनंद से चींखने ना लगे।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

तभी उसे एहसास हुआ कि वो असल में अपने चूतड़ पीछे ठेलती हुई अपनी गाँड मरवाने में कुत्ते का साथ दे रही थी। कुत्ते की मोटी गाँठ के आघात से पुनः बहाल हो कर योगिता फिर मस्त होने लगी थी और उस समय उसकी ज़िंदगी की एक ही अभिलाषा थी कि वो कुत्ता उसे अपनी कुत्तिया बना कर उसकी गाँड मार कर उसका भुर्ता बना डले। योगिता के आगे–पीछे हिलने से उसकी चूत और गाँड में भरे दोनों कुत्तों के लंड पतली सी झिल्ली से जुदा पटरियों पर धड़कते हुए इस तरह फिसलने लगे जैसे किसी अंधेरी गुफा में दो रेलगाड़ियाँ दौड़ रही हो। उसे निराशा सी हो रही थी कि गाँड में गाँठ फँसे होने की वजह से शेरू का लंड गाँड में ज्यादा आगे पीछे नहीं हिल पा रहा था। शेरू के लंड की गाँठ की मोटाई के कारण उसे अपनी टाँगें फैलनी पड़ी जिससे सुल्तान के लंड पर जकड़ी उसकी चूत पर ऐंठन कुछ कम हो।

दोनों कुत्ते हाँफ रहे थे और दोनों की राल बह रही थी। शेरू की राल योगिता की कमर पर बह रही थी पर योगिता को परवाह नहीं थी क्योंकि उसके खुद के मुँह से ढेर सारा थूक बह रहा था। उसकी गाँड की दीवारें अकड़ कर हिलोरें मार रही थीं और चूत बार–बार झड़ कर कलकल की आवाज़ के साथ अपनी मलाई छोड़ने लगी। योगिता का सिर वासना से चूर हो कर चकरा रहा था और वो जोर–जोर से सिसक रही थी। उसे लगा जैसे वो अपने अंदर कुत्तों के लौड़ों की फुँफकारने की आवाज़ सुन सकती थी और अपनी चूत के रस के बहने की आवाज़ भी आ रही थी। सुल्तान के लंड ने उसकी चूत में अब वीर्य छोड़ना बंद कर दिया था और अचानक ही उसका लंड की गाँठ धीली हो कर बोतल में से डाट की तरह 'पॉप' की आवाज़ के साथ बाहर निकल आयी और सुल्तान योगिता से दूर हो कर हाँफता हुआ एक तरफ लेट गया।

शेरू लगातार अपना लंड योगिता की गाँड में चोद रहा था पर गाँठ के फँसे होने के कारण उसके लंड की गति बहुत तेज़ नहीं थी पर योगिता को काफी मज़ा आ रहा था। योगिता ने जल्दी ही महसूस किया कि इस धीरे पर ठंसाठस चुदाइ का एक फायदा यह था कि इससे चुदाई इतने अधिक समय तक बरकरार थी जो कभी भी किसी आदमी के साथ चुदाई में संभव नहीं था।

पंद्रह मिनट बीत चूके थे जबसे शेरू ने उसकी गाँड मे अपना लंड ठूँसा था और उतना ही वक्त सुल्तान के लंड की गाँठ को ढीली हो कर योगिता की चूत में से निकलने में लगा था। शेरू के लंड की ताकत कम होने का अभी भी कोई संकेत नज़र नहीं आ रहा

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

था। योगिता की चूत बार-बार झड़ रही थी। योगिता पहले कभी एक साथ इतनी बार नहीं झड़ी थी... कई मर्दों से चुदाई के दौरान वो दो या कभी तीन बार झड़ी थी पर शेरू अब तक पिछले पंद्रह मिनट में कम से कम सात बार योगिता का पानी छुड़ा चुका था और उसके रुकने के आसार नज़र नहीं आ रहे थे। शाम से अब तक दोनों कुत्तों के साथ चुदाई में कम से कम बीस बार झड़ कर चरम कामोन्माद का अनुभव ले चुकी थी। उसे अपनी क्षमता पर आश्चर्य हो रहा था। उसके अंदर जैसे निंफोमानियक औरत की तरह चुदाई की आग भड़क उठी थी जो बुझने का नाम ही नहीं ले रही थी। हालाँकि जैसा कुत्तों की चुदाई में होता है, शेरू के लंड से लगातार पतला सा चिपचिपा द्रव्य योगिता की गाँड में एनिमा की तरह छलक रहा था पर उस द्रव्य का छिड़काव उसकी आग ठंडी करने की बजाय घी बनकर उसकी वासना की आग और अधिक भड़का रहा था।

कराहते हुए योगिता उस कुत्ते से विनती सी करने लगी, *"प्लीज़... ओह गॉड, हाँ... ओह गॉड... ओह गॉड... फक मी... ओह चोद मुझे... ओह मॉय गॉड... ओहहहहह गॉडडडड... चोद मुझे... हाँ... चोद अपनी कुत्तिया को... मुझे अपनी कुत्तिया बना ले... फक मी हार्ड... प्लीज़... धज्जियाँ उड़ा दे मेरी गाँड की... प्लीज़..."* इसी तरह कराहती और रिरियाती हुई योगिता अपनी गाँड गोल-गोल हिला रही थी। उसे और किसी बात का होश नहीं था। इस समय वो विकृत चुदाई ही उसके अस्तित्व का एकमात्र आधार थी। वो कुत्ते के उस अद्भुत लंड को ज्यदा से ज्यादा अपनी गाँड में ले लेना चाहती थी। वो चाहती थी कि शेरू कयामत तक उसे चोदता रहे। उसे और किसी बात की परवाह नहीं थी। सृष्टि में जो कुछ भी होगा वो सिर्फ इसलिए कि वो कुत्ता सदा उसकी गाँड में लंड पेल कर उसे चोद सके।

कुछ देर पश्चात जो कि अनंतकाल की तरह था, कुत्ते के लंड की गाँठ थोड़ी और फूल गयी और वो रिरियाने लगा। शेरू ने पूरी ताकत से अपना लंड जितनी गहरायी तक संभव था उतना ठेल दिया और उसके गाढ़े वीर्य की धार योगिता की गाँड में फूट पड़ी। योगिता को ऐसा लगा जैसे इस बार तो उसकी गाँड फट कर जरूर पड़ेगी। कुत्ते का गरम वीर्य गाँड में छूटने से और उस पीड़ा से स्वतः ही एक और चरम कामोन्माद ट्रिगर हो गया और अपनी कमर ऐंठ कर वो बहुत जोर से चिल्ला पड़ी, *"ऊऊऊऊआआआँआँआँआआआहहहह... मैं गयीईईईईईईईईं"*, और फिर उसने जोर से अपने दाँत भींच लिये और उसका जिस्म थरथर काँपने लगा। करीब दो-तीन मिनट तक कुत्ता उसकी गाँड में गाढ़ा वीर्य, गोला-बारी की तरह दागता रहा।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

योगिता को पूरा जिस्म झनझना उठा और उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। उसे इतने जबरदस्त कामानंद की अनुभूति हुई कि कुछ पलों के लिये वो अचेत सी हो गयी। जब उसे होश आया तो उसने पाया कि शेरू ने चुदाई बंद कर दी थी पर अभी भी वो उसके ऊपर सवार था। योगिता की चूत उसके लंड और गाँठ के इर्द-गिर्द जकड़ी हुई थी और योगिता को अपनी गाँड आश्चर्यजनक रूप से भरी हुई महसूस हो रही थी। यह सनसनाहट उसे बहुत अच्छी लग रही थी।

दूसरे कुत्ते से दो बार अपनी चूत चुदवाने के बाद वो समझ गयी थी कि उसे शेरू के लंड की गाँठ के सिकुड़ने तक ऐसे ही कुत्तिया बने हुए इंतज़ार करना पड़ेगा। उसकी गाँड अभी भी हवा में थी क्योंकि उसमें कुत्ते का लंड और गाँठ फँसी हुई थी। इसलिए योगिता ने अपनी बांहें ज़मीन पर फैला दी और अपना सिर भी ज़मीन पर टिका दिया।

शेरू में सुल्तान जैसा सब्र नहीं था और संतुष्ट होने के बाद वो अपनी गाँठ योगिता की गाँड में से आज़ाद करने के लिये खींचने की कोशिश करने लगा। योगिता फिर चिल्लायी। उसे अपनी गाँड फिर फटती हुई महसूस हुई। कुत्ते ने आज़ाद होने का कई बार प्रयत्न किया और फिर जैसा सुल्तान ने पहले किया था, शेरू ने भी अपना जिस्म योगिता से परे धकेला और अपनी पिछली टाँगें के बल कूद कर पीछे मुड़ गया। योगिता को अपनी गाँड और ऊपर उठानी पड़ी क्योंकि शेरू की ऊँचाई ज्यादा थी और इसका नतीजा यह हुआ की योगिता की गाँड कुत्ते के लंड से लटकी हुई प्रतीत होने लगी।

योगिता को बहुत दर्द हो रहा था पर मजेदार बात यह थी की उसे यह अच्छा लग रहा था। हालाँकि वो पहले कभी भी 'स्व-पीड़न या पर-पीड़न कामुक्ता' में आकृष्ट नहीं हुई थी, पर कुत्ते के लंड से लटके होने का आभास, गाँठ द्वारा अपनी गाँड में जोरदार खिंचाव की पीड़ा मिश्रित सनसनी, कुत्ते के पूरे लंड का अपनी गाँड में अहसास, और इन सबका संयोजन उसकी काम-विकृत वासना को भड़का कर उसे पागल कर रहा था। उसे अपनी क्लिट में बिजली सी दौड़ती महसूस हुई और वो तुरंत ही एक हाथ अपनी टाँगों के बीच में पीछे ले जाकर अपनी क्लिट और चूत रगड़ने लगी। जब भी वो आनंद की लहर से झटकती तो उसे अपनी गाँड में कुत्ते के लंड की गाँठ खिंचती हुई महसूस होती। और शीघ्र ही वो फिर एक बार कामोन्माद के चरम पर पहुँच कर कराहते हुए झड़ गयी। अपने कामानंद की प्रचंडता के कारण खुद को सहारा देने के लिये उसे अपना हाथ वापस नीचे रखना पड़ा। जैसे ही वो नीचे झुकी, योगिता को अपनी गाँड में कुत्ते के लंड की

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

सकुशल फंसी गाँठ का जोरदार खिंचाव महसूस हुआ। कुत्ते के लंड की मोटी गाँठ योगिता की गाँड को अभी भी हवा में लटकाये हुए थी और जब तक वो सिकुड़ ना जाये, उससे छूटने की कोई आशा नहीं थी।

झड़ने के पश्चात योगिता उसी स्थिति में कुत्ते के लंड से लटके हुए और उसकी गाँठ के सिकुड़ने का इंतज़ार करने के लिये बेबस थी। कुत्ते के लंड से चिपक कर उससे अपनी गाँड लटकाये हुए वो करीब बीस मिनट तक रही। जब भी उन दोनों में से कोई थोड़ा सा भी हिलता तो योगिता को गाँठ के साथ-साथ कुत्ते के लंड के प्रत्येक अंश का मीठा सा एहसास होता। अपने जीवन में शायद ही कभी योगिता ने इतने कामुक और प्रचंड एहसास का अनुभाव किया था। योगिता कुत्ते का लंड अपनी गाँड में गहरायी तक धड़कते हुए महसूस कर रही थी जिसमें से अभी भी वीर्य के कतरे फूटना जारी थे।

आखिरकार योगिता को कुत्ते के लंड की गाँठ ढीली होती महसूस जब तक कि वो सिकुड़ कर उसकी गाँड में से बाहर निकलने जितनी छोटी नहीं हो गयी। जब लंड की गाँठ योगिता की गाँड के छेद में से कुचलती हुई निकली तो उसके खिंचाव से योगिता की चींख निकल गयी। अगले ही पल उसे महसूस हुआ कि हवा के एक झोंके के साथ जैसे टन भर वीर्य उसकी गाँड में से फूट कर बाहर निकल आया हो। योगिता वहीं ढह गयी और कुछ देर के लिये हिल भी नहीं पायी। उसे अपनी गाँड ऐसे महसूस हो रही थी जैसे उसमें अभी भी कुत्ते का लंड ठूँसा हो। उसकी गाँड धड़कती महसूस हो रही थी और योगिता को अपना हाथ पीछे ले जाकर अपनी गाँड छूने में डर सा लग रहा था। आखिर में उसने अपनी अँगुलियों से गाँड को छुआ तो चिहुँक उठी। उसकी गाँड बहुत ही संवेदनशील हो गयी थी और छूने से गुदगुदी भरा दर्द हो रहा था। उसे आश्चर्य हुआ कि उसकी गाँड का छिद्र अभी भी काफी खुला हुआ था। आखिरकार वो छिद्र कुत्ते के लंड की क्रिकेट की गेंद के आकार की गाँठ द्वारा चौड़ा फैल कर खुला था और अब अपने मूल आकार में लौटने का प्रयत्न कर रहा था।

उसने शेरू की तरफ नज़र डाली तो देखा कि उसका लंड तुरंत अपने खोल में सिकुड़ कर लुप्त नहीं हुआ था। योगिता को विश्वास नहीं हो रहा था कि वो लंड और गाँठ उसकी गाँड में कैसे समा पाये थे। कुत्ते लंड की जड़ में गेंद जैसी गाँठ अभी भी काफी मोटी फूली थी। वो बैंगनी से लाल रंग की गाँठ आलूबुखारे जितनी बड़ी लग रही थी और वैसे ही बैंगनी-लाल रंग का कुत्ते का लंड भी इस समय कम से कम आठ इंच का था। यह

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

सोच कर कि उसकी गाँड में चोदते हुए वो लंड इससे भी बड़ा रहा होगा, योगिता के बदन में एक लहर सी दौड़ गयी।

वीर्य में भीगा और चमचमाता हुआ लंड झुलाते हुए शेरू चलता हुआ एक तरफ जा कर बैठ गया और अपना लंड चाट कर साफ करने लगा। सुल्तान भी पास ही बैठा अपने लंड पर जीभ फिरा रहा था।

****

रीना कँवर © 2007

****

गधे का वीर्य पीने के बाद रश्मि की कामोत्तेजना इतनी बढ़ गयी थी कि उसकी चूत ऐसे महसूस दे रही थी कि कभी भी उसमें आग की लपतें धधक उठेंगी। गधे ने अपनी जीभ और जबड़े से रश्मि को तृप्त किया था पर रश्मि की संतुष्टि ज्यादा देर कायम नहीं रही। और अब, उसके लंड को चूस कर उसका वीर्य–पान करने के पश्चात उस कामुक चुदक्कड़ औरत को ऐसा लग रहा था कि वो गधे के विराट लंड से चुदवाये बिना नहीं रह पायेगी।

उसने टकटकी लगा कर गधे के लंड को घूरा तो उसका बदन थरथरा गया। उसके लंड का आकार दिल दहला देने वाला था। फिर भी उस लंड का सुपाड़ा उसके मुँह मे समा सका था और वो अच्छी तरह जानती थी कि उसके होंठों से ज्यादा लचीली उसकी चूत थी – और ज्यादा भूखी भी। उसकी चूत बहुत खोखली और खाली महसूस दे रही थी और चुदने के लिये तरस रही थी। रश्मि उस कुंआरी लड़की की तरह काँप रही थी जिसका कौमार्य भंग होने वाला हो। एक तरह से ये सच भी था – रश्मि ने सोचा। क्योंकि गधे का वो विशाल लंड उसकी चूत में इतनी गहरायी तक घुसने वाला था जहाँ तक पहले कोई लंड नहीं गया था।

वो हाँफ रही थी। उसकी गर्म साँस गधे के लंड के सुपाड़े पर पड़ी तो वो धड़कने और कूदने लगा। उसका लंड तड़क कर ऊपर उठ गया। रश्मि के मुँह में झड़ने के बाद वो थोड़ा ही ढीला पड़ा था और इस समय झटक कर वापस सख्त बन गया था।

रश्मि की आँखें इस तरह गधे के लंड पर चिपकी हुई थीं जैसे कि वो सम्मोहन से अचेतन हो गयी हो। वो धीरे से अपने सैंडलों की ऐड़ियों के बल बैठते हुए पीछे की तरफ

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

अपने चूतड़ों के बल गिर गयी और फिर वो गधे के नीचे खिसक गयी। उसका सिर और कंधे ज़मीन पर टिके थे, उसके सैंडल युक्त पैर दृढ़ता से ज़मीन पर जमे थे और उसकी गाँड हवा में ऊपर उठ कर झूल रही थी जिससे उसकी झाग उठती चूत गधे के लंड के सुपाड़े के स्तर तक पहुँच गयी थी।

गधे ने अपना सिर झुकाया और उसकी जीभ रश्मि की सख्त चूचियों को चाटते हुए उनके बीच की दरार से ऊपर फिसली। गधे का लंड भी रश्मि के पेट पर उछला। गधे ने आगे झटक कर अपना लंड आगे भोंका पर वो अपने लक्ष्य से एक-दो इंच से चूक गया। उसके लंड का चिपचिपा सुपाड़ा रश्मि के चूत के ऊपर से झड़झड़ाता हुआ उसके पेट पर फिसल कर रश्मि की भारी चूचियों के निचले हिस्से से टकराया।

रश्मि के पेट पर वीर्य की पगडंडी सी छोड़ते हुए गधे ने अपना लंड पीछे खींचा। रश्मि ने अपने चूतड़ और ऊपर ठेले। जब उस उत्तेजित गधे ने फिर से धक्का लगाया तो उसक लंड जोर से रश्मि की चूत पर टकराया और रश्मि को पीछे ढकेल दिया। उसका बड़ा सुपाड़ा रश्मि की चूत में धधकने लगा और रश्मि जोश में अपने चूतड़ हिलाती हुई अपनी चूत उस लंड के चिपचिपे सुपाडे पर रगड़ने लगी।

गधे के मूत-छिद्र में से वीर्य छलक पड़ा और रश्मि की चूत में बह कर उसकी चूत के रस की चिकनाहट बढ़ाने लगा। रश्मि की चूत के गुलाबी बाहरी होंठ धड़कते हुए फैल गये और लंड के सुपाड़े पर बाहर घूम कर खुल गये। घरघराते हुए गधे ने आगे धक्का लगा कर अपना सुपाड़ा उन खुले होंठों में से रश्मि के मलाई से भरे कटोरे में ठाँसने लगा। लंड का बड़ा खूंटा रश्मि की चूत को और चौड़ा फैलाते हुए धधकने लगा। जब गधा अपना लंड और आगे ठेलने लगा तो रश्मि ने भी अपने कुल्हे आगे ठेल दिये। गधे के लंड का रिसता हुआ सुपाड़ा रश्मि की चूत में फँस गया था। चुदाई की चाहत में रिरियाती हुई रश्मि अपनी चूत चलाने लगी और गधे ने फिर आगे धक्का लगाया। गधा गर्जने लगा और रश्मि कराहने लगी – और उसके लंड का विशाल मोटा सुपाड़ा रश्मि की दहकती चूत में कुचलता हुआ अंदर खिसक गया। लंड के सुपाड़े की पूरी गाँठ अब चूत के अंदर थी और चूत के होंठ उस सूजे हुए सुपाड़े के ठीक पीछे चिपक कर लिपटे हुए थे।

रश्मि उस गधे के सख्त लंड के एक छोर पर अटकी हुई झूल रही थी। गधा अपना लंड आगे ठाँस रहा था और रश्मि की गाँड उसके लंड के छोर पर ऊपर-नीचे हो रही थी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

एक क्षण के लिये रश्मि घबरा गयी कि उसकी चूत और लंड अंदर नहीं ले पायेगी और उसके मुँह की तरह उसकी चूत भी सिर्फ लंड का सुपाड़ा ही ले पायेगी। उसकी आंशिक खाली चूत चुदाई की तड़प में धड़क रही थी। अपनी चूत को गधे के लंड से पूरा भरने की तड़प में रश्मि वहशियाने ढंग से अपने कुल्हे उचकाती हुई अपनी चूत उसके लंड पर ऊपर चोदने लगी।

गधे का लंड थोड़ा अंदर खिसका। धीरे से और स्थिरता से गधे का लंबा और मोटा महा–लंड रश्मि की चूत में और अंदर फिसलने लगा। इतने बड़े लंड को समायोजित करने के लिये चूत की लचीली दीवारें फैल कर लंड के चारों और साँचे में ढल गयी। रश्मि की चूत पहले कभी इतनी चौड़ी नहीं फैली थी। गधे ने आगे धक्का लगाया और उसका लंड चूत के और अंदर धंस गया। धधकता हुआ सुपाड़ा गड़ते हुए रस्ता बना रहा था और उसके पीछे–पीछे लंड की छड़ अंजान प्रदेश में बढ़ रही थी।

गधे के लंड का सुपाड़ा रश्मि की चूत में इतनी गहरायी तक पहुँच चुका था जहाँ पहले कभी और कोई लंड नहीं गया था और अभी भी रश्मि की चूत और गधे के टट्टों के बीच लगभग एक फुट लंड निकला हुआ था। गधे ने हिल कर अपना लंड और आगे ठेला तो लंड का सुपड़ा चूत की गहरायी में कठोरता से टकराया और अब वो और आगे नहीं जा सकता था। रश्मि खुद को लंड से इतना भरा हुआ महसूस कर रही थी कि उसने सोचा कि जब गधे के लंड में से वीर्य छूटेगा तो उसके मुँह से बाहर निकल पड़ेगा। गधे का लंड झटकने लगा तो रश्मि उसपर ऊपर नीचे हिलने लगी। रश्मि की चूत पूरी क्षमता तक गधे के लंड से भरी हुई थी पर फिर भी लगभग एक फुट लंड बाहर रह गया था। रश्मि की चूत में और लंड के लिये कोई जगह नहीं बची थी। उसकी भूखी चूत चमत्कारपूर्ण रूप से उस गर्म महा–लंड से भर गयी थी।

गधे ने रश्मि की चूत के अंदर घुसे हुए अपने धड़कते लंड की पैंठ कुछ क्षणों के लिये बनाये रखी। रश्मि को लगा जैसे उसका लंड पम्प की तरह उसके पेट में हवा भर रहा है। अपने चूतड़ घुमा कर वो अपनी चूत को गधे के लंड के इर्द–गिर्द रगड़ रही थी। रश्मि गधे द्वारा चुदाई शुरू होने के लिये बेकरार हो रही थी।

तभी गधा पीछे हिला। परंतु उसका लंड रश्मि की चूत में इतनी मजबूती से गढ़ा था कि लंड बाहर खींचने की बजाय रश्मि को ही अपने लंड के साथ पीछे घसीट लिया। गधे ने

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

फिर एक बार आगे ठेल कर पीछे झटका लिया किंतु उसके लंड ने अंदर या बाहर फिसलने से इंकार कर दिया। वो लंड रश्मि की चूत में इतना कस कर फँसा था कि टस से मस नहीं हुआ।

रश्मि बेकरारी से कराहने लगी। उसके लंड से अपनी चूत इस कदर भरी होने से वो खुश थी पर वो अपनी चूत में चुदाई की ताल में उस भारी लंड के अंदर बाहर फिसलने के लिये तड़प रही थी। अपनी चूत को ठीक स्थिति में रखते हुए उसने अपने पैरों और कंधों को ज़मीन पर ठेला ताकि गधे का लंड बाहर निकल कर फिर अंदर जोर से घुस सके पर वो असफल रही। गधे ने झटका मारा तो रश्मि का पूरा शरीर उसके लंड के साथ घिसट गया।

रश्मि ने सोचा कि कम से कम वो चूत में लंड भरे होने से झड़ तो सकती ही थी। पर फिर उसे दूसरा ख्याल आया। *'प्रथागत चुदाई के घर्षण के बगैर, क्या वो गधा झड़ पायेगा?'*

और अगर वो झड़ कर संतुष्ट नहीं हो सका तो – रश्मि ने आकस्मिक भय से थूक निगला – वो दोनों अलग कैसे होंगें? रश्मि को बड़ा भयनक ख्याल आया कि हो सकता है वो कईं घंटों तक गधे के लंड पर फँसी रहे। और हो सकता है उसकी चूत सुबह तक लंड पर चिपकी हुई फँसी रहे और योगिता उसे ढूँढती हुई वहाँ पहुँच जाय या फिर उसे किसी डॉक्टर की मदद लेनी पड़े।

रश्मि इस संभावना से डर कर जोर–जोर से पागलों की तरह झटके मारने लगी। अपनी मुलायम जांघें उस विराट लंड पर कस कर और उसे मजबूती से पकड़ कर वो उस लंड पर अपनी चूत ऊपर नीचे कुचलने की कोशिश करने लगी। पर फिर भी वो टस से मस नहीं हुआ। उसका सुपाड़ा रश्मि की चूत की असीम गहराइयों में था और उसके लंड की अधिकतर डाली उसकी चूत की सुरंग में फँसी थी, पर रश्मि अपनी चूत ज़रा सी भी नहीं हिला सकी।

नशे में चूर रश्मि को एहसास हो गया कि वो गंभीर समस्या में थी।

परंतु सहायता तो वहीं मौजूद थी.....

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

****

रीना कँवर © 2007

****

शेरू के लंड से आज़ाद होने के बाद अर्ध–चेतन हालत में योगिता कालीन पर पसरी हुई पड़ी थी। दोनों कुत्ते भी हाँफते हुए योगिता के नज़दीक ही सिकुड़े हुए पड़े थे। दोनों कुत्तों के टट्टे रिक्त हो चुके थे और उनके लंड धीरे–धीरे अपने खोल में लुप्त हो रहे थे।

चार–पाँच मिनट पश्चात योगिता कुछ संभली तो उसने कुत्तों पर एक नज़र डाली। उसे कुत्तों में नवीन जोश का कोई आसार नहीं दिखा। वो हिम्मत करके उठी। पहले तो वो अपने कपड़े ढूँढने लगी पर फिर उसने कपड़े पहनने का ख्याल छोड़ दिया क्योंकि उसका इरादा तो बाहर छप्पर में जाने का था। उसने सोचा कि जब वो गधे का मूसल लंड अपने हाथों में ले कर सहलायेगी तो गधे का वीर्य हर तरफ छलकेगा और कपड़ों को वीर्य से भिगोने का कोई तात्पर्य नहीं था। वो वैसे ही बिल्कुल नंगी अपने हाई–हील के सैंडल पहने कमरे के दरवाजे तक गयी। उसके कदम पहले की तरह ही लड़खड़ा रहे थे। उसने रुक कर बाहर झाँका तो उसे घर का मुख्य दरवाजा खुला दिखायी दिया। उसने सोचा कि हो सकता हई नशे के कारण रश्मि दरवाजा बँद करना भूल गयी होगी। फिर रश्मि के बेडरूम की तरफ से कोई आहट ना सुन कर वो आश्वस्त हो गयी कि रश्मि नशे में चूर हो कर गहरी नींद सो रही होगी।

योगिता को एहसास था कि वो स्वयं भी नशे में धुत्त थी पर गधे के दिव्य लंड की छवी उसे आगे बढ़ने के लिये प्रेरित कर रही थी। दिन में शायद उसे ऐसा मौका ना मिले, इसलिए वो आज रात को ही अपनी विकृत मनोकामना पूरी कर लेना चहा रही थी। बाहर आकर अंधेरे में वो डगमगाती छप्पर की तरफ बढ़ी।

उसे गधे के रेंकने और घरघराने की आवाज़ सुनायी दी तो वो मुस्कुरा दी। *"बेचारा उपेक्षित जानवर"* उसने सोचा, *"जरूर मेरी दहकती चूत की कामुक गंध हवा में फैल कर गधे को उत्तेजित कर रही है।"*

नशे में चूर योगिता अपनी चूचियाँ झुलाती और अपने नंगे चूतड़ मटकाती हुई और तेजी से आगे बढ़ी तो हाई–हील के सैंडलों में संतुलन नहीं रख सकी और धड़ाम से लुढ़क गयी। पर नशे और वासना में उसे किसी बात की परवाह नहीं थी। वो फिर उठ कर झूमती

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

और गिरती–पढ़ती आगे बढ़ी।

उसने छप्पर के बाहर कदम रखा – और बुत की तरह जम गयी। *"मादरचोद!"* योगिता ने गहरी साँस ली। वो टकटकी लगा कर एक अदभुत दृश्य देख रही थी। वहाँ उसकी कामुक सहेली, बिल्कुल नंगी, सिर्फ हाई हील के सैंडल पहने, गधे के नीचे उस जानवर का विशाल लंड अपनी चूत में फँसाये हुए थी। रश्मि उस गधे के लंड पर झटकती और जोर–जोर से हिलती हुई चुदाई शुरू करने की बेकरारी से कोशिश कर रही थी। योगिता फौरन अपनी सहेली रश्मि की समस्या समझ गयी। योगिता के सुंदर मुखड़े से विस्मय के भाव दूर हो गये और उसके होंठों पर कामुक और कुटिल मुस्कुराहट आ गयी।

"गर्दभ राज से चुदवा रही है... हुँह, राँड?" योगिता लम्पटता से बोली।

रश्मि का सिर पीछे की तरफ चटक गया और उसने गर्दन घुमा कर अपनी सहेली को देखा। उसका चेहरा शरम से लाल हो गया। उसके होंठ फड़फड़ाये पर कोई शब्द नहीं निकले। ऐसी परिस्थिति में वो क्या कह सकती थी।

योगिता अपनी सहेली की लंड भरी चूत पर नज़रें टिकाये उसके नज़दीक बढ़ी। उस औरत की चूत के गुलाबी होंठ गधे के धड़कते लंड के चारों तरफ चौड़े फैले हुए थे और उसका चूत–रस बह कर उसके चूतड़ों की दरार को भिगो रहा था और बूँद–बूँद करके जमीन पर टपक रहा था। योगिता को अपनी सहेली से ईर्ष्या होने लगी। वो अपनी स्वयं की चूत उस गधे के लंड से चुदवाना चाहती थी। परंतु उसे साफ दिख रहा था कि गधे को रश्मि की चूत से लंड बाहर निकालने के पहले रश्मि की चूत में झड़ना पड़ेगा और उसके बाद ही उसे वो लंड चखने का मौका मिलेगा।

"तू.. तू.. क–क्या..." रश्मि हकलायी। उसे लगा कि इस हालत में उसे देख कर योगिता बड़ा मुद्दा बना लेगी पर फिर उसने देखा कि योगिता स्वीकृति से मुसकुरा रही थी। साथ ही उसने ध्यान दिया कि योगिता सिर्फ अपने सैंडल पहने, बिल्कुल नंगी ही वहाँ आयी थी।

"लगता है कि तुझे कुछ मदद की जरूरत है, रश्मि!"

रश्मि अविश्वास से कराह उठी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

"कसकर फँस गया है ना?" योगिता खिलखिलायी, *"मैं तेरी मदद करती हूँ।"*

योगिता अपनी सहेली की बगल में घुटनों के बल बैठ गयी। रश्मि लाचारी से गधे के लंड से चिपकी हुई ऊपर–नीचे झटक रही थी। गधा तो मुर्ख जानवर था – उसे क्या पता की इन औरतों के साथ चुदाई करना विकृति थी – इसलिए उसने अपने कुल्हे आगे पिछे हिलाना जारी रखा। योगिता ने रश्मि की चूत के ठीक बाहर गधे के उस मोटे लंड को अपने दोनों हाथों में वहाँ से पकड़ लिया और चुदाई की क्रिया शुरू करने की कोशिश में उसे खींचने और ढकेलने लगी। वो अपनी सहेली के पेट पर झुकी तो उसकी सम्मोहित नज़रें रश्मि की लंड–भरी चूत पे टिक गयीं। योगिता के काले लंबे बाल भी रश्मि की चूचियों पर लुढ़क गये। योगिता अभी भी मुस्कुरा रही थी पर उसके कामुक होंठ अब काँपने लगे थे।

योगिता को कुछ झिझक नहीं थी। कॉलेज के दिनों में दोनों सहेलियों ने अनेक बार एक दूसरे की चूत चाटी थी और एक ही बिस्तर पर दूसरे मर्दों के साथ चुदाई की थी। और फिर अपनी सहेली, जो कि गधों से चुदवाती हो, उसके सामने उसे क्यों शरम या झिझक होती।

"तेरी चूत पूरी तरह गीली नहीं हुई है", योगिता ने झूठ कहा। रश्मि की बाढ़ की तरह बहती हुई चूत से ज्यादा गीली कोई चूत कैसे हो सकती थी। योगिता का मुखड़ा और नीचे झुका और वो होंठ खोल कर अपनी सहेली की चूत को चूमते हुए राल निकालने लगी। उसका थूक रश्मि की सख्त क्लिट पर से होता हुआ गधे के लंड के घेरे पर बहने लगा। उसकी जीभ इधर–उधर फिसलती हुई कभी रश्मि की चूत के फैले हुए होंठों को चाटने लगी, कभी गधे के लंड पर सुडकती और फिर रश्मि की फनफनाती हुई क्लिट पर चाबुक की तरह फिरती। अपनी जीभ और होंठ गधे के लंड और रश्मि की चूत पर रगड़ते हुए वो लगातार अपने हाथों से गधे के लंड को खींच रही थी।

योगिता ने अपना सिर उठाया। उसके सुंदर मुखड़े का निचला हिस्सा अपने थुक, रश्मि के चूत–रस और गधे के वीर्य के मिश्रण से लिसड़ा हुआ चमक रहा था।

"ये साला चोदू लंड मुझसे नहीं हिल रहा", वो फुसफुसायी, *"यहाँ साइड से मेरी सही पकड़ नहीं बन पा रही हैं।"* जब योगिता ने अपनी सहेली के घबराये हुए चेहरे पर नज़र

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

डाली तो योगिता की आँखों में वासना और शरारत झलक रही थी। *"मेरे ख्याल से मुझे तेरे ऊपर आ कर झुकना पड़ेगा, राँड।"*

योगिता ने अपनी एक टाँग उठा कर रश्मि के दूसरी तरफ खिसका दी और उसके कमान की तरह मुड़े हुए धड़ पर बैठ गयी। उसकी स्वयं की धधकती चूत रश्मि के चेहरे के ठीक ऊपर थी। उसका चूत–रस उसकी सुडौल टँगों से नीचे बह रहा था और उसकी चूत के आस–पास का हिस्सा उसके चूत–रस और कुत्तों के वीर्य के मिश्रण से भिगा हुआ था। रश्मि के मुँह में पानी आ गया और गर्दन ऐंठ गयी और स्वतः ही उसका सिर उस मलाईदार चूत की तरफ उठ गया।

योगित गधे के लंड को दोनों हाथों से खींचती हुई कसमसायी। लंड को खींचते वक्त उसकी चूत नीचे खिसक कर रश्मि के चेहरे के ठीक ऊपर आ गयी। योगिता की चूत के होंठ चौड़े खुले हुए थे और उसमें से मलाईदार द्रव्य बह रहा था। रश्मि की जीभ बाहर निकल कर योगिता की क्लिट पर फड़फड़ाने लगी और फिर उसकी चूत में घुस गयी।

"ऊऊऊऊऊह – बहुत मज़ा आ रहा है... रश्मि", योगिता बिल्ली की तरह घुरघुरायी।

रश्मि के अधीर मुँह पर अपनी चूत रगड़ती हुई योगिता अपने चूतड़ हिलाने लगी। रश्मि रिरियाने लगी जब उसकी जीभ स्वादिष्ट चूत–रस से तर हो गयी। काफी अरसे के बाद वो चूत का स्वाद ले रही थी। लेकिन उसे यह एहसास नहीं हुआ कि योगिता के चूत–रस में उसके स्वयं के कुत्तों का वीर्य भी मिश्रित है। उसने अपने हाथ उठा कर अपनी सहेली के चूतड़ों को पकड़ लिया और कस कर उसकी रसीली चूत को अपने चेहरे पर खींच लिया। शुरू में रश्मि सिर्फ अपनी जीभ का प्रयोग कर रही थी, पर अब उसने अपने खुले होंठ योगिता की चूत पर कस लिये और लोलुपता से चूसने लगी। उसका मुँह चूत के मलाईदार रस से भर गया। वो मज़े से गलल–गलल कर के योगिता का चूत–रस निगलने लगी। वो चूत चूसते हुए दिवानी सी हो गयी थी और साथ में अपनी चूत में गधे का लंड भरे होने से वो वासना में पागल हो रही थी।

अपनी सहेली की चूत को होंठों से चूसते हुए रश्मि अपनी जीभ उसकी चूत में चोदने लगी। योगिता मस्ती और आनंद से किलकारियाँ मारती हुई कलबलाने लगी। योगिता का स्वयं का सिर रश्मि की टाँगों के बीच ऊपर–नीचे कूदने लगा और वो रश्मि की क्लिट

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

चूसने लगी। गधे का लंड योगिता के होंठों के स्पर्श से धड़कने लगा –– और अब जबकि रश्मि की चूत और गर्म और रसीली हो गयी थी, गधे का वो विशाल लंड आखिर में अंदर–बाहर फिसलना शुरू हो गया।

गधे का लगबग एक इंच लंड रश्मि की चूत के होंठों को अपने साथ घसीटता हुआ उसकी चूत से बाहर निकला। धीरे–धीरे और लंड बाहर निकलने लगा। उत्तेजित गधे ने जोर से झटका मारा और सुपाड़े की घुंडी छोड़ कर उसका पूरा लंड बाहर आ गया। उसका लंड रश्मि कि चूत–मलाई से लिसड़ा हुआ था। लंड की फूली हुई घुंडी रश्मि की चूत में दहक रही थी। योगिता ने गहरी साँस ली और गधे के रसीले लंड पर अपनी जीभ फिराती हुई अपने सहेली के चूत का रस गधे के काले लंड से चाटने लगी। गधे ने ठेल कर लगभग पूरा लंड वापस चूत में चोद दिया। योगिता की जीभ भी गधे के गरजते लंड के साथ रश्मि की चूत में फिसल गयी। गधा आवेशित हो कर अपना लंड रश्मि की चूत में ठेलने लग तो उसके टट्टे जोर से झूलने लगे। उसका लंड योगिता के होंठों और जीभ पे रगड़ता हुआ उसकी सहेली की चूत में अलोप हो गया।

"ऊऊऊऊहहहह –– गधा चोद रह है तुझे... छिनाल रश्मि!" योगिता चिल्लायी तो उसकी आवाज़ रश्मि की टाँगों के बीच में घुट गयी।

परंतु रश्मि ये अच्छी तरह जानती थी। वो अपनी गाँड और चूतड़ हिला कर आगे ठेलती हुई गधे के वहशी धक्कों का जवाब दे रही थी और साथ ही अपनी सहेली की चूत लोलुप्ता से चूस रही थी। उसे पता नहीं था कि उसे किसमें अधिक मज़ा आ रहा था। उसकी जीभ भी उतनी ही आगबबूला थी जितनी कि इस समय उसकी क्लिट – और योगिता की जीभ उसकी वासना की आग में तेल डाल रही थी। रश्मि ने योगिता की गाँड पकड़ी और अपनी कमर उठा कर उसकी चूत में से बहता हुआ रस पीने लगी। योगिता ने कुछ पल गधे के लंड पर ऊपर–नीचे अपनी जीभ फिरायी और फिर अपनी सहेली की जाँघों में अपना सिर छिपा लिया। उसके खुले होंठ गधे के लंड से भरी हुई रश्मि की चूत के बाहर जोंक की तरह चिपक गये।

"ओहह योगिता! हुँम्म... तू... तू नहीं... नहीं जानती कि कितना... ऊँऊँऊँघघघ! कितना... अच्छा लग... रहा है इसका... लंड...", रश्मि फुसफुसायी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

गधे ने धीरे से अपना लंड बाहर निकाला और फिर झटके से वापस अंदर ठेल दिया। उसके लंड की रॉड रश्मि की चूत में घुसते हुए योगिता के खुले मुँह में से गुजरी। रश्मि की चूत द्वारा अपने लंड के चूसे जाने से और योगिता की जीभ और होंठों के लंड पर फिरने और राल टपकाने से गधा उन्मत हुआ जा रहा था। वो अपने लंड से चोदते हुए रश्मि को इस कदर हिला रहा था कि रश्मि का पूरा बदन थरथराता हुआ आँधी में पत्ते की तरह हिल रहा था।

रश्मि की चूत पानी छोड़ने लगी।

जैसे ही रश्मि की चूत का रस गधे के चोदते हुए लंड के चारों तरफ बह कर उसकी सहेली के अधीर मुँह में बाढ़ की तरह प्रवाहित होने लगा, तो रश्मि वासना से दिवानी हो कर कराहने चिल्लाने लगी। उसे अपना तन–मन अपनी चूत के साथ वासना की गर्मी में पिघलता महसूस होने लगा। हकीकत की कुछ चिंगारियाँ अभी भी बाकी थी। रश्मि को स्थिति का आभास था।

"गधा मुझे चोद रहा है और मैं अपनी कॉलेज की सहेली के साथ उनहत्तर (69) की मुद्रा में हूँ" रश्मि ने सोचा। यह अविश्वसनिय पर कामुक स्थिति थी।

और सलीम, जो छप्पर के दरवाजे पर मुँह खोले और आँखें फाड़े खड़ा था, उसे भी अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

****
रीना कँवर © 2007
****

सलीम अपने दोस्त की शादी में से कुछ जल्दी लौट आया था। वहाँ उसने दोस्तों के साथ दारू भी पी थी और वो इस उम्मीद में जल्दी वापस आया था कि शायद आज की रात रश्मि मैडम को चोदने का मौका मिल जाये। जब वो घर से निकला था तो उसकी मालकिन अपनी सहेली के साथ शराब पीने बैठी थी और ये अच्छा संकेत था क्योंकि वो जानता था कि शराब के नशे में मैडम की चुदाई की भूख कई गुणा बढ़ जाती थी।

वापस लौट कर उसने पहले अपने सर्वेंट क्वार्टर में जा कर अपने कपड़े बदले थे और

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

फिर पानी पी कर मुख्य घर में गया था। वहाँ रश्मि मैडम या उनकी सहेली उसे कहीं नहीं दिखे। गेस्ट बेडरूम का नज़ारा देख कर उसे अंदाज़ा हो गया था कि वहाँ चुदाई हुई है क्योंकि कुत्ते थके हारे कार्पेट पर पसरे हुए थे। व्हिस्की और एक सोडे की बोतल भी ज़मीन पर लुढ़की पड़ी थी। एक तरफ साड़ी, पेटीकोट इत्यादी बेतरतीबी से बिखरे हुए थे और बारहसिंघे के सींगों में एक पैंटी भी लटकी हुई थी।

उसे याद आया कि वो साड़ी तो मैडम की सहेली ने पहनी हुई थी। पर रश्मि मैडम के कपड़े वहाँ कहीं नज़र नहीं आये और ना ही दोनों औरतों का कुछ अता–पता था। वो जानता था कि उसकी मालकिन कुत्तों के साथ अपनी चुदाई की बट बहुत ही गुप्त रखती है पर उसका दिल कह रहा था कि हालत से उसे गुमान हो रहा था कि आज कुत्तों के साथ चुदाई में रश्मि मैडम के साथ उनकी सहेली भी शरीक थी। साथ ही वो परेशान था कि वो दोनों हैं कहाँ? उसे लगा कि शायद दोनों औरतें बाहर लॉन में हो सकती हैं इसलिये वो घर के पिछवाड़े में गया। वहाँ लॉन में भी छतरी के नीचे कुर्सियाँ गिरी पड़ी थीं पर उन दोनों का कहीं पता नहीं था। अंधेरा भी हो गया था और वो असमंजस में था कि तभी उसे छप्पर की तरफ से गधे के रेंकने और घरघराने की आवाज़ सुनायी दी। उसे छप्पर के पास एक व्हिस्की की बोतल भी पड़ी दिखायी दी तो वो उस तरफ बढ़ गया।

और इस तरह सलीम उस हैरतअंगेज़ नज़ा मंज़र तक पहुँचा था।

कुछ समय के लिये वो हक्काबक्का नौकर छप्पर के दरवाजे पर खड़ा रहा। उसकी आँखें उस नज़ारे पर इस तरह चिपकी थीं जैसे उसकी आँखें बाहर गिर पड़ेंगी – और उसका लंड मिसाइल की तरह उसकी टाँगों के बीच में से उखड़ कर उड़ने को तैयार था।

वो सदमे में था या अपने सामने के मंज़र की विकृति से घृणित था... वो नहीं जानता था – क्योंकि वो उस समय इतना उत्तेजित था कि उसे और कोई एहसास ही नहीं था। उसका सिर चकरा रहा था। उसके खड़े लंड में इतना खून प्रवाहित हो गया था कि उसके दिमाग में आक्सीजन की कमी हो रही थी। सामने के मंज़र का रसभरा ब्यौरा उसके दिमाग में गहरायी तक छप गया था।

वहाँ उसकी चुदक्कड़ मालकिन थी जिसका सुडौल कामुक जिस्म गधे के नीचे टिका था – और उस गधे का भारी भीमकाय लंड उस औरत की चौड़ी खुली चूत में अंदर–बाहर

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

कुटाई कर रहा था। यह मंजर खुद में बेहद अश्लील और विकृत था।

इसके अतिरिक्त, उसकी मालकिन के ऊपर उसकी हम-उम्र सहेली झुकी हुई, उल्टी हो कर उनहत्तर की मुद्रा में सवार थी। उसने देखा कि रश्मि मैडम की जीभ अपनी सहेली योगिता की रसभरी चूत में लपलपा रही थी और अपना सिर एक तरफ तिरछा करके सलीम ने देखा कि योगिता की जीभ भी लोलुप्ता से गधे के लौड़े और रश्मि की चूत पर फिर रही थी। वो खुद भी चूत चाटने का शौकीन था, इसलिये चूत के चाटने का मोह समझ सकता था – लेकिन वो उन दोनों औरतों के संबंध से जरूर चकित था। सलीम की आँखें पूरा रस ले रही थीं और उसका दिमाग उस कामुक विकृत दृश्य में बह रहा था। लेस्बियन और पशु-मैथुन जैसी विकृत यौन-क्रियायें एक साथ उसके सामने थी।

अब वो हक्काबक्का नौकर मुस्कुराया और उनके करीब बढ़ गया। अपनी चुदाई में लीन, दोनों औरतों को उसकी उपस्थिति का आभास नहीं हुआ और, हालांकि उस गधे ने उसे देखा पर उस मुर्ख जानवर ने उसकी परवाह नहीं की। सलीम उनके और भी करीब आ गया। उसके कानों में खून जोर से प्रवाहित हो रहा था और उसे अपनी मालकिन की चूत में गधे के लंड के फुँफकारने की आवाज़ सुनायी दी। एक-दूसरे की चूत में राल टपकाती हुई उन औरतों के सुड़कने की आवाज़ भी उसे सुनायी दी। एक बात सलीम के ज़हन में शीशे की तरह साफ थी... उसके सामने चल रही चुदाई जितनी विकृत, पतित और अश्लील थी, इस समय सलीम के उसमें शरीक होने से वो चुदाई और अधिक विकृत नहीं हो सकती थी।

हालांकि उसे खुद से अपनी मालकिन के साथ चुदाई की पहल करने की छूट नहीं थी पर दो जवान चुदक्कड़ औरतें जो जानवरों के लंड चूसती हों और उनसे चुदवाती हों -- और एक दूसरे को भी चूसती और चोदती हों, ऐसी औरतों के सामने होने से सलीम को काफी हिम्मत मिली। सलीम ने अपनी पैंट की ज़िप खोली और धीरे से आगे बढ़ते हुए उसने अपना लंड और गोटियाँ बाहर निकाल लीं। वो एक अज्ञात डर और उत्तेजना से बूरी तरह काँप रहा था। सलीम आकर योगिता के पीछे खड़ा हो गया। उसका लंड योगिता की झटकती हुई गाँड के ठीक ऊपर टॉर्च की तरह खड़ा था। सुबह जब योगिता आयी थी तो उसकी सुंदरता और उसका सुडौल जिस्म देख कर सलीम का लंड खड़ा हो गया था पर उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसे इस सुंदरी को चोदने का मौका मिलेगा।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

अब अपनी रश्मि मैडम के ऊपर घूमे हुए सिर के दोनों तरफ अपने टाँगें रख कर झुकते हुए उसका दिल उत्तेजना से जोर से धड़क रहा था। उसका लंड जब योगिता के चुतड़ से छुआ तो योगिता के चिकने चुतड़ उस दहकते लंड की गर्मी से तमतमा गये। सलीम ने उसे उसके कसमसाते चूतड़ों से पकड़ लिया।

योगिता ने चौंक कर अपनी सहेली की टाँगों के बीच में से अपना सिर उठाया तो उसका चेहरा रश्मि के चुत रस से सना हुआ था।

"सलीम???" योगिता जोर से किकियाई।

रश्मि ने भी अपनी आँखें खोलीं तो अपने चमकते चेहरे के ठीक ऊपर अपने अर्दली के बड़े टट्टों को झूलते हुए पाया। उसने चौंक कर चींखना शुरू किया पर सिर्फ़ एक शब्दहीन ध्वनि रश्मि के मुँह से निकल कर योगिता की चूत में ऊपर बुदबुदा गयी।

फिर सलीम ने अपने लंड का सुपाड़ा अपनी मालकिन की सहेली की चूत में घुसा दिया और एक-दो पल रुक कर पूरा लंड अंदर ठाँस दिया। योगिता की चूत पहले ही इतनी गीली थी कि सलीम का बड़ा मोटा लंड बहुत आराम से अंदर घुस गया। सलीम ने धूँआधार चुदाई शुरू कर दी। उसका लंड योगिता की चूत में अंदर बाहर होता हुआ रश्मि के होंठों में से गुजर रहा था और सलीम के लंड से योगिता की चूत का रस चाटते हुए रश्मि ने उन दोनों को एक साथ चूसना शुरू कर दिया। रश्मि की खुद की चूत पहले से ही गधे के लंड पर झड़ती हुई मलाई छोड़ रही थी और वो इस समय परिणाम की चिंता करने के मूड में नहीं थी।

ना ही योगिता को कुछ फिक्र थी। जैसे ही उसे सलीम का लंड अपनी चूत में पिलता महसूस हुआ, वो मज़े से चिल्लायी और फिर अपना सुंदर चेहरा अपनी सहेली की गधे के लंड से भरी चूत पर झुका दिया और दोनों छोरों से मिल रहे मज़े से मतवाली हो कर मज़े से गधे का लंड और रश्मि की चूत चाटने लगी।

गधा भी शारीरिक मज़े के अलावा हर बात से अंजान हो कर खुशी से चोद रहा था। जब रश्मि की चूत झड़ने के बाद अपनी मलाई से भर गयी तो उसकी चिकनाहट पाकर गधे का विशाल लंड और भी तेजी से अंदर बाहर चोदने लगा। उसके टट्टे फुल गये और

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

झूलते हुए योगिता की ठुड्डी पर चपत लगाने लगे। जब सलीम ने योगिता की चूत में ज़ोरदार झटके मारते हुए उसकी दिल की आकार की गाँड ऊपर उठायी तो योगिता का सिर ऊपर नीचे झटकने लगा।

घरघराते हुए उस गधे ने बहुत जोर से धक्का मार कर अपना लंड रश्मि की चूत में ठेला और उसके टट्टे फूट पड़े। उसी समय रश्मि के होंठों से बहुत ही भयानक और दिल दहला देनी वाली चींख निकली जब रश्मि को अपनी चूत में गधे के लंड से छूटती वीर्य की पहली पछाड़ महसूस हुई। उस इकलौती पछाड़ से ही रश्मि की चूत और गर्भाशय भर गये और गधे ने तो झड़ना अभी सिर्फ शुरू ही किया था। उसने वीर्य की पछाड़ें एक के बाद एक छोड़नी ज़ारी रखीं। वीर्य की दूसरी पछाड़ के बाद ही रश्मि की चूत के किनारों से वीर्य बाहर बहना शुरू हो गया।

कोई भी मौका ना छोड़ते हुए योगिता झुक कर रश्मि की चूत में से बाहर बहता हुआ गधे का वीर्य भुखमरी की तरह निगलने लगी। वीर्य के अनुठे स्वाद और गंध से योगिता की उत्तेजाना और परवान चढ़ गयी और उसकी खुद की चूत भी झड़ कर सलीम के लंड पर मलाईदार रस की बौंछार करने लगी। सालीम को योगिता की चूत पिघलती हुई महसूस हुई तो उसने योगिता को कुल्हों से पकड़ पीछे खींच कर अपना लंड जड़ तक उसकी चूत में पेल कर अपना खौलता हुआ वीर्य उसकी चूत में सैलाब की तरह बहा दिया।

गधा रश्मि की चूत में वीर्य की पिचकारी दाग रहा था और सलीम योगिता की चूत में गधे की तरह ही अपने वीर्य की पछाड़ के बाद पछाड़ छोड़ रहा था। गधा इंसान की तरह घुरघुराया और वो इंसान उस गधे की तरह। दोनों मिल कर एक ताल में अपने टट्टे खाली कर रहे थे और दोनों औरतें ज्वालामुखी की तरह फूट कर झड़ती हुई चींख रही थीं। सलीम ने अपना लंड योगिता की चूत से निकाला तो योगिता ने अपनी चूत रश्मि की चेहरे पर झुका दी। रश्मि लोलुप्ता से अपनी सहेली की मलाईदार कटोरी से सलीम का वीर्य चूसने लगी।

अपनी चूत में गधे के गर्म गाढ़े वीर्य के गिरने से उत्तेजित हो कर रश्मि जोर से काँप रही थी। सलीम थक कर एक तरफ निढाल हो गया। उसका लंड योगिता की चूत ने इस कद्र निचोड़ा था कि वो बे–जान सा हो कर बिल्कुल मुर्झा गया था। करीब दस मिनट तक योगिता उसी स्थिति में अपनी सहेली की चूत से रिसता हुआ गधे का वीर्य पीती रही। गधे

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

के वीर्य के अनूठे स्वाद और गंध से उसकी वासना और भड़क रही थी। रश्मि की चूत से इतना वीर्य बाहर रिस रहा था कि कहीं अंत नज़र नहीं आ रहा था। गधे का गाढ़ा वीर्य इतनी देर से निगलते हुए योगिता थकने लगी थी। उसने अपना सिर उठा कर देखा कि इतने चाव से वीर्य निगलने के बावजूद बहुत सारा वीर्य रश्मि की जाँघों और टाँगों से बह कर ज़मीन पर इकट्ठा हो रहा था। रश्मि के टाँगें और हाई-हील सैंडलों से युक्त पैर उस चिपचिपे वीर्य से सन गये थे। रश्मि अभी भी सिसकती हुई बीच-बीच में चींख पड़ती थी और योगिता के ठोस चूतड़ों में अपनी अँगुलियाँ गड़ा देती।

योगिता अपनी सहेली के ऊपर से किनारे हटी तो अपने चूत-रस से सना उसका चेहरा और खुला मुँह देख कर उसके मन में एक ख्याल आया। उसने अपना चेहरा एक बार फिर गधे के लंड से भरी रश्मि की चूत पे झुका कर बहुत सारा मलाईदार वीर्य अपने मुँह में भरा पर उसे पिया नहीं, बल्कि रश्मि के चेहरे के पास आ कर उसके मुँह में अपने मुँह से गधे का वीर्य उड़ेलती हुई उसे लंबा, दीर्घ चुंबन देने लगी।

जब रश्मि को एहसास हुआ की उसके मुँह में गधे का वीर्य बह रहा है तो बड़े उत्साह से पी गयी। जब योगिता के मुँह में वीर्य खत्म हो गया तो उसके बाद भी दोनों के होंठ आपस में चिपके रहे और फ्रेंच चुंबन करते हुए दोनों की जीभें आपस में गुत्थमगुत्था होने लगीं। दोनों एक दूसरे की चूचियाँ मल रही थीं जोकि पिछले घंटे भर से चल रही उनकी विकृत चुदाई के कारण कठोर थीं।

आखिरकार, उस रोमांचक किंतु विकृत चुदाई का अंत आ गया। वो गधा रश्मि की जकड़ी हुई चूत में से अपना लंड बाहर खींचने लगा। रश्मि की चूत के मुकाबले लंड का इतना बड़ा आकार होने के कारण, गधे के पीछे हटने से रश्मि का जिस्म भी उसके साथ घिसटने लगा। उन दोनों को अलग होने में सहायता के लिये योगिता को रश्मि को पकड़ कर रखना पड़ा।

शेंपेन की बोतल के कॉर्क की तरह गधे का लंड अंत में रश्मि की चूत में से 'तड़ाक' की आवाज़ के साथ बाहर निकल आया और साथ ही रश्मि की चूत से गधे के वीर्य की तेज़ धार बाहर बह कर ज़मीन पर दलदल की तरह इकट्ठा होने लगा। रश्मि जोकि इतनी देर से अपनी कमर मोड़ कर सिर्फ़ अपनी टाँगों के सहारे थी, वहीं पर वीर्य के कीचड़ में कमर के बल लेट गयी। उसे अपने जिस्म पे गर्धब-वीर्य का एहसास बहुत मादक लग रहा

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वो मलाई के तालाब में नहा रही हो। उसने अपने जिस्म पे वो सफ़ेद द्रव्य मलते हुए अपनी सहेली की तरफ देका और अपनी अँगुली के इशारे से योगिता को अपने साथ शामिल होने का निमंत्रण दिया।

योगिता कामुक्ता से मुस्कुरायी और रश्मि की बगल में आ गयी। रश्मि ने थोड़ा सा खिसक कर योगिता को अपनी बगल में, सूख कर गाढ़े बनते हुए वीर्य के कीचड़ में लिटा लिया। योगिता वीर्य के उस कीचड़ में अपनी गाँड हिलाने-डुलाने लगी और अपनी चूचियों पर भी वीर्य उछाल कर मलने लगी। फिर दोनों विकृत औरतें एक दूसरे का जिस्म चाट कर गर्धब-वीर्य का रस लेने लगीं।

****
रीना कँवर © 2007
****

सलीम एक तरफ बैठा काफी देर से उन दोनों छिनाल औरतों की बेहुदा और विकृत हरकतें देख रह था। दोनों औरतों पर चुदाई और विकृति का जुनून सा सवार दिख रहा था। उसका लंड एक बार फिर तन गया था पर गधे के वीर्य में लथपथ उन चुदक्कड़ सहेलियों के पास जाने का उसका कोई इरादा नहीं था। हालाँकि उन दोनों का फुहड़ और गंदा खेल उसे उत्तेजित कर रहा था पर खुद उस गधे के वीर्य को छूने के ख्याल से भी उसे नफ़रत हो रही थी। इसलिए वहीं दूर बैठे-बैठे वो उन औरतों का विकृत नाच देखते हुए मुठ मारने लगा।

उन दोनों चुदक्कड़ औरतों की हवस देख कर वो सोचने लगा कि इस समय इस गधे और उन दो कुत्तों की बजाय किसी आदमी को अगर अकेले इन औरतों के सुपुर्द कर दिया जाये तो ये दोनों उसे निचोड़ कर उसकी जान ही ले लें और फिर भी इनकी हवस को इतमीनान ना हो। यह सब सोचते हुए और सामने का कामुक मंज़र देखते हुए उसके लंड ने वीर्य की पिचकारी छोड़ दी। फिर वो संतुष्ट होकर थका-हारा वहाँ से निकल कर अपने क्वार्टर में चला गया। उसे दोनों सहेलियों की आँखों में वासना दिख रही थी और उसे यकीन था कि जल्दी ही दोनों फिर चुदाई के लिये तैयार जो जायेंगी और उसमें अब और चुदाई के लिये ताकत बकी नहीं थी।

सलीम का अंदेशा सही था।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

एक दूसरे के बदन से वीर्य चाट लेने बाद दोनों वहीं पसर गयीं। एक ख्वाबी मुस्कुराहट रश्मि के सुंदर चेहरे को निखार रही थी। वो अभी भी अपने झड़ने की प्रचंडता से सुन्न थी और गधे के वीर्य की प्रचुरता से हैरत–अंगेज़ थी जो उस गधे ने उसकी चूत में पंप किया था।

"ऊँहहह... मज़ा आ गया यार... चूत का हर हिस्सा, हर रेशा निहाल हो गया... एंड सो मच स्पंक... कैन यू इमैजिन...", रश्मि ने अंगड़ायी लेते हुए कहा।

"हाँ यार... अनबिलिवेबल... कितना डेलिशस टेस्ट है इसका... और इतना बड़ा लंड... चूत के अंदर लिया कैसे तूने... बड़ी चुदक्कड़ है तू... तू बदली नहीं... जैसी कॉलेज के जमाने में लंडखोर थी... अब तो और भी ज्यादा चुदास हो गयी है", योगिता ने उसे छेड़ा।

"पर तू अचानक कैसे यहाँ आ गयी... मैं तो डर ही गयी थी... मैं तो सोच रही थी कि तू नशे में धुत्त हो कर बेखबर सो रही होगी... क्या मेरी चींखें तेरे बेडरूम तक आ रही थीं..?" रश्मि बोली।

"तुझे तो पता होना चाहिये... याद नहीं क्या...? ड्रिंक्स के नशे के साथ–साथ मुझ पर चुदाई का नशा भी चढ़ जाता है... तू भी तो ऐसी ही थी... हम दोनों हॉस्टल में नशे में चूर होकर आपस में कितनी चुदाई करती थीं... और क्या–क्या हमने अपनी चूतों में नहीं घुसेड़ा... मोमबत्तियाँ... सब्ज़ियाँ... बीयर की बोत्तलें, सैंडलों की हील्स... टेनिस के रैकेट का हैंडल और यहाँ तक की एक बार तो तूने मेरी गाँड में झाड़ू का हैंडल पेल दिया था... याद है...??"

"हाँ सब याद है... तो आज क्या चोद रही थी अपनी चूत में तू...? और फिर यहाँ क्या मुझे ढूँढने आयी थी...?" रश्मि ने पूछा।

"आज तो पूछ ही मत... मैं तो अँगुलियों से ही काम चला रही थी पर अचानक तेरे कुत्ते... ओह नो..", योगिता रुकी पर तीर तो छूट ही चुका था।

"क्या तू मेरे शेरू और सुल्तान से चुदवा रही थी.... यू बिच...", रश्मि यकायक उत्तेजित हो कर बोली।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

रश्मि के उत्तेजना भरे स्वर से योगिता को लगा कि कुत्तों से चुदवाने पर रश्मि उस पर बिगड़ रही है। योगिता भी तड़क कर गुस्से से बोली *"यू रंडी... साली तू तो यहाँ गधे पर चूत निसार कर रही थी..."*

"नहीं... नहीं... तू मुझे गलत समझ रही है... वो तो बस... मैं... तो तू भी कुत्तों से चुदवाती है... कब से... ओह मॉय... ऑय कान्ट बिलीव..." रश्मि हँसते हुए बोली।

"कब से नहीं... आज पहली बार... वो भी शुरूआत तो तेरे कुत्तों ने ही की थी... पर तू भी से तेरा क्या मतलब... तू क्या रेग्युलरली चुदवाती है उनसे...?" अब योगिता को समझ आया कि कुत्ते इतने बेधड़क हो कर क्यों चोद रहे थे।

"यार... आज तक ये बात किसी को भी नहीं पता... सलीम भी नहीं जानता... एक्चुअली दो साल से मैं शेरू और सुल्तान से चुदवा रही हूँ... उनसे चुदवाने की खातिर ही मैं यहाँ... इस फ़र्म पर रह रही हूँ... जब तक मैं दिन में कम से कम एक बार दोनों से चुदवा नहीं लूँ... मुझे चैन नहीं आता... और इन कुत्तों को भी चैन नहीं पड़ता जब तक मुझे चोद ना लें... दे आर मॉय स्टड्स... मॉय डर्लिंग..." रश्मि को अपना यह राज़ अपनी सहेली को बता कर बहुत अच्छा लगा।

"लेकिन देख मैं नहीं मिली तो तुझ पर चढ़ बैठे... आदमी हो या कुत्ता... सब एक जैसे हैं... जहाँ चूत देखी... बस चोदने को तैयार हो गये... चाहे किसी की भी चूत हो..." रश्मि अपनी बात पर ही जोर से हँसी।

"उन्हें क्यों दोष देती है... मेरी चुदास सहेली! अपने गरेबान में भी झाँक... जहाँ लंड देखा... चूत और गाँड खोल कर चुदवाने लगती है... फिर वो लौड़ा इंसान का हो या जानवर का... और फिर लौड़ा ही क्यों... मेरी तरह तू भी तो चूत और चूचियाँ देख कर राल बहाने लगती है..." योगिता ने रश्मि की चूचियों पर हाथ फिराते हुए कहा।

"तो क्या इसीलिए तू मुझे ढूँढती हुई यहाँ आयी थी... कुत्तों से चुदवाने के बाद चैन नहीं मिला था जो मेरी चूत याद आ गयी थी तुझे... पता है कई सालों से मैंने लेसबियन चुदाई का मज़ा नहीं लिया..." रश्मि बोली।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

“अरे यार... शाम को जब हम लॉन में ड्रिंक करती हुई अपने पुराने दिनों की चर्चा कर रही थीं ना... तभी मैंने इस गधे का ज़ालिम और सुपर टॉयटैनिक लंड देख लिया था। तभी से मेरी चूत कुलबुला रही थी और ऊपर से दारू की मदहोशी... ऊँऊँ...”

“तो फिर अंदर क्यों भाग गयी थी तू....?” रश्मि ने पूछा।

“मुझे तो तेरा डर था कि तू क्या कहेगी... मुझे क्या पता था कि तू तो जानवरों के साथ रोज़ाना ऐश करती हई... नहीं तो....”

रश्मि योगिता की बात बीच में ही काट कर बनावटी गुस्से से बोली, *“ऐ... किसी भी जानवर से नहीं... सिर्फ अपने शेरू और सुल्तान से ही चुदवाती हूँ... आज पहली बार उनके अलावा किसी और जानवार के साथ चुदाई की है... समझी...?”*

“ओके... मेरी जान... नाराज़ मत हो.... हाँ तो मैं कह रही थी कि... तेरा डर नहीं होता तो मैं तो वहीं इसका लंड पकड़ कर चूसने लगती... मुझसे रहा नहीं गया और इसलिए मैं सोने का बहाना करके अंदर गयी ताकि अपनी दहकती चूत को कुछ तसल्ली दे सकूँ... अब तुझसे क्या छिपाना... अरे यार मेरी चूत में तो हर दम आग लगी रहती है... साली सैटिसफॉय ही नहीं होती... कितना भी चुदवा लूँ पर इतमीनान ही नहीं होता...” योगिता अपनी चूत पर हाथ थपकते हुए बोली।

“तो तू भी नहीं बदली... वैसी ही ऐय्याश है मेरी तरह... जैसी हम दोनों कॉलेज के टाइम में थीं... और मैं थी कि तुझसे डर रही थी... तुझसे नज़र छिपा कर बार-बार इस गधे के लंड को देख-देख कर मस्त हो रही थी... वैसे जब मैं इस गधे के पीछे यहाँ आयी तो मेरा इरादा सिर्फ इसका लंड सहलाने और चूसने का था... पर फिर रहा नहीं गया... सच... मेरी चूत को इतना करार पहले कभी नहीं मिला... जस्ट ऑउट ऑफ दिस वर्ल्ड... देख अभी भी कैसे फैल कर खुली हुई कि जैसे बंद ही नहीं होगी और इतना वीर्य मॉय गॉड...!”, रश्मि अपनी चूत की दोनों फाँकें फैला कर योगिता को दिखाते हुए बोली।

“यार... मेरी गाँड का भी तेरे कुत्ते ने यही हाल किया है.... साले के लंड की नॉट क्रिकेट बॉल से भी बड़ी है... और उसने मेरी गाँड में वो ज़ालीम नॉट ठूँस कर ही दम लिया... गाँड की ऐसी-तैसी कर दी... पर अमेज़िंगली मुझे वो दर्द भी बहुत मीठा सा लगा... बहुत

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

ही कड़ाकेदार ओर्गेज़म था...” योगिता ने दूसरी तरफ करवट ले कर अपनी फैली हुई गाँड रश्मि को दिखायी।

“तो तूने एक ही शाम में गाँड भी मरवाली मेरे कुत्तों से... वैसे उनके लंड की नॉट भी स्पेकटैक्युलर है... चाहे गाँड में फँसे या चूत में... एक बार दर्द जरूर होता है पर जो मज़ा आता है... इट्स वर्थ एनी अमाऊंट ऑफ पेन...” रश्मि ने प्यार से अपनी अँगुली योगिता की गाँड के फैले हुए छेद पर फिरायी। योगिता की गाँड में अभी भी कुत्ते का वीर्य नज़र आ रहा था।

“हाँ यार... यू आर राइट... इट वाज़ रियली ग्रेट... अगर एक कुत्ते का लंड पहले से मेरी चूत में फँसा नहीं होता तो दूसरा कुत्ता जबरदस्ती मेरी गाँड में लंड नहीं पेलता और मुझे गाँड मरवाने का मज़ा ही नहीं मिलता”, योगिता फिर से अपनी सहेली की तरफ पलट गयी।

“क्या....??” रश्मि चौंकते हुए बोली, “तूने एकसाथ उन दोनों कुत्तों से अपनी चूत और गाँड मरवायी...?? मैंने भी अभी तक ऐसा नहीं किया... *वॉओ यू आर रेयली ए लस्टी स्लट... मैं भी कल ही यह ट्रॉय करूँगी... ऑय एम श्योर... ऑय विल इंजॉय इट वेरी मचा”*

“हूँ... स्लट्स तो हम दोनों पहले से ही हैं पर आज तो मुझे शक है कि मैं निंफोमानियक बन गयी हूँ... क्योंकि शाम से मैं कम से कम पच्चीस-तीस बार झड़ चुकी हूँ पर मेरी चूत की आग बुझने की जगह और ज्यादा भड़कती जा रही है....” और फिर योगिता ने कुत्तों के साथ अपनी चुदाई का विस्तार से वर्णन किया।

करीब 10-15 मिनट तक दोनों इसी तरह छप्पर में गधे के पास ज़मीन पर नंगी पसरी हुई बातें करती रहीं। अंत में रश्मि बोली, *“यार गला और मुँह चिपचिपा रहा है... काफी गाढ़ा वीर्य था इस गधे का...!”*

“मम्मम... अभी भी मूँह में इसका अनोखा स्वाद बना हुआ है... पर हाँ... शायद वीर्य के सूखने से गला चोक सा हो रहा है... कुछ पी कर इसे गले के नीचे धोना पड़ेगा”, योगिता ने कहते हुए छप्पर में चारों तरफ गर्दन घुमा कर देखा। रश्मि ने भी वैसा ही किया।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

"सलीम तो चोद कर निकल गया... पता नहीं अचानक वो कैसे यहाँ आ गया... मैंने तो आज तक कुत्तों के साथ चुदाई की बात भी उससे छिपा रखी थी पर आज तो उसने हमें गधे से चुदते हुए देख लिया पर जिस तरह से उसने रियेक्ट किया... मेरा ख्याल है कि, ही विल भी ओके विद दिस... ऑय होप इसका कोई इश्यू नहीं बनाये..." रश्मि के स्वर में थोड़ी चिंता थी।
"छोड़ यार... डोन्ट वरी... संभाल लेंगे..." योगिता ने बेफिक्री से कहा।

"चल उसका कल सुबह देखा जायेगा... चल अब घर के अंदर चलते हैं... रात भर आपस में मस्ती करेंगे..." रश्मि उठ कर बैठते हुए बोली। फर्श पर अभी भी गधे का चिपचिपा वीर्य फैल हुआ था। हालाँकि दोनों औरतों ने एक दूसरे के बदन से काफी वीर्य चाट कर साफ किया था पर फिर भी उनके बदन जगह–जगह से वीर्य से सने हुए थे और कहीं–कहीं सूख कर वीर्य की परत सी जम गयी थी।

योगिता उठने की बजाय और फैल कर लेट गयी। फिर अपनी नशे में बोझल आँखों में शरारत भरकर रश्मि को देखा और शोख मुस्कान के साथ बोली, *"अभी तो मेरी जान मुझे भी इस गधे के लंड का मज़ा लेना है... मैं तीन दिन तो यहीं हूँ... तू कहेगी तो पूरा हफ्ता यहीं रहुँगी और हम दोनों जी भर कर हर तरह से ऐश करेंगे... पर अभी तो... जब तक गर्दभ–राज के महा–लंड में शक्ति है... यू नो वॉट ऑय मीन..."* और वो धुर्तता से रश्मि को आँख मार कर अपनी चूत सहलाती हुई मुस्कुराने लगी।

"ऑय लाइक दैट... चल मैं पीने के लिये पानी ले कर आती हूँ..." रश्मि कहकर उठने लगी।

"पानी...?? क्यों मयखनों में ताले लग गये हैं क्या???" योगिता ने रश्मि को रोका, *"इतना रूमानी माहौल है... लंड है... चूत है... मूड है... गाँड है... चुदाई है... इस शैहवानी के माहौल में तो मेरी जान सिर्फ शराब छलकनी चाहिये..."*, योगिता बहुत शोखी से शायराना अंदाज़ में बोली।

रश्मि को योगिता के अंदाज़ पर हँसी छूट गयी। वो खिलखिला कर उसी अंदाज़ में बोली, *"जो हुक्म.. योगिता बेगम..."*, और फिर से हँसने लगी। अपनी हँसी पर काबू पा कर रश्मि फिर बोली, *"साली तू नहीं बदली... तेरा तो आज भी वही दस्तूर लगता है... जब पियो तो*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

इतनी पियो कि कुछ होश बाकी ना रहे... ड्रिंक टिल यू ड्रॉप... हम दोनों पहले ही नशे में हैं...!"

"अरे ये तो चुदाई का नशा है... शराब का नशा तो कब काफ़ुस पड़ गया.... मज़ा तो तभी आयेग ना जब शराब और चुदाई... दोनों का नशा बराबर होगा... याद है हॉस्टल में भाँग पी कर नशे में तूने टेनिस के रैकेट से अपनी चूत चोदनी शुरू की थी तो अपनी धुन में पूरी रात उससे अपनी चूत चोदती रही..." योगिता ने हँसते हुए रश्मि को याद दिलाया, *"और तू ही तो हमेशा कहती थी कि सब भूल कर मदहोशी में चुदने में अलग ही मज़ा आता है...?"*

"दैट्स ट्रयू... रिमेमबर... फाइनल इयर के दिन... वो वंदना हमें कभी-कभी गांजे वाली सिगरेट सपलाई करती थी... उसके बाद खुमारी में चुदाई का कितना मज़ा आता था... ऑय विश अब भी कहीं से वो सिगरेट मिल सकती... खैर मैं व्हिस्की की बोतल ले कर आती हूँ..." रश्मि कहते हुए डगमगाती हुई खड़ी हुई।

खड़े होने से उसकी चूत में से फिर से वीर्य बाहर बह निकला। उसकी टाँगें तो वीर्य से सनी थीं और उसके हाई-हील के सैंडल और पैर तो वीर्य से बुरी तरह तरबतर थे। रश्मि का कहना सही था कि उसका नशा उतरा नहीं था और वो पहले जैसी ही डगमगा रही थी। इसके अलावा ज़मीन गधे के वीर्य से चिपचिपा रही थी। रश्मि ने लड़खड़ाते हुए धीरे-धीरे कदम बढ़ाये। ज़मीन पर फैले वीर्य के कारण वो एक-दो बार फिसलते-फिसलते बची और अपनी हालत पर खिलखिला कर हँस पड़ती।

"संभल कर जा मेरी गुलबदन...", योगिता भी हँसी। उसने देखा कि रश्मि जब भी कदम आगे बढ़ाती तो उसके पैरों और सैंडलों के बीच के गैप में भरा वीर्य 'फचाक-फचाक' करता हुआ प्रैशर से बाहर निकल रहा था। रश्मि वैसे ही लड़खड़ाती बाहर निकल गयी और योगिता वहीं आँखें बंद किये अचेत सी पड़ी रही। गधा मजे से अपने सामने पड़ी सूखी घास खा रहा था।

शाम से लॉन में ही बाहर रखे मूवेबल बॉर में से रश्मि को व्हिस्की की बोतल मिल गयी। नशे के कारण हाई-हील सैंडलों में लड़खड़ा कर झुमते गिरते-पड़ते वापस लौटने में करीब पंद्रह मिनट लग गये। जब वो छप्पर में घुसी तो वो सावधान नहीं थी। जैसे ही

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

उसका पैर वीर्य पर पड़ा तो चींखती हुई फिसल कर योगिता की बगल में गिरी। वैसे भी मिट्टी का फर्श था और नशे में चूर होने से उसे दर्द का एहसास नहीं हुआ, बल्कि वो खिलखिलाकर कर हँसने लगी।

योगिता को फर्श पर चित्त पड़े देख कर रश्मि और भी ज़ोर से हँसते हुए बोली, "क्या हुआ...? मुझे तो लगा कि तू अब तक गधे का लंड अपनी सुलगती हुई बेसब्री-चूत में ले चुकी होगी... पर तू तो... खैर... ये ले व्हिस्की की बोतल... इसे पी कर और गर्मी आ जायेगी।"

योगिता उठ कर छप्पर की दीवार का सहारा ले कर बैठ गयी और रश्मि भी उसके सामने लकड़ी के खंबे से पीठ टिका कर बैठ गयी। *"ये ले... बोतल से ही सीधे नीट पीनी पड़ेगी..."* रश्मि ने उसे बोतल पकड़ायी।

योगिता ने गटा-गट चार-पाँच घूँट पिये और फिर थोड़ा सा चेहरा बिगाड़ कर लंबी साँस लेते हुए बोतल रश्मि के हाथ में दे दी। रश्मि ने भी होंठों से बोतल लगा कर कुछ घूँट लिये। इसी तरह दोनों धीरे-धीरे व्हिस्की पीती हुई कुछ भी ऊटपटाँग बोलती हुई हँसने लगीं। दोनों का नशा पूरी बुलंदी पर था।

योगिता हँसते-हँसते अपनी चूत पर हाथ रख कर बोली... *"अरे यार पेशाब लगा है... तुझे दिक्कत ना हो तो यहीं मूत दूँ क्या...??"*

"मुझे क्या दिक्कत होगी मादरचोद... तू तो ऐसे पूछ रही जैसे मेरे ऊपर मूतेगी...???" रश्मि फिर खिलखिलायी।

दोनों की आवाज़ नशे में ऊँची हो गयी थी और लड़खड़ा भी रही थी।

"आइडिया बुरा नहीं है... तेरे ऊपर ही मूत देती हूँ... साली हरामज़ादी... तेरे मुँह में भी मूतूँगी अब तो... याद है ना रैगिंग में कैसे फ्रेशर लड़कियों को तूने अपना मूत पिलाया था..." योगिता जोर से हँसी।

"तेरी ये इच्छा भी पूरी कर ले राँड... पर फिर मैं भी तुझे अपने मूत से नहलाऊँगी तो

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

रोना मत... ले मूत... मूत साली... तू तो मेरी जान है... तेरा सुनहरा मूत तो अमृत है....” नशे में चूर रश्मि के जो भी मुँह में आ रहा था बक रही थी।

यह सुनकर योगिता डगमगती हुई खड़ी हुई और एक हाथ में व्हिस्की की बोतल पकड़े, पूरे जोश में लड़खड़ाती हुई रश्मि के पास गयी। रश्मि के दोनों तरफ अपनी टाँगें चौड़ी करके योगिता अपनी चूत को अँगुलियों से फैला कर इस तरह खड़ी हो गयी जैसे कोई आदमी यूरीनल में मूतने के लिये खड़ा होता है। फिर उसने अपने घुटने थोड़े आगे झुका लिये ताकि उसकी चूत रश्मि के चेहरे के नज़दीक आ जाये।

“ले साली... कमीनी राँड... अभी मूतती हूँ तेरे मुँह में!” योगिता घुरघुरायी, “मैं तेरे रसीले होंठों को मेरी चूत में से पेशाब चूसते देखना चाहती हूँ...!” वो अपनी अँगुलियों से जोर-जोर से अपनी क्लिट रगड़ रही थी।

रश्मि भी उसे उकसाते हुए बोली, *“कम ऑन... मूत जल्दी से... नहला दे अपनी सहेली को अपने मूत से!”*

अचानक योगिता की चिकनी चूत में से सुनहरे रंग का मूत निकलने लगा और पहली फुहार रश्मि की चूचियों पर पड़ी। योगिता अपने मूत की धार पर काबू नहीं रख पा रही थी क्योंकि अपनी विकृत हरकतों की उत्तेजन और शराब के नशे में वो स्थिरता से खड़ी नहीं हो पा रही थी। हाई-हील के सैंडलों में उसके पैर डगमगा रहे थे और काफी सारा पेशाब रश्मि की चूचियों के साथ-साथ उसकी खुद की जाँघों और टाँगों से नीचे बह कर उसके सैंडलों को तरबतर करने लगा। योगिता अपने चूतड़ आगे की तरफ ठेल कर अपनी चूत रश्मि के चेहरे के और नज़दीक ले गयी और मूत की ज़ोरदार धार रश्मि की सुंदर आँखों के पास टकरायी और मूत उसकी आँखों और चेहरे से नीचे बहने लगा।

“योगिता... कमीनी... साली... तू... तू मेरी आँखों पे मूत रही है...”, रश्मि अपनी आँखें बंद करती हुई बोली, *“ऐसे ही मूतती रह... मेरे चेहरे पर.. आँहाहा... बहुत अच्छा लग रहा है!”* रश्मि ने अपना चेहरा ज़रा सा ऊपर उठा कर अपने खुले होंठ योगिता के मूत की धार की सीध में लाने की कोशिश की और थोड़ी सी कोशिश के बाद वो सफल हो गयी। वो आँखें मींचे, आँहें भरती हुई गटागट मुँह भर-भर कर गरम पेशाब पीने लगी। रश्मि को इस गंदे-विकृत खेल में बहुत मज़ा आ रहा था और उसकी चूत और पूरे जिस्म में

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

झनझनाहट होने लगी। वो अपने एक हाथ की अँगुलियों से अपनी चूत और क्लिट रगड़ने लगी और उसका दूसरा हाथ योगिता के चूतड़ों को सहला रहा था।

अपने एक हाथ में पकड़ी बोतल से योगिता बीच-बीच में व्हिस्की के घूंट गटक रही थी और अपनी गाँड मटकाती हुई दूसरे हाथ से व्यग्रता से अपनी क्लिट रगड़ रही थी। अपनी सहेली के बाल, चेहरा, चूचियाँ अपने पेशाब से सराबोर होते देख और उसे अपने शरीर का अंतरंग रस पीते देख योगिता के पूरे बदन में कामोत्तेजना की बिजली सी दौड़ रही थी और वो बेकाबू सी होकर लगातार कराह रही थी। दोनों सहेलियाँ जंगली बिल्लियों की तरह जोर-जोर से कराहती और आँहें भरती हुई शोर मचा रही थीं।

*"मम्म्म... ओह गॉड... *गलल गलल* -- ओह गॉड *गटगट* -- मम्म्म - ओह हाँ, जानू *गलल गलल* -- लैट मी ड्रिंक दिस हॉट पिस!"* रश्मि कराही और अगले ही क्षण उसकी ऐयाश चूत में ज़ोरदार विस्फोट हुआ और वो झड़ गयी।

शाम से इतनी शराब पीने के बाद योगिता का मुत्राशय प्रेशर से फटने जैसा हो रहा था और इसलिए रश्मि के मुँह में मूतना बंद होने में कुछ समय लगा। हालांकि रश्मि अपनी सहेली का काफी मात्रा में पेशाब पीने में कामयाब रही थी पर फिर भी काफी सारा पेशाब उसके मुँह से बाहर बहने से और साथ ही शुरू में योगिता द्वारा छोड़ी गयीं अंधाधुंध मुत्र-धारों से लथपथ होकर रश्मि के बाल, चेहरा और बाकी का जिस्म भी मूत्र-गंधित हो रहा था।

रश्मि ने अपनी गर्दन उचका कर योगिता की चूत पर चुंबन दिया। योगिता का स्खलन ट्रिगर करने के लिये इतना ही काफी था और उसकी अँगुलियाँ प्रचंडता से उसकी क्लिट को रगड़ती हुई चूत में अंदर-बाहर होने लगीं। पर अचानक जब रश्मि ने अपना हाथ उसकी टाँगों के बीच में से पीछे ले जाकर उसकी गाँड में अँगुली घुसेड़ दी तो योगिता धड़धड़ाती हुई झड़ गयी और उसकी चूत ने रश्मि के चेहरे पर अपने चिपचिपे रस का फव्वारा छोड़ दिया।

योगिता का सिर नशे और उन्मत्तता से चक्करा रहा था। वो और अधिक देर खड़ी ना रह सकी और तुरंत ही रश्मि के सामने ज़मीन पर अपने ही पेशाब के तलैया में पसर गयी। *"हाऊ वाज़ इट... मज़ा आया ना...?"* मदहोशी भरी आँखों से रश्मि की तरफ देखते हुए

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

योगिता ने फुसफुसाते हुए पूछा।

अपने होंठ चपचपाते हुए रश्मि मुस्कुराकर बोली, *"ग्रेट... सैक्सी... ऊँम्म मज़ा आ गया... तेरा मूत तो व्हिस्की से भी नशीला था..."*

"मॉय टर्न नॉव... मैं भी तेरा मूत चखने के लिये बेकरार हूँ... कम-ऑन यू बिच... पिस इन मॉय माऊथ..." योगिता बेसब्री से बोली।

रश्मि भी नशे में चूर थी। इसलिये उठने की बजाय वो योगिता के पेशाब से तरबतर फर्श पर घिसट कर योगिता के पास आयी और उसके सिर के दोनों तरफ अपने हाई-हील सैंडलों वाले पैर रख कर उसकी टाँगों की तरफ मूँह करके उकड़ू बैठ गयी। रश्मि की चूत ठीक योगिता के चेहरे के ऊपर थी। रश्मि की फूल कर बाहर उभरी हुई क्लिट लगभग आधे इंच के छोटे से लंड जैसी दिख रही थी। इतनी ऊंची हील की सैंडलों में उकड़ू बैठी हुई रश्मि नशे में डगमगा रही थी और अपनी गाँड स्थिर नहीं रख पा रही थी।

"अब मूतेगी भी... चुदैल राँड...!" रश्मि के चूतड़ों पर जोर से चपत जमा कर योगिता बेसब्री होकर दहाड़ी, *"लैट मी ड्रिंक योर पिस!"*

"ओके-ओके... ये ले... हेअर इट कम्स... यू फकिंग स्लट!" कहते हुए रश्मि ने अपनी एक अँगुली अपनी क्लिट पर रख कर इस तरह ऊपर खींची कि उसकी मूत्र-नली खुल कर उघड़ गयी और अचानक 'हिस्स्स्स्स' सुसकारती हुई उसके तीक्षण-गंधित पेशाब की सुनहरी तेज़ धार फूट पड़ी। वो धार योगिता के पूरे चेहरे पर टकरायी और उसके गालों और गर्दन से नीचे बह कर उसके लंबे बालों को भिगोने लगी।

योगिता ने मुँह खोला ताकि वो अपनी सहेली के मूत की धार का स्वाद ले सके। उसे गरम और नमकीन पेशाब का तीखा स्वाद अच्छा लगा। तीक्ष्ण दैहीक महक और स्वाद योगिता की वासना भड़काने लगे। योगिता ने अपना मुँह रश्मि की बरसती चूत पर चिपका दिया और अपने दोनों हाथ ऊपर रश्मि के चूतड़ों और कमर पर फिराते हुए गरम मूत गटकने लगी। उसकी नाक रश्मि की गाँद के छेद पर घिस रही थी।

थोड़े-थोड़े छलकाव के बाद रश्मि अपने मूत के बहाव को नियंत्रित करने लगी ताकि उसकी सहेली मुँह भर-भर कर उसका गर्म सुनहरी रस पी सके। और नशे में चूर योगिता

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

बेसब्री से अपने मुँह में छलकता मूत पी रही थी। इस सब की विकृतता उन दोनों में उनमाद और जुनून सा भर रही थी। रश्मि का मुत्राशय लबालब भरा था और उसका मूत लगातार बह रहा था। थोड़ी देर में योगिता रश्मि के मूत के बहाव के सामने पिछड़ने लगी और साँस लेने के लिये उसने अपना मुँह रश्मि की चूत से हटा लिया। वो गर्म पेशाब फिर उसके चेहरे और गले पर बहने लगा।

रश्मि भी अब अपने मूत पर नियंत्रण नहीं रख पा रही थी। उत्तेजना में उसके मूत का बहाव योगिता के चेहरे पर और भी तेज़ हो गया और योगिता की आँखों में और नाक में भी भर गया। नाक में मूत जाने से योगिता का दम घुटने लगा तो वो खांसने और अपने मुँह में भरा मूत बाहर थूकने लगी।

योगिता को खाँसते और छटपटाते देख रश्मि अपने घुटनों के बल आगे को झुक गयी और उसकी चूचियों और पेट पर गरम मूत बरसाने लगी। योगिता जल्दी ही संभल गयी और उसने रश्मि के चूतड़ पकड़ कर अपने मुँह की तरफ खींचे और फिर से नमकीन मूत का स्वाद लेने लगी। रश्मि अब इस स्थिती में थी कि उसका मुँह योगिता की चूत के ऊपर था। वो अपना चेहरा योगिता की चूत पर झुका कर चाटने लगी।

“ऊँऊँआआआँआँहहह”, रश्मि की जीभ को अपनी चूत पर अचानक महसूस करके योगिता जोर से किकयाई। फिर मूत से आधे भरे मुँह से गरगराते हुए बोली, *“ओह गॉड... मज़ा आ गया... धीरे–धीरे मूत रंडी... ऑय वांट टू ड्रिंक एवरी ड्रॉप ऑफ योर पिस!”* और फिर उसने पहले की तरह ही अपना मुँह रश्मि की मूत छलकाती चूत पर चिपका दिया।

रश्मि के मूत की धार पहले से मंद हो गयी थी और वो भी पागलों की तरह योगिता की चूत चाट रही थी। जिस तरह योगिता उसकी चूत पर होंठ चिपकाये अपनी जीभ चलाती हुई मूत पी रही, उससे रश्मि भी कामोन्माद के उत्कर्ष की तरफ अग्रसर हो रही थी। दोनों औरतों के मुँह से ‘ओंओंओं... आँऊँआँऊँ’ जैसी मस्ती भरी सिसकरियाँ फूट रही थीं।

रश्मि के मूत की धार धीरे–धीरे छितरा कर रिसाव में तबदील हो गयी। *“आआआआआँआँआँआँओओओह... फक... यो...गिताआआआआआ”* अचानक रश्मि की कर्ण विदारक चींख निकली और वो अपनी चूत और चूतड़ योगिता के चेहरे पर कुचलते हुए झनझना कर झड़ने लगी और मूत के अंतिम कतरों के साथ उसकी चूत ने बहुत

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author’s expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

सारा कामरस योगिता के मुँह में छोड़ दिया।

रश्मि की चूत के नीचे चेहरा कुचलने से योगिता की नाक भी रश्मि की गाँड की दरार में धंस कर दब गयी तो साँस लेने के लिये योगिता का मुँह और चौड़ा खुल गया और रश्मि की चूत से स्खलित पूरा कामरस योगिता की हलक में बह गया। अगले ही क्षण रश्मि की गाँड में से 'पट–पट' करके बहुत ही तेज़ और तीखी गंध वला गरम हवा जा झोंका निकल कर सीधे योगिता की नाक में समा गया।

वो तीक्षण गंध योगिता के दिमाग में जोर से टकरायी और क्षणभर के लिये तो वो कुलबुला गयी पर फिर उसकी विकृत कामवासना भड़क उठी और साथ ही अपनी चूत में रश्मि की जीभ की हरकतों से वो भी झड़ने के कगार पर पहुँच गयी। उसने अपने घुटने मोड़ लिये और उसकी कमर और गाँड भी ज़मीन से ऊपर उचक गयी और पूरा जिस्म अकड़ गया। उसने अपने निचले होंठ अपने दाँतों में दबा कर जोर से चींख मारी और अगले ही पल उसकी चूत में से गाढ़े कामरस के साथ कामोन्माद के प्रैशर के कारण छूटा मूत का फव्वारा झरने की तरह ऊपर उछल कर रश्मि के चेहरे से टकराया और फिर बाढ़ की तरह उसका गुनगुना मूत रश्मि के चेहरे और उसके स्वयं के पेट पर बहने लगा ।

विकृत कामवासना से ग्रस्त दोनों औरतों ने जितना भी हो सके, मूत के कतरे चूसते हुए एक दूसरे की चूत को रगड़ना और चाटना ज़ारी रखा। अंत में रश्मि अपनी सहेली के ऊपर से हट कर उसकी बगल में ही मूत से सराबोर फर्श पर लेट गयी और दोनों ने एक दूसरे को आलिंगन में जकड़ लिया और एक दूसरे के होंठ चूमती हुई खिलखिलाने लगीं।

****

रीना कँवर © 2007

****

दोनों सहेलियाँ कुछ देर तक उसी तरह नशे में चूर होकर छप्पर के फर्श पर पड़ी एक दूसरे का जिस्म सहलाती चुमती रहीं। दोनों पर चुदाई का भूत सा सवार था और कामाग्नि बुझने का नाम नहीं ले रही थी। थोड़ी देर बदहवास सी पड़ी रहने के बाद योगिता अचानक धीरे से बैठती हुई रश्मि को देख कर मुस्कुरायी और फिर गधे के निकट खिसक कर गधे के लंड का वीर्य से सना, मलाईदार सुपाड़ा चाटने लगी। योगिता उसे चाट–चूस कर फिर से पत्थर जैसा सख्त करके खड़ा करने के लिये आतुर थी, ताकि वो भी अपनी

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

चूत उस गधे के विशालकाय लंड से चुदवा सके।

रश्मि ने अपनी सहेली को गधे का लंड चाटते हुए देखा। हालाँकि रश्मि उसे मुँह से चूस कर और फिर उससे अपनी चूत चुदवा कर दो बार गधे के टट्टे खाली करके सुखा चुकी थी, फिर भी गधे का लंड अभी कुछ बड़ा था और उसमें कुछ कठोरता कायम थी।

गधा अपनी गर्दन पीछे घुमा कर अपनी टाँगों के नीचे घुटनों के बल झुकी हुई औरत का सिर अपने काले लंड के सुपाड़े के चारों और झूमते हुए देख रहा था।

"बड़ा ही चोदू गधा है... साला दो बार अपनी मलाई की दरिया बहा चुका है... और तू भी इसके विराट लंड से चुदवा कर ही मानेगी...?" रश्मि ने बैठते हुए योगिता को छेड़ा।

योगिता ने अपनी जीभ की नोक गधे के मूत–छिद्र में ठोक दी और अपने सिकुड़े होंठ माँस के लोथड़े पर फैला दिये। फिर अपनी सहेली की तरफ घूम कर, गधे का लंड अपने गाल पर सटाये हुए योगिता ने मुस्कुराते हुए जोर से सहमती में अपना सिर हिलाया।

गधे के लंड का सुपाड़ा जब योगिता के गाल पे और फूल गया तो उसके माथे पर शिकन से बल पड़ गये। *"ऑय होप... ऑय कैन टेक इट"*, वो बोली।

"ओह.. तू मज़े से ले लेगी इसका लंड... योगिता", रश्मि उसे ढाढ़स बँधाते हुए बोली, *"ये तेरे मुँह में समाया कि नहीं? और चूत तो मुँह से भी लचीली होती है... राइट?"*

"तुझे बेहतर पता होना चाहिये... राँड... चुदी तो तू है इसके लंड से!" योगिता खिलखिलायी।

"हाँ... गधे से चुदवाना एक तरह से.. यू नो... लूज़िंग योर चैरी ऑल ओवर अगेन", रश्मि ने उसे बताया।

योगिता, जिसे साफ–साफ याद भी नहीं था कि उसका कौमार्य पहली बार कब टूटा था, उसकी भौंहें प्रश्नात्मक मुद्रा में तन गयीं।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

"ऑय मीन... इसका लंड इतना लंबा और मोटा है कि चूत के अछूते इलाकों तक पहुँच कर चोदता है", रश्मि ने समझाया। *"ये स्टार-ट्रेक की तरह चूत में अंदर जायेगा - जहाँ तक और कोई लंड पहले नहीं गया होगा।"*

योगिता हँसने लगी - पर उस ख्याल से वो और भी उत्तेजित हो गयी थी। अपनी चूत की अछूती गहराइयों में गधे के विशाल लंड से चुदने का ख्याल उसे पागल बनाने लगा।

"ओह, शिट -- चल इस चोदू लंड को मेरी चूत में ठूँसते हैं!" योगिता बेसब्री से कराही। लेकिन जब वो अपने घुटने मोड़कर और अपनी कमर पीछे झुका कर गधे के नीचे खिसकी तो नशे में संतुलन नहीं रख पायी और कमर के बल लुढ़क गयी। उसने फिर कोशिश की पर नशे में चूर उसका शरीर बिना सहारे के उस स्थिति में टिक नहीं पा रहा था।

दोनों समझ गयी कि नशे की इस बदमस्त हालत में बिना सहारे के कमर पीछे झुका कर चोदना आसान नहीं होगा।

"ठहर साली... तू तो नशे में खुद को संभाल ही नहीं पा रही है... यू विल नीड सम सप्पोर्ट", कहते हुए रश्मि भी झुमती हुई खड़ी हुई। उसकी खुद की हालत योगिता से ज्यादा अच्छी नहीं थी। वो बूरी तरह लड़खड़ाती छप्पर के दूसरे कोने में गयी जहाँ काफी सारा पुराना बेकार सामान पड़ा था। वहाँ उसे एक छोटा सा लकड़ी का तिपाया स्टूल दिखायी दिया तो उसने उसे उठाने की कोशिश की। जो औरत नशे में ठीक से चलने के भी काबिल नहीं थी वो उस स्टूल को कैसे उठाती। उसने योगिता को बुलाया जो इतनी देर में फिर से गधे का लंड चाटने-चूमने लगी थी।

"अरे इधर आ... हेल्प मी विद दिस स्टूल... साली चुदैल... लीव दैट डिक फोर ए मोमेंट..." रश्मि भुनभुनाती हुई बोली।

योगिता ने बे-मन से गधे का लंड छोड़ा और ऊँची ऐड़ी की सैंडल में खटखट करती नशे में लड़खड़ाती हुई रश्मि के पास गयी। फिर दोनों किसी तरह गिरती-पड़ती वो स्टूल घसीटती हुई गधे के पास लायीं।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

फिर योगिता उस स्टूल को गधे के नीचे ठेल कर, अपनी कमर पीछे झुका कर उस छोटे से तिपाया स्टूल पर बैठ गयी। उसके सैंडल ज़मीन पर सपाट टिके थे और उसकी जाँघें और चूत ठीक उस गधे के विशाल लंड के सुपाड़े के स्तर पर थी। उसकी जाँघें चौड़ी खुली थीं और उसकी चूत गरम कढ़ाई की तरह थी खुली थी – चूत की गुलाबी पंखुड़ियाँ चौड़ी फैली थीं और चूत की तहें चूत–रस से भिगी हुई थीं।

रश्मि ने झुक कर योगिता की क्लिट पर सात–आठ बार अपनी जीभ फिरायी। योगिता उसकी जीभ का मज़ा लेते हुए उस लकड़ी के स्टूल पर कुलबुलायी पर वो लंड के लिये बेकरार थी।

"इसका लंड मेरी चूत में घुसेड़ दे, रश्मि", योगिता ने निवेदन किया।

रश्मि ने कुहनी मोड़ कर अपनी बाँह लंड के सुपाड़े के बिल्कुल पीछे से लंड की छड़ के इर्द–गिर्द लपेट कर वो काला लंड अपनी सहेली की जाँघों के बीच में ठेल दिया। जब योगिता को अपनी खुली चूत पर गरम लंड टकराता महसूस हुआ तो वो ठिनठिना उठी। उसकी क्लिट से भाप सी उठ रही थी और चूत भी गरम हो कर दहक रही थी। उसकी जाँघें और चूत के आसपास का हिस्सा चूत–रस और थूक से तर था और गधे के लंड का सिरा धड़कता हुआ उसकी जाँघों के बीच में फिसलने लगा। योगिता ने सिर उठा कर अपनी चूचियों के बीच में से नीचे झाँका। गधे के लंड का सुपाड़ा उसे अपनी जंघाना से भी बड़ा प्रतीत हुआ और हालांकि वो रश्मि को उससे चुदते देख चुकी थी, फिर भी उसे पूरा विश्वास नहीं था कि वो लंड उसकी चूत में अंदर नहीं समा सकेगा।

पर रश्मि तो बेहतर जानती थी। गधे के लंड को अपनी कुहनी के मोड़ में जकड़े हुए, रश्मि ने दूसरा हाथ योगिता की चूत पर ले जाकर अपनी अँगुलियों और अंगूठे से योगिता की चूत की पंखुड़ियाँ इस तरह फैलायीं जैसे कि एलास्टिक का बैग खोल रही हो। फिर रश्मि अपनी सहेली की चूत की लचीली पंखुड़ियाँ गधे के लंड के सुपाड़े पर खींचने लगी। योगिता आंहें भरने लगी। उसकी चूत रबड़ की तरह लंड पर खिंच रही थी और चूत की पंखुड़ियाँ फैल कर तरंगित होने लगी। रश्मि ने थोड़ा सा पीछे खींच कर अपनी कुहनी से फिर वो लंड योगिता की चूत में आगे धकेला। लंड का सिरा अंदर गया और उसके पीछे बड़ा सा सुपाड़ा योगिता की चूत की लचीली तहों में से धीरे से अंदर फिसल गया। गधे के लंड का काला बड़ा सुपाड़ा पूरा अलोप हो गया।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

"होली शिट!" योगिता ने आह भरी जब उसे अपनी चूत के अंदर गधे के लंड का गरम मोटा सुपाड़ा धड़कता हुआ महसूस हुआ। उसकी चूत की पंखुड़ियाँ लंड की शाख पर पट्टे की तरह कस कर जकड़ गयीं और मलाईदार चूत के अंदर फड़कती टोपी के नीचे उस लंड–शाख को खींचने और चूसने लगीं।

"और...और लंड घुसेड़ो... गिव मी मोर..." वो चुदैल औरत चिल्लाने लगी।

रश्मि ने अपनी सहेली की चूत छोड़ दी और अपनी बांहें नीचे ले जाकर उसके चूतड़ों को पकड़ लिया। गधे ने एक झटका दिया तो योगिता के नीचे का लकड़ी का स्टूल अपने तीन पायों पर चरमाराता हुआ खिसकने लगा। किंतु रश्मि ने अपनी सहेली को एक जगह स्थिर पकड़ा हुआ था। गधे ने फिर एक झटका लगाया और अपना लंड और दो–तीन इंच योगिता की चूत में ठेल दिया। योगिता का सिर अब स्टूल से नीचे ज़मीन पर टिका था और वो मस्ती और विस्मय से अपना सिर झटका रही थी। उसकी चूत की दीवारें चौड़ी, और चौड़ी फैल कर गधे के लंड के सुपाड़े और शाख के इर्द–गिर्द सांचे की तरह ढल रही थीं। चूत की पेशियाँ भी तरंगित हो कर लंड पर खिंचाव डाल रही थीं।

गधे ने धक्का मार कर अपना और लंड उसकी चूत में ठेला तो योगिता मस्ती से चिहुँकने और कराहने लगी। रश्मि की बात अब उसे सच लग रही थी। गधे के लंड का सुपाड़ा अभी से चूत में इतनी गहरायी में था जहाँ पहले कभी कोई लंड नहीं पहुँचा था। उसकी चूत–गुफा पहली बार इतनी चौड़ी फैली थी जबकि गधे के लंड की काफी शाख अभी भी चूत के बाहर थी और करीब फुट भर मोटी काली नली उसकी भरी हुई चूत और गधे के फुले हुए टट्टों के बीच नज़र आ रही थी।

घुरघुराते हुए और अपना सिर झटकाते हुए गधे ने फिर धक्का मारा। गधे का जिस्म पसीने से लथपथ था और उसका लंड योगिता की चूत में से बह रहे रस से लथपथ था। उसके लंड ने फिर जोर से अंदर झटका दिया और उसका सुपाड़ा योगिता की चूत में गहरायी में अंत तक पहुँच गया। वो विराट लंड और आगे तक नहीं जा सकता था। योगिता की चूत पूरी गहरायी तक भरी थी और फिर भी करीब एक फुट लंड–शाख उन दोनों के बीच में निकली हुई थी। लेकिन योगिता की चूत में इतना लंड भरा था जितना उसने पहले कभी अपनी चूत में नहीं लिया था और उस चुदैल औरत को कोई एतराज या गिला नहीं था।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

योगिता जोर–जोर से मस्ती में कराहने लगी। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसकी चूत तेल के कुँए की तरह ड्रिल हो गयी हो। गधा उसकी चूत में अपने लंड की पूरी पैंठ बनाये हुए था और उसके पुठे फड़क रहे थे। तिपाया स्टूल पर कुलबुलाती और कसमसाती हुई योगिता की चूत उसके धंसे हुए लंड पर खिंच रही थी।

गधे ने रेंकते हुए अपने एक खुर से ज़मीन पर टाप की और उसका फिछवड़ा पीछे की और झटक गया। उसका लंड योगिता की चूत में इतना कस कर फंसा था कि उसकी चूत में से बाहर निकलने की बजाये उसने अपने झटके के साथ योगिता के चूतड़ ही घसीट लिये। पर योगिता के ऊँची ऐड़ी वाले सैंडल भी ज़मीन पर मजबूती से टिके थे और उसकी मदद कर रही उसकी सहेली ने उसके चूतड़ एक जगह पर स्थिर पकड़े हुए थे ताकि जब गधे ने पीछे झटका लिया तो उसका लंबा लंड धीरे से योगिता के चूत में से बाहर फिसलने लगा। योगिता की चूत के तहें उस लंड पर जकड़ती हुई उस खिसकती लंड–शाखा पर फैलने लगीं। उसकी चूत में से कुचलने–पिचकने जैसी की आवाज़ निकली।

गधे ने अपना लंड इतना बाहर खींचा कि उसकी टोपी ही चूत के अंदर रही और फिर एक पल रुक कर फिर अपना गदा जैसा मूसल लंड चूत में अंत तक ठोक दिया। जब उसकी चूत के मर्म तक गधे का लंड भर गया तो योगिता की गाँड ऊपर की तरफ ढलक गयी।

उस गधे ने अब लगातार अपना लंड योगिता की चूत में पेलना चालू कर दिया। योगिता भी उसके धक्कों के साथ हिलती हुई अपनी चूत नीचे ढकेल कर उसके धक्कों का साथ देने लगी और जब गधा अपना लंड बाहर खींचता तो वो अपनी गाँड और चूतड़ लकड़ी के स्टूल पर गोल–गोल पीसने लगती। गधे के टट्टे लंड की जड़ में अंदर बाहर झूल रहे थे। उसका मुस्टंडा लंड जब बाहर उभरता तो उस पर योगिता के चूत–रस की धारियाँ दौड़ रही होती और वो लंड चिकना और चिपचिपा होकर चूत रस से चिकनी हुई चूत में जोर–जोर से अंदर–बाहर चोदने लगा।

"ओंह! ओंह! ओहहह! आँह! आआह!" योगिता लगातार कराह रही थी। शराब और वासना के नशे में चूर उसके दिमाग को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि गधे के लोहे जैसे सख्त लंड के चूत में अंत तक चोदने से उसे इतना आनंद मिल रहा था। वो मस्ती से पागल हुई जा रही थी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

रश्मि अभी भी योगिता के चूतड़ पकड़े हुए उसे गधे के चोदते लंड पर स्थिर रखने की कोशिश कर रही थी जबकि नशे में उसे खुद को भी स्थिर रखने में मुश्किल हो रही थी। उसने झुक कर गधे के लंड की शाख से योगिता का चूत रस चाटा और फिर अपना सिर झुका कर अपनी सहेली की फूटती हुई क्लिट को चाटने लगी। गधे का लंड रश्मि के होंठों से फिसलता हुआ योगिता की चूत में जितना अंदर तक हो सके चुदाई कर रहा था।

योगिता उस गधे के लंड पर झनझनाती हुई झूल रही थी और उसका पूरा जिस्म ज़बरदस्त काँप और थरथरा रहा था। उसकी चूत ने बहुत सारा रस छोड़ा तो वो जोर से चींख पड़ी। गधे ने अपना लंड कस कर अंदर ठूँसते हुए उसकी चूत को कगार तक भर दिया और चूत-रस को चूत से बाहर रिसने के लिये कोई जगह नहीं छोड़ी। वो गरम चूत-रस बवंडर की तरह योगिता की चूत में घुमने लगा और गधे का लंड इस तरह हलकार रहा था जैसे बहते हुए लावा में कोई बड़ा काला बोल्डर तैर रहा हो।

योगिता एक बार फिर झड़ी और अपनी चूत और जाँघों को ताकने लगी। उसे लग रहा था कि इतने सारे चूत रस के बाहर ना निकल पाने से कहीं उसका पेट गुब्बारे की तरह ना फूल जाये। गधे ने अचानक जोर से पीछे झटका लिया और अपने लंड के साथ योगिता की चूत के पंखुड़ियाँ भी पीछे खींच लीं। चूत के पेशियाँ लरज उठीं और बहुत सारा चूत रस झाग बन कर बाहर निकल पड़ा।

गधा अब पूरी व्यग्रता से अपना लंड योगिता की चूत में दागता हुआ चोद रहा था क्योंकि उसके खुद का कामोन्माद का चरम नज़दीक आ गया था। उसने एक बार इतनी ताकत से अपना लंड अंदर पेला कि योगिता की गाँड लकड़ी के स्टूल से ऊपर उठ गयी। वो इतनी जोर से थरथराया कि उसके लंड के आखिर में चिपकी योगिता का जिस्म भी काँप उठा। योगिता की चूचियाँ उछल पड़ीं, उसका जिस्म झनझनाने लगा और उसकी हड्डियाँ चरमरा उठीं।

नशे में चूर योगिता मुर्छित सी होने लगी क्योंकि उसकी सारी शक्ति, उसकी ताकत, उसके बहु-कामोत्कर्षों में बहने लगी थी। गधे के लंड को अपनी चूत की मलाई से लथपथ करती हुई उसकी चूत पिघल कर लंड के शाख के ढाँचे पर प्लास्टर की तरह चिपकने लगी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

"मैं.. मैं... आआआह... ऑय एम कमिंग... ओह...!" योगिता गलगल करती बोली।

लेकिन रश्मि को अपनी सहेली की हालत से पहले ही उसके बार-बार झड़ने की खबर थी और वो गधा भी, जिसके घड़घड़ाते लंड पर योगिता की चूत पिघल रही थी, यह बात जान गया था। रश्मि भी यह नज़ारा देख कर बहुत उत्तेजित हो गयी थी और उसका जिस्म नशे में चक्कराने लगा था। इसलिए वो योगिता को संभालने की बजाये स्वयं एक तरफ पसर कर अपनी चूत को अँगुलियों से चोदने लगी।

जैसे-जैसे उसके गर्दभ जननांगों में रोमांच बढ़ने लगा, वो योगिता की मलाईदार कढ़ाई में दृढ़ता से अपना लंड पेल कर उतनी ही जोर से चोदने लगा। उसके टट्टे इस समय इतने भारी हो गये थे कि उसके पिछवाड़े को अपने वजन से नीचे खींचते महसूस हो रहे थे और उसके लंड के धक्के भी नीचे से ऊपर की तरफ लगते महसूस हो रहे थे और योगिता को ऊपर-नीचे उठा-झुका रहे थे। योगिता के नीचे वो लकड़ी का तिपाया स्टूल बूरी तरह चरमराता हुआ हिलने लगा था और अचानक असंतुलित हो कर पलट कर एक तरफ गिर गया। योगिता धड़ाम से ज़मीन पर टकरायी और उसका लचिला, सुडौल बदन साँप की तरह ज़मीन पर ऐंठने और मरोड़ने लगा पर उसकी लंड-भरी चूत हवा में उँची उठी हुई थी। उसने अपने घुटने मोड़ कर अपने सैंडल युक्त पैर ज़मीन पर सपाट रखे हुए अपने कंधे ज़मीन पर टिका दिये और अपने कुल्हे हवा में उठा कर अपने चूतड़ झुलाने लगी। गधे का मोटा मूसल लंड योगिता को उछालते और पछाड़ते हुए उसकी चूत चोद रहा था। गधे के लंड की पेशियाँ और नाड़ियाँ जोर से धड़क रही थीं और योगिता उस बृहत लंड के सिरे पर ऊपर-नीचे झूल रही थी।

गधे ने अपनी गर्दन के बाल लहराते हुए अपना सिर जोर से ऊपर झटका। उसकी आँखें बिल्कुल सफ़ेद और पाश्विक लग रही थीं। उसके पुठे जोर से हिलने लगे और वो अपना लंड इंधन की तरह योगिता की मलाईदार भट्ठी में ठेलने लगा।। योगिता भी झड़ती, फिर संभलती और फिर बार-बार झड़-संभल रही थी। गधे का शीर्ष नज़दीक आने लगा तो उसका लंड और भी फूल गया। योगिता को ऐसा लग रहा था जैसे लकड़ी के लट्ठे से चुद रही हो, जैसे कि तोप की नाल उसकी चूत में ठेल दी गयी हो और वो अब बेसब्री से उस तोप के विस्फोट का इंतज़ार कर रही थी।

"चोद मुझे... गधे... फ़क मे... चोद!" योगिता चिल्लायी, *"भर दे मेरी चूत अपनी मलाई*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

योगिता की गाँड धप्प से ज़मीन पर टकरायी और उसकी खुली चूत में से उसका चूत–रस और गधे का बहुत सारा वीर्य प्लावित होकर ज़मीन पर फैलने लगा। उसकी सहेली, रश्मि भी अपनी चूत को अँगुलियों से चोदती हुई कुछ ही देर पहले झड़ी थी और नशे में अचेत सी पड़ी हुई वो योगिता को देख कर मुस्कुरा रही थी।

अपनी सहेली की चूत से मलईदार रस ज़मीन पर बहता देख, रश्मि एक झटके में खिसककर चित्त पड़ी योगिता की बुरी–तरह चुदी चूत पर मुँह लगा कर वीर्य–पान करने लगी। वो योगिता की चूत में से चूस–चूस कर वीर्य पी रही थी। कुछ देर बाद जब योगिता ने अपनी आँखें खोलीं तो देखा की रश्मि उसकी चूत में से सारा वीर्य चूस लेने के बाद अब उसकी टाँगों, पैरों और सैंडलों पर लिसड़ा गधे का वीर्य भी चाट रही थी।

"साली राँड! सब पी गयी.. मेरे लिये कुछ तो छोड़ देती..." योगिता धीरे से मुस्कुराती हुई फुसफुसायी।

"अरे यार... अभी तो बहुत है... देख तेरी टाँगों के बीच में फर्श पर कितना पड़ा है," रश्मि ने बे–सब्री से योगिता के सैंडलों पर से वीर्य चाटते हुए जवाब दिया।

योगिता भी घूम कर वैसे ही ज़मीन पर फैला गधे का वीर्य चाट कर उसका स्वाद लेने लगी। करीब दस मिनट तक सारा वीर्य चाटने के पश्चात दोनों चुदैल औरतें बुरी तरह लड़खड़ाती उस छप्पर से निकलीं। दोनों गिरती–पड़तीं रश्मि के बेडरूम में पहुँचीं।

"यार... थैंक गॉड ऑय केम टू यू... इतनी अच्छी छुट्टियाँ तो मैंने कभी नहीं बितायीं... मज़ा आ गया... अब तो मैं कम से कम हफ्ते भर और रुक कर मज़ा लूँगी... क्या ख्याल है..." योगिता अपनी सहेली के वीर्य से चिपके होंठ चूसती हुई बोली।

"श्योर मॉय डार्लिंग... मैं तो सुबह फिर से उस गधे से अपनी गाँड मरवाने की सोच रही हूँ... इमैजिन हाऊ इट वुड फील लाइक बींग फक्ड इन ऐस बॉय एन ऐस..." रश्मि हँसी।

योगिता ने रश्मि के चूतड़ों पर हाथ फिरते हुए उसकी गाँड में धीरे से अँगुली डाली और बोली, *"वॉव... इट वुड भी फन... यार एक बात बता... और कौन से एनिमल मिल सकते हैं चुदाई के लिये इस फर्म पर... ऑय मीन गोट, पिग, बुल... व्हॉट अबाउट हॉर्स?"*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

दोनों खिलखिला कर हंस पड़ी और कुछ देर एक–दूसरे को चूमने सहलाने के बाद सिर्फ हाई–हील के सैंडल पहने बिल्कुल नंगी, एक–दूसरे से लिपट कर सो गयीं।

।।।। दोनों सहेलियों की विकृत चुदास ज़िंदगी का प्रारंभ ।।।।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in